मूल्य : 10 रुपये प्रति
वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

▸ जून २००९ ▸ वर्ष ५९ ▸ अंक ६

रमेश चन्द्र गोपीकिशन बंग का

कोलकाता में भव्य स्वागत

महाराष्ट्र सरकार के मंत्री एवं महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री रमेश चन्द्र गोपीकिशन बंग अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की तरफ से आयोजित सम्मान समारोह में भाषण देते हुए।

आइला ने मचाई बंगाल में तबाही
सम्मेलन ने भेजा तत्काल राहत सामग्री

True to our values.

True to our people.

True to our projects.

True to our selves.

Tomorrow happens when there is true partnership.

There are companies that only finance instructions. And there are Companies that also finace dreams, aspirations and hopes. SREI, an Indian multinational, belongs to the latter. More than just financial products and services, SREI excels in offering customised, flexible, reliable and cost-effective solution. The focus clearly is on infrastructure equipment, projects and renewable energy resources through innovative financing and "true partnerships".

SREI not only enjoys a leadership position in the market today, but is also recognised as a people-centric company. This investment in human resource development and consistantly acknowledging the blessings of god makes SREI a proud recipient of the Willis Harman Spirit at Work Award.

At SREI, it's the vision of tomorrow that fuels our passion. Propelling us to see tomorrow. Today.

WE MAKE TOMORROW HAPPEN.

SREI
INFRASTRUCTURE FINANCE LIMITED

Visit us at www.srei.com

ASSET FINANCING • INFRASTRUCTURE FINANCING • RENEWABLE ENERGY FINANCE • INVESTMENT BANKING • VENTURE CAPITAL • INSURANCE SERVICES

समाज विकास

जून २००९ ✦ वर्ष ५९ ✦ अंक ०६ ✦ एक प्रति-१० रु. ✦ वार्षिक-१०० रु.

संपादक : नंदकिशोर जालान ✦ सहयोगी संपादक : शंभु चौधरी

अनुक्रमणिका

क्रमांक	पृष्ठ संख्या
थे अब कब चेतोगा? – चिट्ठी आई है	४
अपनी बात	५
परिचर्चा में भाग लें:	६
अध्यक्षीय – नन्दलाल रूँगटा	७
स्थायी समिति की द्वितीय बैठक	८
जंतर–मंतर – सीताराम शर्मा	९
रमेश चन्द्र गोपीकिशन बंग का स्वागत	१०
'आइला' बंगाल के सुंदरवन से पलायन	११
आंचलिक समरसता और मारवाड़ी समाज – महेश जालान, पटना	१२
समाज का संगठन सम्मेलन की भूमिका – प्रो. (डॉ.) विश्वनाथ अग्रवाल	१३–१४
राजनीति में मारवाड़ी समाज का योगदान – प्रो. रामपाल अग्रवाल 'नूतन'	१५–१८
संरक्षक सदस्य	१९–२१
नये सदस्य	२३–२४
हास्य कहानी :	
थौक में लाना और खुदरा में बेचना – नथमल केडिया	२५
कहानी :	
अपना मुकद्दमा वापस लेती हूँ..... – शम्भु चौधरी	२७–२८
भीतरी सन्नाटे – यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'	३२–३६
स्मरण :	
भागीरथ कोनोड़िया – कुसुम खेमानी	२९–३१
कविता :	
सोंधी माटी का बिहार – डॉ. शांति जैन	३७
राजस्थान धरा री बेट्याँ – ताऊ शेखावाटी	३७
युगपथ चरण	३८

स्वत्वाधिकारी :

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ✦ १५२बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता–७००००७

फोन : ०३३–२२६८ ०३१९ ✦ E-mail :samajvikas@gmail.com

के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा ऐभल प्रिंटर्स प्रा.लि.

४५बी, राजाराम मोहन राय सरणी, कोलकाता–७००००९ में मुद्रित

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

चिट्ठी आई है

थे अब कब चेतोगा?

मैं लगभग १० वर्ष पूर्व सन् १९९८ में शक्तिधाम से जुड़ा एवं वर्तमान में वहाँ न्यासी हूँ। संस्था ने समाज के सामने जो उदाहरण पेश किया है वह आपके सामने है गत् कुछ वर्षों में समाज दो भागों में बंटता जा रहा है। हमारा प्रयास समाज को जोड़ने में होना चाहिए न कि तोड़ने में। अपने से ऊपर उठकर समाज के लिए सोचना होगा तभी समाज की एकता एवं मजबूती बनी रहेगी। अपनी अच्छाइयाँ भी सामने आती हैं, अपनी कमियाँ भी दिखाई पड़ती हैं। हमें अपनी कमियों को दूर करना होगा। अपनी अच्छाइयों को आगे बढ़ाना होगा।

समाज की एक विशेषता रही है कि गाली का जवाब गाली से नहीं होता प्रेम व सदव्यवहार से होता है। हमारी इस विशेषता के कारण ही हर प्रदेश में हमारी साख बनी हुई है। अंत में जीत भी उसी की होती है जो सत्य मार्ग पर चलता है। आज भी मारवाड़ी समाज में ऐसे सैंकड़ों परिवार हैं जो आर्थिक दृष्टि से कमजोर हैं। केवल मारवाड़ी होने का मतलब यह नहीं कि वह पैदा होने के साथ पैसे वाला होता है। हाँ! मारवाड़ी का मतलब यह जरूर है कि वह भीख नहीं मांगता। मेहनत करनेवाला है, मेहनत से ऊपर उठनेवाला है, ऊपर उठ कर दूसरों को ऊपर उठानेवाला है।

समाज के सभी भाइयों–बहनों को विशेष कर कार्यकर्ताओं को, समाज के नेताओं को समाज के मतभेद दूर करने के पहले अपने खुद के मतभेद दूर करने चाहिए। अपनी कमियों को दूर करें। आजकल संस्थाएँ शुरू होती है मिलजुल कर, और जब संस्थाएँ मजबूत हो जाती है तो आपस में ही झगड़े शुरू हो जाते हैं। छोटी–छोटी बातों को अभिमान का, प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लेते हैं। कल तक जिस संस्था को खड़ा करने में समाज ने सारी शक्ति लगाई, उसे उखाड़ने का रास्ता अपनाने में जरा भी कष्ट नहीं होता। हमें संकल्प लेना चाहिए कि आपस के मतभेदों को दूर करेंगे। हमारे समाज ने बहुत सी स्कूलें, अस्पताल, कॉलेज, गौशाला, धर्मशाला अस्पताल एवं आध्यात्मिक स्थल बनाये हैं। आपसी विवाद में कई गौशालाएँ, धर्मशालाएँ बंद पड़ी हैं। संस्थाओं के संस्थापकों ने जो खून–पसीना एक कर संस्था को सींचा है हम उनके सम्मान में कोई कमी नहीं करें। यदि हम अपने अग्रज कार्यकर्ताओं का सम्मान नहीं करेंगे तो आनेवाले लोग हमारा सम्मान नहीं करेंगे। फिर हम लोगों को ऐसा कहने का मौका क्यों दें कि वे पद त्याग करें। यदि किसी संस्था को हम आगे नहीं बढ़ा पा रहे हैं। तो स्वयं उससे हट जायें, दूसरे भाइयों को सेवा करने का मौका दें या उनको भी साथ लेकर चलें। जो लोग ऐसा नहीं करते हैं उनके हाथ से संस्था चली जाती है। ऐसी कई धर्मशालाएँ, शिक्षण संस्थाएँ तथा गौशालाएँ हैं जहाँ आपसी मतभेद के कारण संस्था गलत एवं स्वार्थी लोगों के कब्जे में चली गई है।

समाज के मतभेद सामाजिक स्तर पर दूर हो, अपने मतभेदों को दूर करने के लिए अदालत न जायें। जो समाज के लिए अच्छा कार्य कर रहे हैं उनसे हमें प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। इससे हम अपने को समाज सेवा का आदर्श सिपाही कहलाने के अधिकारी होंगे। सामाजिक जीवन में रचनात्मक कार्यक्रमों की गाड़ी खींच कर लक्ष्य तक पहुँच जाना आसान नहीं है। हम चाहते हैं कि जिस माध्यम से भी हो जिसे जो अनुकूल लगे समाज सेवा करनी चाहिए। समाज में समस्याओं का अम्बार लगा है। आपस में कहीं किसी को टकराने की जरूरत नहीं है। जरूरत है खींची हुई लकीर को बिना छुये बगल में एक और लकीर बनाने की। यही सोंच हमें आगे उठाने में मदद करेगी।

हर व्यक्ति की कार्य करने की अपनी शैली होती है। संस्थाओं में सबों को लेकर चलना होता है। जो काम करेगा उसी में लोगों द्वारा गलती निकाली जायेगी। जो करेगा ही नहीं उससे गलती क्या होगी? विरोध होने का अर्थ यह नहीं है कि हम सड़क पर आकर ढ़ोल बजाने लगें। अभद्र, बेतुकी, बेबुनियाद, अमर्यादित पम्पलेट बाँटें, मुकद्दमा करें, संस्थाओं पर रिसिवर बैठाने की मांग करें, आम सभा एवं आम चुनाव रोकने का प्रयास करें। जब तक बनी तब तक बनी, न बनी तो घर में।

जिन संस्थाओं के कार्यकर्त्ताओं ने रचनात्मक कार्य किये हैं, जो सूरज के समान सामने दिखाई पड़ रहा है, जिनसे समाज संगठित हुआ है, जहाँ सैंकड़ों नहीं कभी–कभी हजारों लोग मिलकर भगवान के समक्ष, भगवती के समक्ष भक्तिरस में अपने को आहलादित कर आनन्द की शीतल सरिता में स्नान करते हैं उनके कार्यों में बाधा न बनें, सहयोग करें। यदि किसी कारणवश मन नहीं मिल रहा हैं तो तटस्थ रहें ऐसा कोई कार्य न करें जिससे समाज में गलत संदेश जाय। सेवा के लिए किसी के पास अवसर की कोई कमी नहीं। अपनी शक्ति का उपयोग रचनात्मक हो विध्वंशात्मक नहीं चाहिये।

- दशरथ कुमार गुप्ता, न्यासी, शक्तिधाम

अपनी बात :

महिला आरक्षण पर मंथन

संसद के संयुक्त अधिवेशन को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल ने अपने अभिभाषण में यह भी वादा किया कि सरकार अगले सौ दिनों के भीतर न केवल महिला आरक्षण विधेयक पेश और पारित कराएगी बल्कि स्थानीय निकायों में महिला आरक्षण को बढाकर पचास प्रतिशत करने के लिए संविधान में संशोधन भी कराएगी।

१९९६ में जब देवगौड़ा सरकार के कानूनमंत्री रमाकांत खलप ने पहली बार महिलाओं को लोकसभा और राज्य की विधानसभाओं में तैंतीस प्रतिशत आरक्षण दिए जाने का विधेयक पेश किया था, तभी यह अहसास हो गया था कि इसका भविष्य उज्ज्वल नहीं है। आज तेरह वर्ष बाद फिर वैसा ही दृश्य उपस्थित है। इस बीच गुजराल और वाजपेयी सरकारों ने भी इस मुद्दे पर कोशिश की, लेकिन गतिरोध पर पार न पा सकीं। कारण कुछ भी रहा हो, महिला आरक्षण से संसद का ही नहीं, देश की असहनीय हो चुकी राजनीति का चरित्र भी बुनियादी रूप से बदल जाएगा। इससे शालीनता बढ़ने और भ्रष्टाचार व अपराधीकरण जैसी प्रवृत्तियों के कम होने की आशा की जा सकती है। अब तक पंचायत, नौकरशाही और विभिन्न प्रोफेशन में महिलाओं के प्रदर्शन से यह भरोसा कर सकते हैं कि यदि उन्हें देश की राजनीति में भी अवसर मिले, तो निश्चय ही वे पुरुषों के मुकाबले अपेक्षाकृत बेहतर करेंगी।

''आरक्षण के भीतर आरक्षण की शर्त लगाने वाले दल या पिछड़े समुदाय के नेता भी यह अच्छी तरह जानते हैं। कि महिलाओं की स्थिति समाज में दोयम दर्जे की है और इस स्थिति से निकालने के लिए जरूरी है कि महिलाओं की भागीदारी नीति निर्धारण स्तर पर भी हो। परन्तु मर्दों से भरी संसद कभी नहीं चाहेगी कि महिलायें उनके अस्तित्व के लिये ही खतरा बन जाय। उनके राजनैतिक पर कुतर दिये जायें।''

''आरक्षण के भीतर आरक्षण की शर्त लगाने वाले दल या पिछड़े समुदाय के नेता भी यह अच्छी तरह जानते हैं। कि महिलाओं की स्थिति समाज में दोयम दर्जे की है और इस स्थिति से निकालने के लिए जरूरी है कि महिलाओं की भागीदारी नीति निर्धारण स्तर पर भी हो। परन्तु मर्दों से भरी संसद कभी नहीं चाहेगी कि महिलायें उनके अस्तित्व के लिये ही खतरा बन जाय। उनके राजनैतिक पर कुतर दिये जायें।''

हाँ ! कुछ नेताओं की सोच ने संसद के भीतर और संसद के बाहर यह बता दिया कि ये लोग महिला आरक्षण बिल का किस स्तर तक विरोध कर सकतें है। भारतीय लोकतंत्र में आस्था रखने वाले जब लोकमत से अपनी बात कहने में खुद को असमर्थ पातें हैं तो ऐसे लोग सुकरात की बात करने लगते हैं। संसद के अन्दर कभी नोटों का प्रदर्शन, तो कभी अमर्यादित बयान इस बात की तरफ हताशा भरे गणतंत्र की निशानी भले ही हो सकती है, इसे कभी भी स्वस्थ लोकतंत्र नहीं कहा जा सकता। जिस बुनियाद पर महिला आरक्षण बिल की बातें कही जा रही हैं, इसे कभी भी पारित नहीं किया जा सकता। संसद इस बिल को राजनैतिक दलों के अन्दर इस प्रस्ताव के साथ पारित कर सकती है। कि ''सभी राजनैतिक दलों को अपने–अपने दल के अन्दर महिलाओं को ३३ प्रतिशत आरक्षण देना अनिवार्य करना होगा, जिसमें संगठन के पद से लेकर चुनाव में टिकट देने तक एक ही शर्त लागू रहेगी। साथ ही कोई पदाधिकारी अपनी पत्नी को किसी पद के लिये चुनता हो तो, इसे आरक्षण की शर्तों से बाहर माना जाये।'' इस प्रस्ताव के लाने से उन दलों की बात भी रह जायेगी जो महिला आरक्षण के अन्दर आरक्षण की बातें कर रहे हैं। साथ ही यह अब उन दलों को देखना है कि वे संसद में जो बातें करतें थे, उसे कैसे अपने दल के अन्दर पूरा कितना कर पाते हैं।

- शम्भु चौधरी

परिचर्चा में भाग लें:

युवा पीढ़ी : "उभरती प्रतिभाएं, गिरते मूल्य, एवं टूटते परिवार, किसको श्रेय और कौन दोषी"

युवा पीढ़ी, जो देश की आबादी की ४० प्रतिशत से अधिक है, ने बड़ी तेजी से प्रगति की है। आज का युवा वर्ग पहले की बनिस्पत कहीं अधिक बुद्धिमान, प्रतिभावान एवं तेज है। अपनी बुद्धि एवं मेहनत के बल पर उसने सफलता की नयी ऊचाईयाँ प्राप्त की है। ज्ञान-विज्ञान, व्यवसाय-उद्योग, साहित्य-संस्कृति सभी क्षेत्रों में नयी प्रतिभाएं उभरी है।

वैश्वीकरण एवं प्रतिस्पर्द्धा की इस दौड़ में सामाजिक एवं नैतिक मूल्य कहीं खो रहे हैं। समाज अर्थ की धूरी पर घुम रहा है। पैसा बोलता है। सोच बदल रही है। बड़े भाई को नहीं छोटे कमाऊ पूत को बोलने का अधिकार है । बाप बेटे से डर रहा है। माँ बहू से। परिवार टुट रहे हैं।

९ अप्रैल २००८ की कोल्हापुर की इस घटना ने दिल को दहला दिया है। एक युवा पोते ने अपनी दादी को इसलिये हत्या कर दी क्योंकि दादी के संयुक्त परिवार में साथ आकर रहने से उसका अपना 'सेपरेट रूम' छिन गया था।

आपसी प्रेम, लिहाज, मान-सम्मान, अनुशासन, सहानुभूति सहनशीलता, त्याग की भावना सबमें एक लगातार गिरावट परिलक्षित हो रही है।

"युवा पीढ़ी : उभरती प्रतिभाएं, गिरते मूल्य एवं टूटते परिवार; किसको श्रेय, कौन दोषी" विषयक एक परिसंवाद गोष्ठी का आयोजन अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा जुलाई-अगस्त, २००९ में करने की योजना है।"

इस परिसंवाद में भाग लेने के लिये अभिभावक, माता-पिता, शिक्षक-शिक्षिका एवं युवक एवं युवतियां (२५ वर्ष की आयु तक) आमंत्रित है।

आप इस विषय पर अपने विचार लिखित रुप में भी अपने संक्षिप्त परिचय एवं पासपोर्ट साइज फोटो के साथ भेज सकते हैं।

:: कृपया सम्पर्क करें ::

श्री रामअवतार पोद्दार, राष्ट्रीय महामंत्री
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
१५२बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता - ७०० ००७
मोबाईल नं. - ९८३०९१२०५७

अध्यक्षीय :

मातृभाषा राजस्थानी

- नन्दलाल रुँगटा, अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

राजस्थान विधानसभा द्वारा २५ अगस्त २००३ को, राजस्थानी भाषा को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित करने का एक संकल्प रूपी प्रस्ताव पारित किया गया था, जिसमें कहा गया कि ''राजस्थान विधानसभा के सभी सदस्य सर्व सम्मति से यह संकल्प करते हैं कि राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित किया जाए। राजस्थानी भाषा में विभिन्न जिलों में बोली जाने वाली भाषा या बोलियाँ यथा ब्रज, हाड़ौती, बागड़ी, ढूँढ़ाड़ी, मेवाड़ी, मारवाड़ी, मालवी, शेखावटी आदि शामिल हैं।''

यदि हम इस प्रस्ताव की गम्भीरता पर विचार करें तो, हम पाते हैं कि यह प्रस्ताव खुद में अपूर्ण और विवादित है। ''इसमें कहीं भी स्पष्ट नहीं है कि हम किस भाषा को राजस्थानी भाषा के रूप में मान्यता दिलाना चाहते हैं।'' एक साथ बहुत सारी बोलियों को मिलाकर विषय को अधिक उलझा दिया गया है। इस प्रस्ताव से ही राजस्थान में पल रहे भाषा विवाद की झलक मिलती है। हम चाहते हैं कि राजस्थान सरकार अपनी बात को तार्किक रूप से स्पष्ट करे कि वो आखिर में केन्द्र सरकार से चाहती क्या है?

मरुप्रदेश अरावली पर्वत के दानों ओर है, इसलिए मरुवाणी, मारवाड़ी और राजस्थानी भाषा अरावली के पूर्व और पश्चिम दोनों में विराट भाषा रही है। इसमें कृषि विद्या, पशुपालन विज्ञान, उद्योगपतिओं की उद्यम विद्या, व्यापारियों–व्यावसायियों की व्यापार–वाणिज्य विद्या, शूरवीरों की युद्ध विद्या, प्रेम–श्रृंगार विद्या, अकाल और दुर्भिक्ष से पड़ित मरुभूमि की कारुणिक गाथा, सामाजिक जीवन तथा सांस्कृतिक जीवन नीति, निर्गुण और सगुण भक्ति की आराधना विद्या, राजस्थानी भाषा में अपनी सशक्त एवं हृदयग्राही अभिव्यक्ति उजागर करती रही है इसका साहित्य विपुल एवं विराट है। इस असाधारण क्षमता वाली भाषा को ही राजस्थानी भाषा कहा जाता है।

वीरगाथा काल का डिंगल काव्य और उसकी समृद्ध परम्परा केसरीसिंह जी बारहठ, उदयराज जी उज्ज्वल, शक्तिदान जी कविया तथा नाथूदान जी महियारिया तक अक्षुण्ण चली आई। आधुनिक राजस्थानी में गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद', सुमनेश जी जोशी, चन्द्रसिंह जी बादली, कन्हैयालाल जी सेठिया, गजानन वर्मा, मेघराज मुकुल, रेवतदान चारण, सत्यप्रकाश जी जोशी, रघुराज सिंह हाडा, बुद्धिप्रकाश पारीक, कल्याण सिंह राजावत, डॉ. शान्ति भारद्वाज 'राकेश', प्रेमजी प्रेम, अर्जुनदान जी चारण आदि कवियों की भाषा डिंगल की समृद्ध परम्परा में जुड़ाव पैदा करती हुई जिस राजस्थानी भाषा का स्वरूप ग्रहण करती है, वह अरावली पर्वत के पूर्व और पश्चिम में समान रूप से समझी, बोली और लिखी जाती है।

राजस्थानी शब्द कोश के निर्माण का कार्य वर्तमान में महामहोपाध्याय रामकरण असोपा ने प्रारम्भ किया था जिसे उनके योग्य शिष्य श्री सीताराम लालस ने पूर्ण किया। इसी प्रकार राजस्थानी कहावतों के संग्रह का काम श्री लक्ष्मीलाल जोशी ने प्रारम्भ किया था और भी कई लोगों ने किया है पर अभी इस हेतु सन्तोषजनक कार्य शेष है। लोक संस्कृति के विविध प्रसंगों को पण्डित मनोहर शर्मा, कन्हैयालाल सहल, नरोत्तम स्वामी, रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत, प्रो. कल्याण सिंह शेखावत, कोमल कोठारी आदि ने निरन्तर अग्रसर किया है। आकाशवाणी से राजस्थानी में समाचार प्रसारण में वेद व्यास की महती भूमिका रही है, यद्यपि दूरदर्शन पर भी राजस्थानी समाचार और कार्यक्रमों का प्रसारण होता है पर तन्मयता, तल्लीनता और तत्परता का अभाव दृष्टिगोचर होता है। राजस्थानी भाषा में दैनिक समाचार पत्र अभी प्रकाशित नहीं हो रहा है। हाँ! मासिक पत्रिका 'माणक', नैणसी और त्रैमासिक पत्रिका 'वरदा' का राजस्थानी भाषा में प्रचार और प्रसार उल्लेखनीय है। हिन्दी समाचार पत्र–पत्रिकाओं में कभी–कभी एक–आध स्तम्भ के रूप में राजस्थानी लेख निकलते रहते हैं। परन्तु हमें यह देखना होगा कि एक पूर्णकालीन राजस्थानी दैनिक समाचार पत्र का प्रकाशन किस प्रकार किया जा सके, इसके लिये हमें न सिर्फ राजस्थानी में बात करने की जरूरत पर बल देना होगा, बच्चों में राजस्थानी पढ़ने–लिखने की आदत बनानी होगी और यह तभी संभव हो सकेगा जब हम इस भाषा को स्थायी रूप से पाठ्यक्रम में शामिल कर सकेंगे।

भारत के संविधान के निर्माण के समय हिन्दी को राजभाषा और राष्ट्रभाषा का स्थान दिया गया और अंग्रेजी को पन्द्रह वर्ष तक लागू रहने का प्रावधान था उस समय आठवीं अनुसूची में चौदह भाषाएँ थीं बाद में दो हजार तीन तक आठ और क्षेत्रीय भाषाओं को जोड़ा गया अब कुल बाईस भाषाएँ आठवीं अनुसूची में हैं। राजस्थानी भाषा को निकट भविष्य में आठवीं अनुसूची में लिए जाने की पूरी–पूरी सम्भावना है। आवश्यकता इस बात की है कि हम सभी राजस्थानी भाषा–भाषियों को एकजूट होकर एक स्वर में राजस्थानी भाषा की संवैधानिक मान्यता के लिये हर संभव प्रयास करना चाहिये। राजस्थान से निर्वाचित सभी सांसदों से हम विशेष रूप से अपील करना चाहते हैं कि अपनी मातृभाषा के लिये वे सचेत होकर इस ऐतिहासिक कदम के लिये कार्य करें। मेरी अपने समाज के बड़े–बूढ़ो से लेकर बच्चों तक से साग्रह अनुरोध है कि वे व्यक्तिगत रूप से अपनी बातचीत में अधिक से अधिक अपनी मातृभाषा का उपयोग करें।◆

स्थायी समिति की द्वितीय बैठक

- आइला से प्रभावित लोगों को राहत सामग्री भेजी जाए।
- २७ लाख रुपये का फिक्स डीपोजिट किया गया।
- २०० संरक्षक सदस्य बनाने का संकल्प।

बायें सर्वश्री आत्माराम सोंथलिया, सीताराम शर्मा, सभापति नन्दलाल रूँगटा, रामअवतार पोद्दार व ओमप्रकाश पोद्दार

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थायी समिति की द्वितीय बैठक शनिवार, ३० मई २००९ को सायं ४.०० बजे सम्मेलन भवन २५, अमहर्स्ट स्ट्रीट, कोलकाता में सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूँगटा की अध्यक्षता में हुई।

बैठक में सर्वप्रथम अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूँगटा ने सभी सदस्यों का स्वागत किया तत्पश्चात महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार ने गत बैठक की कार्यवाही पढ़कर सुनायी जिसे सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया।

अध्यक्ष श्री रूँगटा ने सदस्यों को बताया कि सम्मेलन कार्यालय में पहले से सुधार हुआ है। लेकिन अभी भी सुधार करना बाकी है। आप सभी से निवेदन है कि जब भी सम्मेलन कार्यालय जाये और अपनी सूझ–बूझ से कर्मचारियों को काम के प्रति प्रेरित करें। 'समाज विकास' और रोचक बने इसके प्रति आप सभी को चिन्तन करना है।

महामंत्री रामअवतार पोद्दार ने अखिल भारतीय समिति की मतगणना १३ जून २००९ को होने की सूचना दी। महामंत्री ने सम्मेलन में अभी तक ५१,०००/– रुपये के ५५ संरक्षण सदस्य बनाये जाने की सूचना देते हुए कहा कि यह सब सभी के सहयोग से सम्भव हुआ। २७ लाख रुपये फिक्स डीपोजिट की सूचना महामंत्री ने सदस्यों को दी।

संयुक्त महामंत्री ओमप्रकाश पोद्दार ने सम्मेलन कार्यालय के मरम्मत के बारे में आ रही परेशानियों को सबके सम्मुख रखा। इस पर सदस्यों ने चिन्ता जताते हुए कहा कि यह आम समस्या नहीं है। बल्कि सामूहिक समस्या है। अध्यक्ष ने कहा कि जल्द ही कोई निर्णय ले लिया जाएगा और कार्यालय की मरम्मत का काम शुरू होगा।

अध्यक्ष ने किसी भी कारणवश हर माह सामयिक विषयों पर गोष्ठी नहीं आयोजित होने पर चिंता जताई एवं सभी से इस पर सुझाव देने का आग्रह किया। श्री ओम लड़िया ने विस्तार से सुझाव दिये तथा अपने सहयोग का आश्वासन दिया।

पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने पश्चिम बंगाल में हाल में आये आइला के बारे में चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि बंगाल आपदा की स्थिति से गुजर रहा है। आइला में काफी लोगों को क्षति पहुँची है। जरूरत है मानवीय सहायता की। मारवाड़ी सम्मेलन ने इसके पहले भी बिहार, उड़ीसा में आई भयंकर बाढ़ में सहायता पहुँचाई है। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन उस समय अपनी भूमिका को अदा करते हुए मानवीय सेवा में पीछे नहीं रहा। आज एक बार फिर इस सहायता की जरूरत है। इसपर अध्यक्ष महोदय ने कहा कि देरी करने की जरूरत नहीं जितनी जल्द हो सके इस काम को हाथ में लिया जाये इस पर श्री गोविन्द शर्मा और श्री ओम लड़िया ने अपना सुझाव दिया कि किसी अन्य संस्थाओं से मिल कर अगर इस काम को करें तो हमें अधिक सफलता मिलेगी इस पर संयुक्त महामंत्री श्री ओमप्रकाश पोद्दार समाज विकास के सहायक संपादक श्री शम्भु चौधरी ने भारत सेवाश्रम संस्था के नाम का सुझाव दिया।

अध्यक्ष ने उपस्थित सभी सदस्यों से अगली बैठक में अपने साथ अनुपस्थित सदस्यों को भी लाने का आग्रह किया।

पश्चिम बंगाल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विश्वनाथ सुलतानिया के निधन पर उपस्थित सदस्यों ने उनकी आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन धारण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की◆

जंतर-मंतर

- सीताराम शर्मा

- जीत का सेहरा, हार का ठिकरा
- मैं भी 'सारी' तुम भी 'सारी'
- प्रेम दिवानी श्रुति पोद्दार

''जीत का सेहरा, हार का ठिकरा''

अंग्रेजी में एक कहावत है ''विक्टरी हेज मैनी फादरस, डिफीट हेज नन''। लोकसभा चुनाव के बाद पराजित राजनैतिक दलों में कोहराम मचा हुआ है। जुबानी खंजर चल रहे हैं। सबसे बड़े विपक्षी दल भारतीय जनता पार्टी को तो एक चैनल ने 'भारतीय झगड़ा पार्टी' का नाम ही दे दिया है। हार की पड़ताल के नाम पर सब अपना अपना गुबार निकाल रहे हैं। जसवन्त सिंह, यशवन्त सिन्हा जैसे बड़े नेता जमकर नेतृत्व को कोस रहे हैं। पहली बार खुलकर 'हिन्दुत्व' को चुनौती दी जा रही है। मेनका गांधी 'पुत्र–प्रेम' में वरुण की तरफदारी करती हुयी शहनवाज एवं नकवी से भीड़ बैठी है। राजनाथ सिंह पराजय के लिये व्यक्तिगत जिम्मेदारी लेकर भी तूफान को शान्त नहीं कर पा रहे हैं क्योंकि असली लड़ाई बची–खुची कुर्सीयों को लेकर है जिन्हें अडवाणी जी ने विद्रोह का विगुल बजने के पहले ही बंदर बाट कर दिया है।

यह सब कोई नयी बात नहीं है। हार एवं विशेषकर बुरी हार के बाद सभी राजनैतिक दलों में यह होता आया है। १९७७ में इन्दिरा गांधी की हार के बाद कांग्रेस पूरी तरह टूट एवं विभक्त हो गयी थी।

सीपीएम का हाल भी अच्छा नहीं है। प्रकाश करात के तीसरे मोर्चे की हवा निकल गयी है एवं पश्चिम बंगाल तथा केरल में पार्टी को भारी पराजय का सामना करना पड़ा है। पार्टी में प्रकाश करात एण्ड कम्पनी के विरुद्ध गुस्सा उबल रहा है। कहां तो दिल्ली की सरकार चलाते थे अब बंगाल की सरकार हमें जाती नजर आ रही है।

मुलायम, लालू, पासवान की तिकड़ी की भी हवा निकल गयी है। बिना बुलाये मेहमान की तरह मनमोहन सिंह की सरकार को समर्थन का पत्र राष्ट्रपति के पास पेश करने के बाद भी मनमोहन–सोनिया घास नहीं डाल रहे हैं। डूबती नाव में एक–दूसरे का ही सहारा है। 'किंग मेकर' से जोकर बन गये हैं। एक चुनाव ने देश की राजनीति का नक्शा ही बदल दिया है।

मायावती का 'गुस्सा' थम नहीं रहा है। पहले मंत्रियों पर गाज गिरी अब अफसरों की बारी है। किसी पर भी भरोसा नहीं कर पा रही हैं। प्रधानमंत्री की कुर्सी दिख रही थी अब तो उत्तर प्रदेश में जमीन खिसकती नजर आ रही है।

प्रधानमंत्री पद की बात कहें तो चुनाव के पूर्व उम्मीदवारों की लम्बी कतार खड़ी दिख रही थी। प्रकाश करात तीसरे मोर्चे की ओर से रेवड़िया बांटते हुए–मायावती, शरद पंवार, चन्द्रबाबू नायडु यहां तक कि जयललिता के हाथ में भी झुनझुना थमा रहे थे। नीतिश कुमार की भी लार टपकने लगी थी। लालू, मुलायम, पासवान तो किंग मेकर की बजाय किंग बनने की पूरी तैयारी में थे। चमत्कार को नमस्कार है। जनता सब जानती है।

◆◆◆ ◆◆◆ ◆◆◆ ◆◆◆

आडवाणी-मनमोहन

मैं भी 'सारी' तुम भी 'सारी'

भारत में गणतंत्र की सबसे बड़ी बुनियाद है चुनाव में पराजय को जनमत के समक्ष नतमस्तक होकर स्वीकार करना एवं विजय में विनम्रता को बनाये रखना। सत्ता एवं विपक्ष का एक दूसरे के प्रति सम्मान। मनभेद को मतभेद नहीं बनने देना। सैद्धांतिक विरोध को व्यक्तिगत कटुता के स्तर पर नहीं लाना। हाल के लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह एवं विपक्ष के नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी के बीच आरोपों एवं प्रत्यारोपों का स्तर बहुत तीखा, एवं कटुतापूर्ण रहा। अडवाणी का मनमोहन सिंह को ''सबसे कमजोर प्रधानमंत्री'' कहकर मजाक उड़ाना तथा प्रधानमंत्री का बाबरी मस्जिद टूटने के समय आडवाणी का एक कोने में बैठकर रोना कहना एक दूसरे के लिये काफी चोट पहुँचाने वाले थे।

हाल में प्रधानमंत्री ने रहस्योद्घाटन किया कि चुनाव परिणामों के बाद आडवाणी जी ने फोन पर उन्हें बधाई देते हुए चुनाव प्रचार के दौरान कटु उक्तियों के लिये दु:ख व्यक्त करते हुए 'सारी' कहा। प्रधानमंत्री ने भी आडवाणी जी से कहा कि आपके वक्तव्यों से बाध्य होकर मैंने भी ऐसा कुछ कहा जिससे कि आपके मन को चोट पहुँची मैं उसके लिये दु:ख व्यक्त करता हूँ। मैं भी 'सारी', तुम भी 'सारी'।

यह एक दूसरे के प्रति आदर सम्मान, सहिष्णुता एवं जनमत को नमस्कार की भावना ही है जिसने भारत में गणतंत्र को जीवित रखा हैं।

◆◆◆ ◆◆◆ ◆◆◆ ◆◆◆

प्रेम दिवानी श्रुति पोद्दार

कलकत्ता के सुप्रसिद्ध पोद्दार घराने की पुत्री श्रुति पोद्दार के आयरलेण्ड के ७० वर्षीय लार्ड दिलजीत राना से विवाह ने सबको चौंका दिया है। यूँ तो कहते हैं प्रेम अंधा होता है, वह जात–पात, रंग, उम्र कुछ नहीं देखता। लार्ड दिलजीत राना के दिल को श्रुति की कला एवं संगीत में पारंगता ने जीत लिया और उन्होंने पुन: विवाह करने का फैसला कर लिया। विवाह का जश्न तीन दिन चला। लार्ड दिलजीत जो उत्तरी आयरलेण्ड में भारत के अवैतनिक कंसुल हैं ने बताया है कि मैं श्रुति से कुछ वर्ष पूर्व दिल्ली में मिला था, वे एक शानदार कलाकार एवं गायक हैं, उनके चाचा सरोज पोद्दार दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष रहे हैं। उनके चेहरे पर खुशी एवं गर्व के भाव साफ झलक रहे थे। प्रेम दिवाना होता है।

कलकत्ता के मार्डन हाई स्कूल में पढ़ी श्रुति अपने पहले विवाह के बाद श्रुति झुनझुनवाला बनकर दिल्ली में रही। गणित विशेषज्ञ श्रुति अरविन्दो की भक्त है एवं 'सूत्र' नामक एक पत्रिका का सम्पादन भी किया है। लेडी पोद्दार माफ कीजिये, लेडी राना।◆

श्री रमेश चन्द्र गोपीकिशन बंग का कोलकाता में भव्य स्वागत

जिस प्रान्त में रहें, वहाँ के लोगों के साथ मिलकर काम करें

- रमेश चन्द्र गोपीकिशन बंग

सम्मेलन के अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूँगटा भाषण देते हुए।
बायें से सम्मेलन के संयुक्त महामंत्री द्वय श्री ओम प्रकाश पोद्दार एवं श्री संजय हरलालका, कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया,
पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूँगटा, महाराष्ट्र के मंत्री श्री रमेश चन्द्र गोपीकिशन बंग, उपाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा महाराष्ट्र सरकार के खाद्य एवं आपूर्ति मंत्री तथा महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री रमेश चन्द गोपीकिशन बंग के कोलकाता आगमन पर आयोजित सम्मान गोष्ठी की अध्यक्षता सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रूँगटा ने की। उन्होंने अपने स्वागत वक्तव्य में कहा कि मारवाड़ी सम्मेलन की सोच व कार्यक्रम है सामाजिक समरसता,

सम्मेलन के सं.महामंत्री श्री संजय हरलालका पुष्प गुच्छ देकर सम्मान करते हुए

समाज सुधार, उच्च शिक्षा, राजस्थानी भाषा आदि।

आज हमारे समाज में बड़े और छोटे के बीच जो खाई पैदा हो रही है उसे सिर्फ सम्मेलन ही दूर कर सकता है। उन्होंने देश में चल रहे मतदान पर्व पर बोलते हुए कहा कि जो पार्टी या प्रत्याशी देश, राज्य एवं समाज के बारे में सोचे, हमें उसका समर्थन करना चाहिए। इस मौके पर पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि हमारा सम्मेलन प्रान्तों में बसता है, वही हमारी ताकत है। वे मजबूत और सक्रिय हैं और अपनी भूमिका का पालन कर रहे हैं तो सम्मेलन अपने आप में मजबूत हो जाता है। इस मौके पर सम्मेलन के कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया ने शॉल तथा संयुक्त राष्ट्रीय महामंत्री श्री संजय हरलालका तथा श्री नवल जोशी ने पुष्प गुच्छ भेंट कर श्री बंग का सम्मान किया। सम्मान के पश्चात श्री बंग ने कहा कि हम जिस प्रान्त में रहते हैं वहाँ के लोगों के साथ मिलकर हमें काम करना चाहिए। उन्होंने कहा कि कोलकाता को हम हमेशा से

सम्मेलन के सं.महामंत्री श्री ओम प्रकाश पोद्दार पुष्प गुच्छ देकर सम्मान करते हुए

प्रेरणास्रोत मानते हैं क्योंकि यहाँ काफी सामाजिक गतिविधियां होती हैं। उन्होंने उपस्थित लोगों से चैरिटी की बजाय उच्च शिक्षा पर अधिक ध्यान देने की अपील की। तथा मारवाड़ी समुदाय से अपील की कि वे चाहे किसी भी पार्टी या व्यक्ति को वोट दें, किन्तु मतदान अवश्य करें। उपाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया ने धन्यवाद ज्ञापन किया तथा संचालन संयुक्त महामंत्री श्री ओमप्रकाश पोद्दार ने किया। मध्याह्न भोज के साथ सम्मान गोष्ठी सम्पन्न हुई। ◆

आइला ने मचाई बंगाल में तबाही
सम्मेलन ने भेजा तत्काल राहत सामग्री

बंगाल के सुंदरवन से पलायन

राहत सामग्री से भरा ट्रक भारत सेवाश्रम संघ को सौंपते हुए सम्मेलन के पदाधिकारीगण

१०० किलोमीटर प्रति घंटे की स्पीड से चल रही हवाओं की वजह से कोलकाता के नेताजी सुभाष चंद्र बोस हवाई अड्डे पर उड़ानों के आने–जाने पर रोक लगा दी गई थी। कई जगहों पर पेड़ गिर जाने से ट्रैफिक जाम हो गये थे। कोलकाता के अलावा सबसे ज्यादा प्रभावित जिलों में साउथ २४परगना, ईस्ट २४परगना, ईस्ट मिदनापुर, हावड़ा, हुगली, बर्धमान शामिल हैं। सुंदरवन इलाके में हालात खराब है। यह रॉयल बंगाल टाइगर्स का एक बड़ा ठिकाना है। यहाँ बी एस एफ और पुलिस बचाव और राहत कार्य चला रहे हैं। इस अवसर पर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने तत्काल राहत सामग्री भेजने का निर्णय लिया और भारत सेवाश्रम संघ के साथ मिलकर बड़ी संख्या में राहत सामग्री का वितरण किया गया।

पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता और सुंदरवन में बीते सप्ताह आए चक्रवाती समुद्री तूफान आइला ने सुंदरवन का भूगोल ही बदल दिया है। इससे इलाके के हजारों लोग अपने ही घर में शरणार्थी बन गए हैं। सुंदरवन इलाके से लोगों के पलायन ने बंगाल में १९४३ में पड़े अकाल की यादें ताजा कर दी हैं। सजनेखाली के खगेन मंडल कहते हैं कि 'गांव में हमारा कुछ नहीं बचा है। खेत खारे पानी में डूबे हैं। पशु मारे जा चुके हैं। घर भी ढह गया है।

पर्यावरणविदों का कहना है कि सुंदरवन इलाके में बीते पचास वर्षों में कभी किसी तूफान से इतनी बर्बादी नहीं हुई थी, जितनी इस तूफान से हुई है।◆

आंचलिक समरसता और मारवाड़ी समाज

- महेश जालान, पटना

परिचयः श्री महेश जालान बिहार प्रान्तीय मारवाड़ी युवा मंच के संस्थापक अध्यक्ष और अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रह चुके हैं। अनेक सामाजिक और आध्यात्मिक संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं और आप एक प्रखर वक्ता के रूप में जाने जाते हैं। -संपादक

भारत अनेकताओं में एकता का देश है। विभिन्न धर्म, सम्प्रदाय, जाति और भाषा के लोग यहाँ रहते हैं। कश्मीर से कन्याकुमारी तक और कच्छ से कामरूप तक, अलग–अलग बोली, पहनावा खान–पान, रहन–सहन और रस्मों–रिवाज, देश फिर भी एक। यह बहुत बड़ी विशेषता है जो भारत को दुनियाँ के अन्य देशों से अलग और विशिष्ट बनाती है। इस विशेषता को बनाए रखने के लिए सबसे आवश्यक है आंचलिक समरसता। सौभाग्य से मारवाड़ी समाज में आंचलिक समरसता का गुण कूट–कूट कर भरा है।

आंचलिक समरसता का अर्थ है प्रदेश के स्थानीय (मूल) निवासियों से घुल–मिल जाना, उनके सुख–दुःख में भागीदार बनना, उसकी बोली और संस्कृति को अपनाना एवं उनके धर्म का सम्मान करना। राजस्थान की भूमि शौर्य और संघर्ष की जननी है। जिस किसी ने भी भारत को गुलाम बनाकर उस पर शासन करना चाहा, उसे सबसे पहले राजस्थान के राजपूतों ने नाकों चने चबवाए। भारत का इतिहास लगभग सात सौ वर्षों तक राजस्थान के इर्द–गिर्द घूमता रहा। देश की आजादी और विकास में महाराणा प्रताप, राजा हम्मीर, दुर्गादास राठौर, राजा मानसिंह, राणा सांगा, रानी पद्मिनी के योगदान और बलिदान की गाथा आज किसी भारतवासी से छिपी नहीं है। राष्ट्रीय चेतना के संदेशवाहक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, सेठ जमनालाल बजाज, सेठ गोविन्द दास, डॉ. राम मनोहर लोहिया, हनुमान प्रसादजी पोद्दार, भागीरथ कानोड़िया, भवरमल सिंधी जी जैसे नाम और उनको कामों कौन नहीं जानता?

लगातार आक्रमणों से खिन्न और अपने प्रदेश की भौगोलिक स्थिति से विवश होकर मारवाड़ी विस्थापित होने लगे। आजीविका की खोज में मारवाड़ी विभिन्न स्थानों पर फैल गए। दूर–दराज के छोटे–छोटे गाँवों में, पहाड़ी बस्तियों में, बीहड़ों और जंगलों में, जहाँ भी ये गए, उद्यमी और संघर्षशील होने के कारण वहीं पर बस गए।

प्रवासी मारवाड़ियों की यह सबसे बड़ी विशेषता रही है कि जिस प्रकार चीनी अपनी मिठास को कायम रखते हुए दूध में घुल जाती है उसी प्रकार ये अपनी संस्कृति और संस्कारों का पालन करते हुए जिस प्रदेश में भी बसे, वहाँ के स्थानीय निवासियों की संस्कृति में शामिल हो गए। इतना ही नहीं, उनके सुख–दुःख के साथी बनकर मारवाड़ियों ने लोकप्रियता और सम्मान प्राप्त किया। लोकोपकार और सांस्कृतिक उदारता की यह प्रवृत्ति न केवल व्यापार की समृद्धि का कारण बनी बल्कि इससे सम्पूर्ण देश की भावनात्मक एकता को भी बल मिला।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह के शब्दों में, ''मारवाड़ी भारत के कोने–कोने में फैले हुए हैं। वे जिस प्रदेश में बसते हैं, वहाँ की तरक्की के लिए बहुत कुछ करते हैं और साथ ही अपनी मातृभूमि को भी नहीं भूलते। मारवाड़ी अपनी मेहनत और बुद्धि से सम्पन्न होते हुए भी घमण्ड नहीं करते, यह इनकी खूबी है।''

राजस्थान के विभिन्न इलाकों से विस्थापित हुए बिड़ला, सिंघानिया, बजाज, गाड़ोदिया और कानोड़िया आदि घराने आज भारत के विभिन्न प्रान्तों में अपने उद्योगों एवं व्यवसाय के द्वारा एक ओर जहाँ रोजगार की समस्या को हल करते हुए राष्ट्रीय उत्पादन में अपना योगदान दे रहे हैं, वहीं दूसरी ओर स्थानीय नागरिकों के कल्याण हेतु निःस्वार्थ सेवा कार्य भी कर रहे हैं।

बड़े–बड़े महानगरों में ही नहीं अपितु छोटे–छोटे शहरों, गाँवों और पहाड़ी इलाकों में भी सार्वजनिक स्थान, स्कूल, कॉलेज, पुस्तकालय, अस्पताल, धर्मशाला, प्रशिक्षण केन्द्रों का निर्माण एवं संचालन यह साबित करता है कि मारवाड़ी समाज आज के भोगवादी युग में भी लोकहित की बात सोचता है और परहित के कार्यों में खर्च करता है। देश में जितने भी छोटे–छोटे स्वैच्छिक समाजसेवी संगठन और गैर–सरकारी कल्याणकारी प्रकल्प चल रहे हैं उनमें से अधिकांश या तो मारवाड़ी समाज द्वारा स्थापित हैं या उनमें बहुत बड़ा योगदान इस समाज का है।

मारवाड़ी समाज की इस अनूठी और अन्यत्र दुर्लभ सेवा–भावना का आकलन करते हुए सोशलिस्ट नेता श्रीकृष्णन ने कहा है कि ''मारवाड़ी समाज के लोग अगर वापिस राजस्थान की ओर मुड़ते तो वह मरुभूमि नहीं रहता, राजस्थान की काया–पलट हो जाती, लेकिन ऐसा नहीं है। ये प्रवासी मारवाड़ी जहाँ भी गए वहीं उद्योग–धंधा शुरु किया, वहीं के करोड़ों लोगों की रोजी–रोटी के साधन बने, जहाँ गए हमेशा वहीं की भलाई और विकास के लिए चिन्ता की, मारवाड़ी समाज की यह विशेषता अन्यत्र देखने को नहीं मिलती है।'' भारत की विशेषता है कि यहाँ हर सौ किलोमीटर पर बोली बदलती है। मारवाड़ी समाज के लोग आज विभिन्न ग्रामीण, शहरी और पहाड़ी इलाकों में वहाँ की स्थानीय बोली इस कदर बोलते पाए जाते हैं कि उन्हें स्थानीय निवासियों से अलग पहचानना मुश्किल हो जाता है। अपनी सांस्कृतिक विरासत को प्रवास में रहकर भी यह समाज नहीं भूलता है बिहार की छठ–पूजा, बंगाल की दुर्गा पूजा, उड़ीसा में रथ यात्रा, पंजाब की बैसाखी, आसाम के बिहू, तमिल के पोंगल, केरल के ओणम, कर्नाटक के उगाड़ी और महाराष्ट्र के गणपति की खुशी में झूमते मारवाड़ी आंचलिक समरसता के पर्याय कहे जा सकते हैं। ग्रामीण अंचलों में विशेषकर अपने ग्राहकों और कर्मचारियों से स्थानीय बोली में धारा–प्रवाह वार्त्तालाप करते, स्थानीय पर्व–त्यौहारों को उत्साह और श्रद्धापूर्वक मनाते मारवाड़ी भारत की विविधता में रंग भरती कूची हैं।

आज जबकि देश की एकता और अखंडता को अपने ही देशवासियों से खतरा है, ऐसी विकट परिस्थिति में यह अनिवार्य हो जाता है कि अन्य समुदाय भी मारवाड़ी समाज का आंचलिक समरसता का यह गुण अपने आचरण में उतारें ताकि देश को मिल सके सम्पूर्ण एकता का वह कवच जिसपर कोई भी विघटनकारी, अलगाववादी या आतंकवादी तत्त्व प्रहार करने की हिम्मत नहीं कर सके और हम कह सकें कि ''हम सब सुमन एक उपवन के।''◆

समाज का संगठन

सम्मेलन की भूमिका

- प्रो. (डॉ.) विश्वनाथ अग्रवाल

"संघे शक्ति कलेयुगे"

लेखक सैंतीस वर्षों तक राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर, बिहार कॉलेज सेवा आयोग के सदस्य (१९८७-९०) तथा नालन्दा खुला विश्वविद्यालय के कुलपति बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री (१९७७-८०), उपाध्यक्ष (१९८०-८२) सम्मेलन के मुखपत्र 'बिहार सम्मेलन' के अनेक वर्षों तक सम्पादक, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की समितियों के सदस्य रहे हैं। सम्प्रति अनेक समाज सेवी, शैक्षणिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक संस्थाओं में विभिन्न पदों पर कार्यरत हैं।

सम्पर्क : ७०३ए, ह्वाईट हाउस अपार्टमेन्ट, बुद्ध मार्ग, पटना-८००००१

- सम्पादक

संगठन ही समाज की शक्ति का आधार होता है। शक्ति से परिवार और परिवारों के समूह से समुदाय तथा समाज का निर्माण होता है। समाज में रहकर ही व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है तथा उसके व्यक्तित्व का विकास होता है। जन्म से लेकर मृत्यु तक व्यक्ति समाज पर आश्रित होता है। इसलिए यह आवश्यक तथा उचित है कि व्यक्ति समाज में रहे, समाज से सहयोग प्राप्त करे तथा समाज को सहयोग प्रदान करे। व्यक्ति समाजसापेक्ष है क्योंकि वह एक सामाजिक प्राणी है। व्यक्ति और समाज में अन्योनाश्रय सम्बन्ध है।

समाज में संगठन कैसे हो? परस्पर मिलन, विचारों का आदान–प्रदान, सामूहिकता की भावना, दु:ख–सुख में भागीदारी, एक–दूसरे की भावनाओं का आदर, प्रत्येक व्यक्ति का समादर एवं सम्मान, स्वार्थरहित व्यवहार, छल–प्रपंच का तिरस्कार, परस्पर सौहार्द्रपूर्ण सहानुभूति एवं सद्भावना आदि चन्द ऐसे लक्षण हैं जो समाज को एकता के सूत्र में पिरो सकते हैं। समाज के अन्य व्यक्तियों द्वारा किये गये अच्छे कार्यों की सराहना, किसी पर संकट आने पर सहानुभूति जताना तथा संकट से उबारने में सहयोग एवं समर्थन प्रदान करना सभ्य और सुसंस्कारी समाज के परिचायक तत्त्व हैं। तभी समाज में एकता एवं अखंडता आती है।

मारवाड़ी समाज एक प्रबुद्ध समाज है। यह एक गतिशील एवं क्रियाशील समाज है। इस समाज का हर वयस्क व्यक्ति उद्यम तथा परिश्रम द्वारा अपनी आजीविका अर्जित करता है। वह परमुखापेक्षी रहना नहीं चाहता। अपनी बुद्धि और पराक्रम का प्रयोग कर वह जीवन की सुख–सुविधायें जुटाने का उपक्रम करता है। उद्भव तथा विकास के मार्ग पर चलने के यत्न–प्रयत्न करता है। ये बातें अच्छी लगती हैं। किन्तु इस समाज का अभीष्ट मानो धनोपार्जन ही हो गया है। शिक्षा, संस्कृति, साहित्य, कला, संगीत, क्रीड़ा, मनोरंजन, विज्ञान, आध्यात्म आदि से यह समाज विमुख–सा प्रतीत होता है। किसी समाज का सर्वांगीण विकास तभी माना जाता है जब वह धनोपार्जन के साथ इन क्षेत्रों में भी अपनी पहचान बनाये। धनपति के साथ–साथ ज्ञान–विज्ञान तथा जीवन की अन्य विधाओं में भी हम शीर्ष पर पहुँचने का प्रयत्न करें, तभी एक विकसित–आधुनिक समाज की श्रेणी में हमारी गणना हो सकेगी। इक्का – दुक्का उपलब्धियां पर्याप्त नहीं मानी जा सकती हैं।

उपलब्धियाँ प्राप्त करने के लिये समाज को संगठित करना आवश्यक प्रतीत होता है। परस्पर संपर्क अर्थात् मिलन बहुत बड़ा कारक बनता है। संपर्क से संवाद, विचारों का आदान–प्रदान और फलस्वरूप सौहार्द्र, सद्भाव, सहयोग, सेवा और समर्पण का वातावरण निर्मित होता है। आपसी वैमनस्य तिरोहित होता है, जानने–समझने के अवसर उत्पन्न होते हैं तथा सामंजस्य एवं सन्तुलन का भाव जागृत होता है।

शहर हो या कस्बा अथवा गाँव – समाज के लोग समय, निर्धारित कर लें कि माह में एक बार सभी लोग साथ मिल बैठेंगे–धनी, मध्यम वर्ग तथा अन्य सभी एक स्थान पर मिलकर बैठेंगे। सुख–दु:ख बाँटें, प्रेम एवं आत्मीयता का सम्बन्ध बढ़ायें, सहयोग करें। इसके अतिरिक्त पर्व–त्यौहारों जैसे होली, दशहरा, दीपावली, जन्माष्टमी आदि तथा पारिवारिक एवं सामाजिक समारोहों यथा महापुरुषों की जयंती, स्थानीय समाज के किसी विशिष्ट व्यक्ति की पुण्यतिथि, कोई पुण्यार्थ निर्माण अथवा समर्पण कार्य आदि अवसरों पर मिलने, कुशल–क्षेम बाँटने तथा आनन्द के क्षण भोगने के अवसर उपलब्ध कराये जायें। समाज की बैठकों में व्यक्तिगत/परिवार सम्बन्धी चर्चाओं के अतिरिक्त अन्य विषयों पर परिचर्चा भी की जानी चाहिये।

वातावरण एवं पर्यावरण का प्रदूषण मानवजाति के लिए एक संकटपूर्ण चुनौती बन गया है। हम बैठकों में अपने नगर,कसबे या ग्राम में सामूहिक रूप से इस सम्बन्ध में योगदान कर सकते हैं–वृक्ष लगाना तथा उनकी देखभाल करना एक प्रमुख कार्य हो सकता है। सामूहिक रूप से हम अपने क्षेत्र में स्वच्छता बनाये रखने, विद्यालय, चिकित्सालय, पुस्तकालय, खेलकूद की सुविधायें, साहित्य कला तथा संगीत के लिये संस्थान, छात्रावास, धर्मशाला, विवाह भवन, मन्दिर आदि की स्थापना तथा संचालन में संलग्न होकर एक सुन्दर समाज को साकार कर सकने में समर्थ हो सकते हैं। बैठकों में राजनीति पर भी परिचर्चा होनी चाहिये–खासकर एक जागरुक मतदाता के रूप में मतदान अवश्य करें। समाज के किसी योग्य,समाजसेवी तथा निष्ठावान व्यक्ति की राजनैतिक

महत्त्वाकांक्षा को पूरा करने में अपनी उदारता एवं प्रोत्साहन द्वारा लोकतंत्र में अपनी भूमिका निभायें।

सुरक्षा इस समय समाज की बड़ी चुनौती है। अनवरत बैठकें करने के फलस्वरूप असामाजिक तत्त्वों को समाज की शक्ति तथा एकता का अहसास होने से उनके दु:साहस पर पानी फिरने जैसा असर वांछित है। युवाओं को शारीरिक एवं मानसिक रूप से सशक्त, सश्रम तथा साहसी बनाने के लिये व्यायामशाला, रायफल क्लब, आग्नेयास्त्रों के लाईसेंस तथा साधन की प्राप्ति पर भी विचार करना वाजिब होगा। विवाहोत्सव के अवसर पर आडम्बरपूर्ण तड़क–भड़क, सड़कों पर भौंड़े नाच, शराब पीना, पटाखे छोड़ना, बड़े–बड़े भोज जिनमें अनेकानेक प्रकार के व्यंजन परोसना तथा इन पर अकूत धन व्यय करने पर रोक लगाना भी विचारणीय हो। समाज के संगठन में बच्चों, युवाओं तथा महिलाओं की भी अहम भूमिका होती है। आज देखा जा रहा है कि बच्चे तथा युवावर्ग समाज से विमुख हो रहे हैं। अपनी पढ़ाई–लिखाई, खेलकूद और सबसे अधिक कामिक्स पढ़ने, टेलिविजन देखने, गेम्स खेलने तक उनका जीवन सिमट गया है। अपने सम्बन्धियों, पड़ोसियों या आसपास के लोगों तक को वे पहचानते नहीं। उनका जीवन स्वकेन्द्रित बन गया है। वे अपने घर के बड़ों के प्रति भी स्नेह तथा आदर का भाव नहीं रखते हैं। उन्हें केवल अपनी व्यक्तिगत सुख–सुविधा का ही ख्याल रहता है। अधिकतर माता–पिता को पता ही नहीं रहता कि उनका लड़का/लड़की क्या पढ़ता है, उसके कौन दोस्त–मित्र हैं, वह किस प्रकार के लोगों से मिलता है और क्या सीखता है। माँ–बाप उसकी हर मांग पूरा करते हैं और अपने कर्त्तव्य की इतिश्री मान लेते हैं। फलस्वरूप बच्चों में अच्छे संस्कारों का पोषण नहीं हो पाता। वे फैशन, तरह–तरह के पेय पदार्थ का पान, धूम्रपान, ड्रग का सेवन तथा हिंसा अश्लीलता (जो फिल्मों एवं टेलिविजन के प्रभाव के कारण उनमें घर कर लेती हैं) के शिकार बन बैठते हैं और इस प्रकार एक संवेदनशील, समझदार तथा जिम्मेवार नागरिक के गुणों से वंचित रह जाते हैं। समाज के वयस्कों खासकर, माता–पिता को बच्चों, परिजनों, पड़ोसियों, सम्बन्धियों की जानकारी तथा उनके प्रति प्रेम, सद्भाव तथा आदर–सम्मान का भाव जागृत करना चाहिये। उन्हें समाजोन्मुखी तथा परिवारपेक्षी बनाना चाहिये। सामाजिक तथा सांस्कृतिक समारोहों, उत्सवों में उन्हें अवश्य सम्मिलित किया जाय। उनमें परोपकार, सेवा तथा उदारता के संस्कार डाले जाएं। वयोवृद्धों को पाँव छू कर उनका सम्मान करना सिखाया जाय। तभी बच्चे संस्कारी होंगे तथा समाज में एकता, समानता, भाईचारा, स्नेह तथा सद्भाव की अभिव्यक्ति तथा सद्–आचरण से उत्पन्न भावी समाज को सुसंगठित, मर्यादित एवं अनुशासित बनने का विस्तृत आधार प्राप्त होगा। क्योंकि अनुशासन, मर्यादा तथा शिष्टाचार ही सभ्य जीवन की आधारशिला होते हैं।

इसी प्रकार बालिकाओं तथा महिलाओं को भी ऐसे अवसर प्रदान किये जायें ताकि उनके व्यक्तित्व का समुचित विकास हो। सामाजिक, सांस्कृतिक समारोहों में उन्हें भी सम्मिलित कर अपनी भागीदारी निभाने दिया जाय। बालिकाओं की शिक्षा तथा व्यक्तित्व विकास पर लड़कों के बराबर ध्यान दिया जाय। कन्या भ्रूण–हत्या के विरुद्ध जागरुकता बढ़ाने हेतु जोरदार अभियान चलाया जाए। आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की कन्या के विवाह का जिम्मा सामूहिक रूप से समाज उठाये। सामूहिक विवाहों का आयोजन किया जाय जिसमें समाज के सभी वर्गों (अमीर–गरीब) के विवाह योग्य युवक–युवतियों को भाग लेने के अवसर दिये जायें। लड़कियों को पढ़–लिख कर अपनी योग्यता एवं प्रतिभा के अनुकूल कार्य करने की सुविधा प्रदान की जाय। पारिवारिक विवादों को कोर्ट–कचहरी तक न ले जाकर सामाजिक स्तर पर ही हल करने के प्रयास किए जाएं। युवा वर्ग में गत वर्षों में पढ़ने–लिखने की ओर तो रूझान बढ़ा है, किन्तु साथ ही रातों–रात धनाढ्य बनने की ललक भी आसमान छूने लगी है। फलस्वरूप वे हर तरह के तरीके अपनाने लगते हैं। घर के तथा समाज के बुजुर्गों को उन्हें ऐसा करने से रोकने के प्रयास करने चाहिये तथा अनैतिक एवं कानून का अतिक्रमण करने वाले कार्यों से बचने हेतु सीख देना तथा सावधान करना चाहिये। हम यह न भूलें कि युवा तथा बच्चे ही समाज का भविष्य हैं। अतएव अच्छे संस्कार से ही सुखी समाज की आधारशिला का निर्माण होता है।

मारवाड़ी समाज के लोग जब आपस में मिलें तो अपनी मातृभाषा राजस्थानी में ही वार्तालाप करें। अपने व्यावसायिक तथा सामाजिक कार्यकलापों में राष्ट्रभाषा हिन्दी का ही प्रयोग करें। देखा जा रहा है कि अंग्रेजी का प्रयोग उद्योग, व्यापार तथा आमंत्रण आदि में दिनोंदिन बढ़ता ही जा रहा है। समाज के ऐसे लोग जो स्वयं अंग्रेजी लिख–पढ़ या समझ नहीं सकते, अपने आमंत्रण, बधाई कार्ड अंग्रेजी भाषा में छपवाते हैं। यह दयनीय तथा हास्यास्पद है। यह तो गुलामी की मानसिकता का पारिचायक है। यूरोप के देशों, चीन, दक्षिण अमेरिका तथा अन्य अनेक देशों में वहां की अपनी भाषाओं का ही प्रयोग बोलचाल तथा अन्य सभी कार्यों में होता है। फिर अपने देश में हम अंग्रेजी की गुलामी से मुक्त क्यों नहीं हो सकते?

मारवाड़ी सम्मेलन सन् १९३५ ई. में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना कलकत्ता में हुई। (तब झारखण्ड भी साथ था) बिहार प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना सन् १९४० ई. हुई और इसका प्रथम अधिवेशन २९ जून १९४० ई. में भागलपुर में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन अपनी सामाजिक यात्रा के लगभग सत्तर वर्ष पूरे करने जा रहा है। यह इसकी सक्रियता एवं जीवंतता का परिचायक है। इस दौरान कई उतार–चढ़ाव भी आते रहे। फिर भी इसकी यात्रा अनवरत अग्रसर है। यह एक शुभ लक्षण है।

सम्मेलन एक विचार मंच है। सभ्य, सुसंस्कृत तथा संवेदनशील समाज का निर्माण तथा समाज का बहुमुखी विकास इसके लक्ष्य हैं। इस दिशा में निरन्तर गतिशील रहना ही इसका ध्येय तथा कार्यक्रम है। समाज का संगठन इसका मुख्य उद्देश्य है। रूढ़ियों, कुरीतियों तथा बुराइयों का बहिष्कार कर एक प्रगतिशील समाज का निर्माण इसके क्षितिज हैं। इन लक्ष्यों, आदर्शों की प्राप्ति के लिये इसे उपक्रम करते रहना पड़ेगा। संपर्क और विचारों के आदान–प्रदान हेतु सम्मेलन के पदाधिकारियों को अधिकाधिक दौरे करने की आवश्यकता हैं। परस्पर मिलन हेतु बैठकों, विचार–गोष्ठियों, सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के कार्य शिविर/शाला, विद्वानों, समाजसेवियों के संभाषण, कार्यकर्त्ताओं तथा विशिष्टजनों का सम्मान आदि कार्यक्रम समय–समय पर आयोजित किये जायें। बैठकों, कार्यशालाओं में ऊपर रेखांकित विषयों पर गहन विचार–विमर्श तथा तदनुसार कार्यक्रम निर्धारित किये जायें।

याद रहे, सम्मेलन के अध्यक्ष, महामंत्री, मंत्री आदि बड़े ही सम्मान–प्रतिष्ठा के पद हैं। साथ ही इनके उत्तरदायित्व भी बड़े हैं। समाज को नेतृत्व प्रदान करना, समाज के सभी वर्ग के लोगों के विश्वास तथा आस्था का पात्र बनाना महती जिम्मेवारी है जिन्हें सही रूप में निभाना आग के दरिया पर चलने जैसा है। समाज सेवा लक्ष्य हो तो राह के कांटे फूल बन जाते हैं।

सम्मेलन एक महान कीर्ति स्तम्भ है, समाज की आशाओं का आकाशदीप है। समाज की व्यवस्था, सुरक्षा, हिम्मत, आकांक्षायें, अपेक्षायें तथा सुन्दर एवं प्रगतिशील समाज के सपने सम्मेलन साकार करने की क्षमता रखता है। हाँ, पदाधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं, सहयोगियों में लगन, उत्साह एवं निष्ठा का भाव हो तभी यह संभव प्रतीत होता दीखता है। हमें प्रयत्न करते रहना है। अन्त में कहना है:–

मंजिल मिले, न मिले, इसका गम नहीं
मंजिल की जुस्त-जू में हमारा कारवां तो है।

राजनीति में मारवाड़ी समाज का योगदान

-प्रो. रामपाल अग्रवाल 'नूतन'

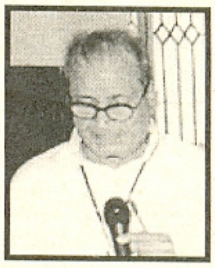

मारवाड़ राजस्थान में है और 'राज' शब्द जुड़ा है राजस्थान में तो मारवाड़ी राजनीति से भिन्न अथवा दूर कैसे हो सकता है? राजस्थान का पुराना नाम राजपूताना, तो यहाँ भी बात राज की ही हो रही है। इसका अर्थ यह हुआ है कि प्रारम्भिक काल से ही इस प्रदेश का प्रत्येक व्यक्ति राजनीति से न्यूनाधिक परिचित व सम्बन्धित रहा है।

मारवाड़ी लोग राजस्थान से बाहर गये तो राजनीतिक चेतना की अपनी इस विशेषता का परित्याग नहीं किया। मुगल बादशाह अकबर के प्रमुख सेनापति राजा मानसिंह जब दिल्ली से कूच कर पूर्वी भारत में मुगल साम्राज्य के विस्तार के क्रम में आये तो अपने साथ अनेक मारवाड़ी प्रशासनिक, व्यापारिक एवं युद्ध कौशल वीरों को लेकर आये। इनमें से कई मारवाड़ी पुन: लौट कर नहीं गये। यहीं रह गये। इस तरह यह कहा जा सकता है कि लगभग सोलहवीं सदी के आस–पास की अवधी में अच्छी संख्या में लोगों का मारवाड़ के क्षेत्रों से चलकर पूर्वी भारत में बिहार, बंगाल, उड़ीसा और आसाम आना प्रारम्भ हुआ जो निरन्तर बढ़ते चले गये। इसी तरह आक्रमण के समय मराठवाड़ा, विदर्भ तथा अन्य प्रदेशों में मारवाड़ी लोग गये। राज्य में कई तरह के दायित्व होते हैं। राजाओं के रूप में, भिन्न–भिन्न भांति की व्यवस्थाओं का दायित्व। सभी दायित्वों को निभा कर राजनीति में मारवाड़ी समाज का योगदान हुआ।

मारवाड़ में रहने वालों को अनेक विपरीत परिस्थितियों में संघर्ष करने का अभ्यास होता है। श्रम उनका स्वभाव। ईमानदारी, विनम्रता एवं समरसता उनके संस्कार। इन विशेषताओं का उन्हें सर्वत्र लाभ मिला। जहाँ भी जिस प्रदेश में गये, वहाँ की भाषा सीख ली, वहाँ के लोगों में घुलमिल गये। उदारता, औरों की भलाई, जैसे मारवाड़ियों के गुणों के कारण ही इस समाज ने पैसा भी कमाया और सर्वत्र चिकित्सालय, शिक्षालय, कुँए, बावड़ी, प्याऊ, अनाथालय, गौशालाओं का अम्बार लगा दिया जो इस समाज की देश भर में अपनी अलग पहचान बनाती है।

राजस्थान से जो लोग अन्य प्रदेशों में गये, उन्हें मारवाड़ी कहा जाने लगा। यद्यपि मारवाड़ राजस्थान का एक क्षेत्र है। पूरा राजस्थान मारवाड़ नहीं है। जोधपुर, जैसलमेर, बीकानेर का विस्तृत हिस्सा बालू के अधिक्य वाला है। मरु प्रदेश अथवा बालू या फिर रेत की अधिकता वाला क्षेत्र इसमें रहने वाले मारवाड़ी स्वभावत: मारवाड़ी कहाये।

ऐसे मारवाड़ से आने वाले लोग मारवाड़ी समाज की पहचान व्यापारी के रूप में बनी। उपरोक्त वर्णित विशेषता लिये हुए थे। बाद में उदयपुर (मेवाड़) हो या जयपुर स्टेट या हाड़ोती क्षेत्र या राजस्थान के किसी भी हिस्से से आये लोग मारवाड़ी ही कहलाये।

क्षत्रित्व की पृष्ठभूमि : यद्यपि राजस्थान से आने वाले लोग प्राय: व्यापारी थे, लेकिन इनके पूर्वज क्षत्रिय राजा थे। जैसे मारवाड़ी समाज में अग्रवालों की संख्या सर्वाधिक रही थी जो महाराज अग्रसेन की सन्तान हैं। अग्रसेन एक क्षत्रिय राजा थे, जो किवदन्तियों के अनुसार लगभग ५ हजार वर्ष पूर्व महारानी लक्ष्मी के आदेश पर वैश्य बने। इनके रीतिरिवाजों में आज भी राजाओं के प्रतीकों का उपयोग होता है। इसी तरह एक बड़ा वर्ग माहेश्वरी समाज है। जैन समाज, खण्डेलवाल आदि क्षत्रिय थे जो बाद में वैश्य बने। तब से लेकर इस अवधि में जो लोग देश के कोने–कोने से आये वे अग्रवाल, माहेश्वरी, खण्डेलवाल आदि कहलाये। इस तरह कहना चाहिये कि यह व्यापारी समाज राजघरानों की पष्ठभूमि से आया है। इसलिये राजनीति इनके लिये नयी नहीं है। इनके खून में है।

मुगल काल हो या इसके पूर्व का, यह स्पष्ट उल्लेख प्राय: मिलता है कि राजाओं के दीवान व खाजांची तथा अन्य व्यवस्थायें वैश्य समाज करता था। इसलिये राजाओं के रूप में इनकी संख्या कम होती चली गयी, लेकिन राज्य को स्थिर कर व्यवस्था का प्रमुख स्तम्भ इन्हीं लोगों के हाथ में रहा। राजनीति के क्षेत्र में यह सबसे बड़ा योगदान है।

हम इस आलेख में राजनीति के क्षेत्र में मारवाड़ी समाज के योगदान की बात कर रहे हैं, उसे अंग्रेजी काल की अवधि के योगदान की बात भारत की स्वतत्रंता के लिये किये गये संघर्ष में रही राजनैतिक हिस्सेदारी का विवरण प्रस्तुत करना है।

यहाँ मैं यह स्पष्ट कर दूँ कि मारवाड़ी शब्द का अर्थ केवल वैश्य समाज से नहीं है। मारवाड़ी ब्राह्मण हो या अन्य किसी जाति का, जैसे रंगरेज का काम करने वाला या नाई का काम करने वाला व्यक्ति, या किसी पेशे से जुड़ा हुआ हो, वह मारवाड़ी ही कहाया। मारवाड़ी शब्द एक संस्कार विशेष से जुड़ गया। संस्कृति का प्रतीक बन गया। शाकाहार, सात्विकता, सादगी व समरसता तथा समन्वय की क्षमता वाला क्षमाशील व्यापारी। ईमानदारी, उदारवृत्ति आदि इसकी प्रारम्भिक पहचान बनी। ये गुण राजनीतिक कुशलता के लक्षण माने जाते थे।

यह सर्वविदित है कि मारवाड़ी में अद्‌भुत सहनशीलता होती है, और अंग्रेजों के समय इसी गुण के कारण ये व्यापार व उद्योग के शीर्ष पर पहुँच गये। व्यापार का सीधा सम्बन्ध प्रशासन से होता है। इसलिये राज्य जिसका भी होगा व्यापारी हो या उद्योगपति, उसे 'राजा' से मिल कर चलना पड़ेगा। व्यापार ही क्यों यदि राजा अत्याचारी, शासक, दबंग होगा तो हर नागरिक को झुक कर चलना

पड़ेगा। कौन नहीं जानता कि सात समन्दर पार से आये अंग्रेजों ने जो दमन चक्र चलाया, उसके सभी वर्ग शिकार हुए लेकिन जब अन्याय व जुल्मो–सितम के विरुद्ध विद्रोह की टीस ने अंगड़ाई ली तो देश का कोई कोना बाकी नहीं रहा। बाल, लाल, पाल की त्रिवेणी अवतरित हुई। बाल अर्थात् बाल गंगाधर तिलक, लाल अर्थात लाला लाजपत राय और पाल अर्थात विपिनचन्द्र पाल। इनमें लाला लाजपत राय अग्रवाल समाज में उत्पन्न हुए। फिर शेष मारवाड़ी समाज कैसे पीछे रहता। अंग्रेजों ने पूरे भारत में लगभग डेढ़ सौ वर्षों तक राज किया। सन् १८५७ में खुला विद्रोह हुआ तो विद्रोह बढ़ता ही चला गया। बाल गंगाधर तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले, महात्मा गान्धी, लाला लाजपत राय, वीर सावरकर, भगत सिंह, सुभाष चन्द्र बोस जैसे राष्ट्र भक्तों ने एवं उनके साथ जिन महत्त्वपूर्ण लोगों ने स्वतन्त्रता संघर्ष यात्रा का पथ पकड़ा, ऐसे शूरवीरों की शृंखला में मारवाड़ी समाज के सैंकड़ों प्रमुख लोगों ने अपने जीवन की आहुति दी, कई विख्यात हैं। अनेकों के नाम मालूम नहीं हैं और अधिकांश अंधेरे की ओट में शहीद बन कर गुमनाम हो गये।

मारवाड़ी एसोसियेशन : १८८५ में कांग्रेस का जन्म हुआ जिसका राष्ट्रीय स्वरूप बना। देश भर में अंग्रेजों के विरुद्ध आक्रोश व्यक्त हो रहा था उसकी अन्तर्राष्ट्रीय पहचान बनी। अंग्रेजों ने राष्ट्रीय स्तर पर होने वाली एकता को तोड़ने का प्रयास किया और इसी क्रम में बंगाल में मारवाड़ी समाज का, जो विशेष रूप से उद्योग एवं व्यापार में अपना प्रभुत्व बढ़ाता जा रहा था, के साथ राजनैतिक भेदभाव किया जाने लगा। इसीके विरुद्ध १८९८ में मारवाड़ी एसोसियेशन नामक संगठन बना जो मारवाड़ी समाज के हितों का प्रहरी बना। इसने राजनैतिक लड़ाई लड़ी। आगे जाकर यह संस्था अपना अस्तित्व सुरक्षित नहीं रख पायी। यह तो नहीं कहा जा सकता कि इस संस्था के कई लोगों का अंग्रेजों के साथ ताल–मेल बन गया, लेकिन यह स्वरूप सामने आया कि इस संस्था से जुड़े कुछ लोगों का ध्यान अंग्रेजों से उपाधियाँ लेने में अधिक रहा। जैसे राय साहब, राय बहादुर, सर आदि। बदनाम होने पर यह संस्था समाप्त हो गयी। पुन: मारवाड़ी समाज को बंगाल में दोयम श्रेणी का नागरिक बनाये जाने का खतरा उत्पन्न हुआ तो इसका जोरदार विरोध हुआ। प्रतिक्रियास्वरूप १९३५ में रामदेव जी चोखानी की अध्यक्षता में अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना हुई। मारवाड़ी सम्मेलन ने अपने प्रारम्भिक काल से लेकर आज तक राजनैतिक चेतना और समाज सुधार के लिये अनेक संघर्ष किये। हम स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय में अ.भा.मारवाड़ी सम्मेलन के कार्यकर्त्ताओं द्वारा अंग्रेजों के विरुद्ध किये गये संघर्ष का मूल्यांकन किसी से कम नहीं मानते। उसीका प्रभाव बिहार के मारवाड़ी समाज पर पड़ा तथा राजनीति में समाज का अद्‌भुत योगदान रहा तथा १९४० में सशक्त बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना हुई।

जमनालाल बजाज : मैं यहाँ मारवाड़ी समाज के सबसे चर्चित नाम जमनालाल बजाज से प्रारम्भ करता हूँ। जमनालाल जी को शतप्रतिशत मारवाड़ी समाज के प्रतिनिधि के रूप में स्वतन्त्रता सेनानी कह सकते हैं। एक सीधे सादे, सज्जन प्रवृत्ति के चरम सीमा के ईमानदार, सम्पन्न, दानवीर मारवाड़ी व्यवसायी। अनेक गुणों से परिपूर्ण सन् १९१५ से ही आप राष्ट्रपिता महात्मा गांधी से प्रभावित हो उनके सम्पर्क में आये, और गांधीजी ने भी जमनालाल जी को भरपूर अपनत्व दिया, यहाँ तक कि गांधीजी के ५वें पुत्र के रूप में जमनालाल जी कहाये जाने लगे। बजाज जी ने विदेशी वस्त्रों की होली जलाने में गांधी के सत्याग्रह का नेतृत्व किया। बहुत बड़े उद्योगपति, सुकोमल शरीर, परन्तु न केवल स्वयं, अपनी पत्नी जानकी देवी को खद्दर के कपड़े पहनाये। जमनालाल जी के इस त्याग का प्रभाव यह पड़ा कि मारवाड़ी समाज के नवयुवकों तथा महिलाओं ने स्वतंत्रता के इस आन्दोलन में अपने को जोड़ लिया। यदि किसी राष्ट्रीय नेता की गिरफ्तारी होती तो मारवाड़ी समाज की संख्या वाले बाजार पहले बन्द होते थे।

२७ अगस्त १९३० में एक अंग्रेज अधिकारी ए.एच. गजनवी द्वारा तत्कालीन वायसराय के कार्यालय को एक निजी पत्र भेजा गया। उसमें उल्लेख किया कि यदि महात्मा गांधी के आन्दोलनों से मारवाड़ी समाज को अलग कर दिया जाय तथा बंगाल का आंदोलन केवल बंगाल वासियों के हाथ में छोड़ दिया जाय तो नब्बे प्रतिशत आंदोलन अपने आप ही समाप्त हो सकता है। गजनवी ने मारवाड़ी समाज के उन स्वतन्त्रता प्रेमियों की सूची भी भेजी जिन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध सहस्त्रों लोगों को जेल में डाल दिया, उनके घर का खर्च चलाने, आजादी के अवसर पर होने वाले व्यय का अधिकांश हिस्सा मारवाड़ी समाज के लोगों ने प्रदान किया। स्वयं भी जेल में गये। कई क्रान्तिकारी बने, कइयों को फांसी हुई।

गांधीजी ने जमनालाल जी की सहायता से दक्षिण में हिन्दी प्रचार के कार्य में सुविधा का अनुभव किया, अग्रवाल समाज को तथा मारवाड़ी समाज को संगठित कर उन्हें स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ा। श्री कृष्ण जाजू ने अपने को स्वतंत्रता के लिये समर्पित कर दिया। मुम्बई के श्री मदनलाल जालान जैसे सैंकड़ों मारवाड़ी कार्यकर्त्ताओं ने जेल भर दिया। साइमन कमीशन के विरोध में लाला लाजपत राय की पीठ पर इतनी लाठियाँ पड़ी कि अन्त में इसी पीड़ा से उनकी मृत्यु हो गयी।

बंगाल स्वतंत्रता संग्राम का प्रमुख केन्द्र बना हुआ था। १९३० के नमक सत्याग्रह में देश भर में मारवाड़ी समाज ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया।

बिहार में मारवाड़ी समाज की भूमिका : स्वतंत्रता संग्राम में रामकृष्ण डालमिया द्वारा दिये गये सहयोग से सब परिचित हैं। पूरे बिहार में चलने वाले कांग्रेस के अधिकांश व्यय का भार रामकृष्ण डालमिया ने उठाया। एक बार बिहार में कांग्रेस के खर्च को लेकर रामकृष्ण डालमिया और बिहार कांग्रेस के नेताओं में कोई विवाद हो गया तो जमनालाल बजाज ने समझौता करवाया। उस समय गांधी जी ने कहा "रामकृष्ण तुमने इलेक्सन का खर्चा देना स्वीकार करके मेरा बिहार का बोझ हल्का कर दिया।"

उपरोक्त एक उदाहरण से स्पष्ट हो जाता है कि बिहार के स्वतंत्रता

आन्दोलन में मारवाड़ी समाज का कितना बड़ा योगदान रहा है।

वस्तुत: बंगाल द्वारा चलाये जा रहे आन्दोलन में जो मारवाड़ी समाज की भूमिका रहती थी उसका प्रभाव बिहार के मारवाड़ी समाज पर पड़ता था। मारवाड़ी समाज की एक अन्य महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। अनेक प्रकाशनों तथा समाचार पत्रों के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम को आगे बढ़ाने का और स्वतत्रंता के पश्चात् देश को आगे बढ़ाने का। बिहार और बंगाल के मिलेजुले प्रयत्न होते थे। बिहार के सत्यपाल धवले जैसे अनेक बिहारी कार्यकर्त्ताओं का पूरा व्यय कलकत्ते का मारवाड़ी समाज उठाता था जो बंगाल व बिहार में राजनीतिक चेतना की कड़ी बने हुए थे।

बात १९५० की है जब मैं राजस्थान से मैट्रिक कर आगे की पढ़ाई करने कोलकाता जाकर बसा। दो वर्ष के भीतर वहां के मारवाड़ी समाज के सम्पर्क में आ गया। उस समय लगभग ८० वर्षीय श्री ओंकारमल जी सराफ गांधीजी के आह्वान पर कई बार जेल हो आये थे। उनकी गिनती अग्रणी स्वतत्रंता सेनानियों में आती थी। चित्तरंजन एवेन्यू में उनका मकान था।

''बंगाल के हिन्दी कवि'' नाम से प्रकाशित की जाने वाली पुस्तक के सन्दर्भ में पटना एवं देवघर आने का मुझे कई बार अवसर पड़ा। उस समय श्री मोतीलाल जी केजड़ीवाल की गिनती बिहार के वरिष्ठ स्वतत्रंता सेनानियों में होती थी।

१९३० के नमक सत्याग्रह में भाग लेने वाले कलकत्ता मारवाड़ी समाज के अग्रणी महानुभावों यथा सीताराम जी सेक्सरिया, बसन्त लाल मुरारका, राम कुमार भुवालका आदि के बारे में जानकारी हुई। बिहार के मुजफ्फरपुर में पैदा हुए ईश्वर दास जी जालान १९५२ में प्रथम बंगाल विधान सभा के अध्यक्ष बने। उस समय बड़ा बाजार जोड़ा बागान, जोड़ा सांकू की विधान सभाओं में मारवाड़ी समाज की जन संख्या कम नहीं थी। श्री आनन्दी लाल पोद्दार भी इन्हीं क्षेत्रों से विजयी होकर बंगाल विधान सभा में पहुँचे। ईश्वर दास जी जालान के बाद रामकृष्ण सरावगी विधायक बने। श्री सरावगी अ. भा.मारवाड़ी समाज के अध्यक्ष भी रहे जिन्होंने रांची अधिवेशन में पदभार ग्रहण किया था।

स्वामी करपात्री जी द्वारा देश में अनेक जगह राम राज्य परिषद की स्थापना की गई। परिषद की ओर से कलकत्ता के बड़े बाजार से बाबू लाल सराफ खड़े होते थे। बिहार में भी मारवाड़ी समाज के आर्थिक सहयोग से १९५२ की प्रथम विधान सभा में उस समय राम राज्य परिषद के ५ सदस्य निर्वाचित हुए। बिहार में भागलपुर क्षेत्र मारवाड़ी समाज का गढ़ है। यहाँ से सम्भवत: दूसरी लोकसभा के लिये श्री बनारसी दास झुनझुनवाला चुन कर गये। इसी तरह लोक सभा में चुन कर गये बांका से श्री बेणी शंकर शर्मा। जब वाजपेयी जी का मंत्रीमण्डल बना उस अवधि में चतरा से श्री धीरेन्द्र अग्रवाल लोक सभा से चुन कर गये। कलकत्ता में प्रभू दयाल जी हिम्मतसिंहका का नाम स्वतंत्रता संग्राम में घनश्याम दास जी बिड़ला के साथ आता था। लेकिन कलकत्ता तथा दुमका से वे दोनों बार लोक सभा सीट पर हार गये। बिहार विधानसभा में मारवाड़ी समाज की उपस्थिति ४–५ सदस्यों की अवश्य हो जाती है जो कम है फिर भी महाराष्ट्र विधान सभा के बराबर या कुछ अधिक हो जाती है।

१९५१ से १९५७ की अवधि में ही मैं राम राज्य परिषद से जुड़ा और मुझे १९५६ में मुम्बई के चौपाटी पर हुए अधिवेशन में अखिल भारतीय राम राज्य परिषद का प्रचार मंत्री चुना गया। देश की राजनीतिक पार्टियों में केवल राम राज्य परिषद ही ऐसा राजनैतिक दल था जिसने गौहत्या बन्दी को अपने चुनाव घोषणा पत्र का प्रमुख सूत्र रखा। दिल्ली तथा कलकत्ता में राम राज्य परिषद के संस्थापक स्वामी करपात्री जी द्वारा चलाये गये गौरक्षा आन्दोलन में मैं १९५४ में १५ नवम्बर को जवाहर लाल जी नेहरू की कोठी ३ मूर्ति भवन के समक्ष गिरफ्तार हुआ। सितम्बर १९५६ में कलकत्ता के प्रेसीडेन्सी जेल में बन्द हुआ, पुन: १९७१ में दिल्ली की तिहाड़ जेल में डेढ़ माह तक बन्दी रहा। बिहार के श्री सीताराम जी खेमका मुंगेर के रहने वाले थे, उन्होंने देश भर में राम राज्य परिषद को फैलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। राम राज्य परिषद एवं गौरक्षार्थ अहिंसात्मक धर्म युद्ध समिति के राष्ट्रीय महामंत्री बने। इसी तरह कलकत्ता के २९ स्ट्रेन्ड रोड के भागीरथ जी मोहता १९५२ में अ.भा. हिन्दु महा सभा के उपाध्यक्ष थे। जैसे घनश्याम दास जी बिड़ला कांग्रेस को आर्थिक मदद देने वालों में माने जाते रहे उसी तरह जुगल किशोर जी बिड़ला ने हिन्दु महा सभा को आगे बढ़ाने में सर्वाधिक सहयोग किया। जुगल किशोर जी बिड़ला ने न केवल अ.भा.हिन्दु महा सभा दिल्ली को संरक्षण दिया बल्कि पटना में सब्जी बाग में निर्मित बिड़ला मन्दिर में हिन्दु महा सभा के लिये स्थान प्रदान किया।

ऐसा नहीं है कि मारवाड़ी समाज केवल मध्यमार्गी अथवा दक्षिणपन्थी संस्थाओं से ही जुड़ा रहा। कलकत्ता में १९५१ में मेरे बड़े भ्राता बंशी लाल अग्रवाल ने कई बार कम्यूनिस्ट आन्दोलन में सम्मिलित होकर जेल यात्रायें की। सरला माहेश्वरी कम्युनिष्ट पार्टी की ओर से सांसद रही।

मुझे याद है कि कलकत्ता के सम्पन्न मारवाड़ी समाज द्वारा बिहार के राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं को जीवन निर्वाह के लिये अच्छी राशि दी जाती थी। सीतामढ़ी के श्री निरंजन खेमका १९४०, ४५ से हिन्दु महासभा के वरिष्ठ नेता थे। भाई हनुमान प्रसाद जी पोद्दार ने बम्बई और कलकत्ता में राजनीतिक चेतना संचारित करने का काम किया। १९४२ में अनेक मारवाड़ी अग्रणियों की भांति वे भी जेल गये।

मुझे स्वयं को राम राज्य परिषद, हिन्दु महासभा व जनसंघ के एकीकरण के सिलसिले में वाराणसी में १९५५ में रामराज्य परिषद के दो सांसदों के साथ हिन्दु महासभा के प्रधान मन्त्री श्री बी. जी. देशपाण्डे तथा जनसंघ के वरिष्ठ नेता दीन दयाल जी उपाध्यक्ष के साथ मन्त्रणा का अवसर मिला।

बेतिया के श्री रामकुमार जी झुनझुनवाला पूरे बिहार में स्वतन्त्रता संग्राम के दीप की लौ जलाये हुए थे। वे बिहार प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष भी थे। इतना ही नहीं १९१७ में जब गांधी जी ने बिहार की धरती से नील खेती के विरुद्ध प्रथम किसान आन्दोलन चलाया, तब मोतिहारी, बेतिया, रक्सौल व आस–पास के सैंकड़ों

मारवाड़ी नवयुवकों ने सत्याग्रह में भाग लिया। चाहे स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है आन्दोलन, चाहे अवज्ञा आन्दोलन, चाहे असहयोग आन्दोलन, चाहे नमक सत्याग्रह, चाहे विदेशी वस्त्र जलाओं आन्दोलन, चाहे भारत छोड़ो आन्दोलन—मारवाड़ी समाज विशेषकर बिहार का मारवाड़ी समाज सदैव आगे की पंक्ति में दिखायी पड़ता है। गांधी जी ने वर्ष १९१७ में चम्पारण के किसान आन्दोलन के समय इस क्षेत्र में ३—४ गौशालाओं की स्थापना की। उनका भार मारवाड़ी समाज ने उठाया। बेतिया, मोतीहारी, चकिया में स्थापित गौशालायें इसका प्रमाण हैं। गांधी जी द्वारा इन गौशालाओं में कहे गये वचन मारवाड़ी समाज को अपने कर्त्तव्य का स्मरण करा रहे हैं।

स्वतन्त्रता संग्राम में या बाद की राजनीति में मारवाड़ी समाज का बहुत बड़ा योगदान रहा है, तथापि यह कहना पड़ता है कि आज मारवाड़ी समाज यदि संगठित हो जाय तो बिहार की दो लोक सभा सीटों पर उसका क्लेम बनता है। यों राज्य सभा में भी मारवाड़ी समाज का योगदान रहता आया है, लेकिन राज्य सभा में जिन लोगों को प्राथमिकता मिलती है उनमें अर्थ की प्रधानता रहती है। वर्त्तमान सरकार के केन्द्रीय कम्पनी मन्त्री श्री प्रेम चन्द गुप्ता बिहार से ही राज्य सभा के सदस्य हैं। यों मैं व्यक्तिगत रूप में जातीय आधार पर टिकट दिलाने के पक्ष में नहीं हूँ, लेकिन बिहार में टिकट प्राप्ति में जातियों की प्रधानता रहती है इस स्थिति को समाप्त होना चाहिये।

यह कहते हुए हर्ष होता है कि १९५५ में बिहार विधान सभा में पहली बार अलग झारखण्ड राज्य की मांग करने वाले विधान पार्षद श्री जयदेव जी मारवाड़ी ही थे। उनकी मूर्ति झारखण्ड में लगायी जानी चाहिये।

मारवाड़ी समाज एक सशक्त राजनीतिक मंच बने, जो ईमानदार, अनुभवी व ज्ञानी युवा लोगों को आगे बढ़ाने का काम करे। यों बिहार के मारवाड़ी समाज का प्रदेश व देश की राजनीति में जो योगदान है उसे उजागर करने के लिये स्वतन्त्र रूप से प्रयत्न करने की जरूरत है। इसी कड़ी में हम यह कह सकते हैं कि डॉ. राम मनोहर लोहिया जो मारवाड़ी समाज में पैदा हुए, देश के सबसे बड़े मौलिक चिन्तक हुए। डॉ. लोहिया ने सबसे पहले बिहार में सरकार बनवायी। ऐसे महापुरुषों को, केवल मारवाड़ी समाज तक सीमित रखा जाना इनके साथ न्याय नहीं होगा।

१९५२ में तत्कालीन कांग्रेसी नेता व मारवाड़ी समाज के गौरव हीरा लालजी सराफ; वर्तमान में बि.प्रा. मारवाड़ी सम्मेलन के वरिष्ठ अग्रणी श्री गोपी कृष्ण सराफ के पिता बिहार में कदाचित सर्वप्रथम बिहार चैम्बर ऑफ कॉमर्स की ओर से विजयी होकर विधान सभा के मारवाड़ी विधायक चुने गये। बिहार में जनसंघ को बढ़ाने में श्री शंकर लाल बाजोरिया जैसे अनेक सुदृढ़ कार्यकर्त्ताओं का महत्त्वपूर्ण योगदान था। भागलपुर के ही सन्त लाल जी ने स्वतन्त्रता संग्राम में अनेक लाठियाँ खायी। भागलपुर के सीताराम किशोरपुरिया १९६७ में बिहार में मारवाड़ी विधायक बने १९७७ में सुगौली के मोहन लाल मोदी अपनी कर्मठता के आधार पर विधायक बने। मारवाड़ी समाज में महिलायें भी पीछे नहीं रही। कांग्रेस की ओर से राजकुमारी हिम्मतसिंहका दुमका की विधायक बनी। धनबाद जिला से सत्य नारायण दूधानी बिहार विधान सभा में कुछ अवधि तक विरोधी दल के नेता रहे। दरभंगा से श्री रमा वल्लभ जी जालान साम्यवादी दल की ओर से विधायक बने। बि.प्रा. मारवाड़ी सम्मेलन के भूतपूर्व अध्यक्ष तारा चन्द दारूका विधान पार्षद रहे। साहबगंज (संथाल परगना) से भाजपा की ओर से रघुनाथ सुडानी जी ने दो बार विधान सभा में प्रतिनिधित्व किया।

बिहार में जिन लोगों ने राजनीतिक क्षेत्र में विधायक या विधान पार्षद से ऊपर उठ कर मन्त्री तक का दायित्व सम्भाला उनमें बरहरवा के स्व. नथमल जी डोकानिया कैबिनेट व वारसोई के सोहन लाल जी राज्य स्तर के मन्त्री बने। श्री शारडा जी भी केबिनेट मन्त्री रहे। श्री शंकर प्रसाद टेकरीवाल मारवाड़ी समाज के ऐसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हैं जिन्हें स्वयं को पार्टी की जितनी आवश्यकता हुई उससे कम जरूरत पार्टियों को उनकी नहीं रही। शंकर बाबू ने कई बार बिहार सरकार के वित्त, खनन तथा परिवहन जैसे महत्त्वपूर्ण विभाग सम्भालें तथा राज्य के विकास में अहम भूमिका निभायी।

वर्त्तमान में भाजपा की ओर से निर्वाचित दरभंगा के युवा विधायक संजय सरावगी ने कुछ ही समय में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। कटिहार के विधान पार्षद मोहन लाल जी अग्रवाल एवं ठाकुरगंज के गोपाल अग्रवाल ओजस्वी विधायक हैं। अपने बलबूते पर स्वतन्त्र रूप से जीतने वाले प्रदीप जोशी मारवाड़ी विधायक हैं। और अन्त में हम नाम ले रहे हैं श्री सुशील कुमार मोदी जी का जो न केवल ४ बार से निरन्तर विधायक हैं बल्कि बिहार के उपमुख्य मंत्री हैं। बीच में आप सांसद भी बने। आपने यह उपलब्धि मारवाड़ी समाज में उत्पन्न होने से नहीं पायी, बल्कि बिहार के आम आदमी के संरक्षण व विकास के लिये अपने त्याग व सेवा के कारण पायी है। पर यह भी सत्य है कि मारवाड़ी समाज, संस्कारवश जो ईमानदार होता है कर्मठ होता है यथासम्भव निस्वार्थ होता है, भद्र मानुष होता है, इन गुणों ने मोदी जी को ऊँचा उठाने में बिहार के उपमुख्य मन्त्री पद तक पहुँचने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। आपको सत्ता के शीर्ष स्थान पर देखकर हमारा समाज ही नहीं बिहार के आम आदमी प्रसन्न हैं। इसलिये कि हम सभी इस प्रदेश के नागरिक हैं। इस प्रदेश की उन्नति में ही हम सबकी उन्नति है।◆

- १६, श्रीकुँज, बुद्धा कॉलोनी, पटना-८००००१
मोबाईल - ९३३४११६३३४

सम्मेलन के नये संरक्षक सदस्य

संरक्षक सदस्य संख्या – ०४९
नाम : रूँगटा प्रोजेक्ट्स लिमिटेड
प्रतिनिधि : श्री रामस्वरूप रूँगटा
पद : चेयरमैन
कार्यालय का पता :
''विकास भवन''
बरीआतू रोड, राँची–८३४००८
दूरभाष : ०६५१–२५४१८२७
मोबाईल : ०९४३११०३१४४
फैक्स : ०६५१–२५४७३३७
ई–मेल : rsr.ranchi@gmail.com
निवास का पता :
''पुष्पांजलि''
बरीआतू रोड, राँची–८३४००८

संरक्षक सदस्य संख्या – ०५०
नाम : बी.पी. मिनरल्स
प्रतिनिधि : श्री प्रमोद कुमार नेवटिया
पद : साझेदार
कार्यालय का पता :
''सुल्तानिया हाउस''
मधु बाजार, चाईबासा–८३३२०१ (झारखण्ड)
दूरभाष : ०६५८२–२५५१२४
मोबाईल : ०९४३१११०२२५
निवास का पता :
सुभाष चौक, दुँगरी,
चाईबासा–८३३२०१ (झारखण्ड)

संरक्षक सदस्य संख्या – ०५१
नाम : अरमेन प्रोपर्टीज प्रा. लिमिटेड
प्रतिनिधि : श्री नन्दकिशोर अग्रवाल
पद : निदेशक
कार्यालय का पता :
८३/१, डॉ. सुरेश चन्द्र बनर्जी रोड(B.M.Road)
कोलकाता – ७०० ०१०
दूरभाष : ०३३–३२४४०२०२
मोबाईल : ०९८३०१०६१६१
फैक्स : ०३३–२३२०७७२७
ई–मेल : shubhamgroups@gmail.com
निवास का पता :
''शुभम रेसिडेन्सी''
२ए, मोतीलाल बसाक लेन, काँकुरगाछी
कोलकाता–७०० ०५४

संरक्षक सदस्य संख्या – ०५२
नाम : माता दाधिमती मेटल्स एण्ड मिनरल्स
प्रतिनिधि : श्री राज कुमार दाधीच
पद : मालिकाना
कार्यालय का पता :
''एस.एन. शर्मा बिल्डिंग''
प्रथम तल्ला, मेन रोड, डेली मार्केट
राउरकेला–७६९००१ (उड़ीसा)
दूरभाष : ०६६१–२४२०७५५
मोबाईल : ०९४३७०४६८५५
फैक्स : ०६६१–२५००२९९
ई–मेल : matadadhimatimetals@yahoo.co.in
निवास का पता :
एएम–६९, बसन्ती कालोनी
राउरकेला–७६९०१२ (उड़ीसा)

संरक्षक सदस्य संख्या – ०५३
नाम : कमला डालमिया चेरिटेबल ट्रस्ट
प्रतिनिधि : श्री मधुसुदन डालमिया
पद :ट्रस्टी
कार्यालय का पता :
''आइडियल प्लाजा''
तृतीय तल, ११/१, शरत बोस रोड
कोलकाता–७०० ०२०
दूरभाष : ०३३–२२९०२१००
फैक्स : ०३३–२२८९६०६७
ई–मेल : msd@ssdsecurities.in
निवास का पता :
२/३, शरत बोस रोड
कोलकाता–७०० ०२०

संरक्षक सदस्य संख्या – ०५४
नाम : डालमिया जनकल्याण कोष
प्रतिनिधि : श्री नारायण प्रसाद डालमिया
पद : ट्रस्टी
कार्यालय का पता :
''आइडियल प्लाजा''
चतुर्थ तल, सूट नं.–एस ४०१
११/१, शरत बोस रोड, कोलकाता–७०० ०२०
दूरभाष : ०३३–६६१२०५००
मोबाईल : ०९८३१४६१०००
फैक्स : ०३३–२२८०६६४३
ई–मेल : npd@dalmiasec.com
निवास का पता :
२/३, शरत बोस रोड
कोलकाता–७०० ०२०

संरक्षक सदस्य संख्या – ०५५
नाम : आधुनिक मेटालिक्स लिमिटेड
प्रतिनिधि : श्री घनश्यामदास अग्रवाल
पद : निदेशक
कार्यालय का पता :
२/१ए, शरत बोस रोड, लैंस डाउन टावर
कोलकाता–७०० ०२०
दूरभाष : ०३३–३०५१७१००
मोबाईल : ०९८३११५९९१४
फैक्स : ०३३–२२८९०२८५
ई–मेल : gdagarwal@adhunikgroup.co.in

संरक्षक सदस्य संख्या – ०५६
नाम : रूपा एण्ड कम्पनी लिमिटेड
प्रतिनिधि : श्री प्रहलाद राय अग्रवाल
पद : प्रबंध निदेशक
कार्यालय का पता :
१, हो चि मिन्ह सारणी, मेट्रो टावर
८वां तल्ला, कोलकाता–७०० ०७१
दूरभाष : ०३३–३०५७२१००
मोबाईल : ०९८३००७९१११
फैक्स : ०३३–२२८८१३६२
ई–मेल : prahalad@rupa.co.in
निवास का पता :
आश्रय अपार्टमेन्ट, दूसरा तल्ला
१२, शनि पार्क, कोलकाता–७०० ०१९

सम्मेलन के नये संरक्षक सदस्य

संरक्षक सदस्य संख्या – ०५७
नाम : ए.एस.एल. इंटरप्राइजेज लिमिटेड
प्रतिनिधि : श्री दिलीप कुमार गोयल
पद : निदेशक
कार्यालय का पता :
एम–२(पी) सातवां फेज, इन्डस्ट्रीयल एरिया
आदित्यपुर, जमशेदपुर–८३१०१३
दूरभाष : ०६५७–२२००७८७/८
मोबाईल : ०९३३४५१०३२०
फैक्स : ०६५७–२२०१०६०
ई–मेल : dilipgoyal@aslgroup.biz
निवास का पता :
२, सी.एच. एरिया (ईस्ट)
जमशेदपुर–८३१००१

संरक्षक सदस्य संख्या – ०५८
नाम : रितेश ट्रेडफिन लिमिटेड
प्रतिनिधि : श्री शंकर लाल अग्रवाल
पद : प्रबंध निदेशक
कार्यालय का पता :
लेनिन सरणी, दुर्गापुर–७१३२१० (प.बंगाल)
दूरभाष : ०३४३–२५५३५१८
मोबाईल : ०९८३२१५०४४८
फैक्स : ०३४३–२५५४४४२
ई–मेल : mbispat_rtf@rediffmail.com
निवास का पता :
शांति कुँज
बी.एन–१, बाघा जतीन सरणी, विधान नगर
दुर्गापुर – ७१३२१२

संरक्षक सदस्य संख्या – ०५९
नाम : गणपति इंडस्ट्रीयल प्रा.लिमिटेड
प्रतिनिधि : श्री भगवती प्रसाद जालान
पद : चेयरमैन
कार्यालय का पता :
२, हेयर स्ट्रीट, (निक्को हाउस)
तीसरा तल्ला, कोलकाता – ७०० ००१
दूरभाष : ०३३–२२४८४७७२
मोबाईल : ०९३३९४९३४३३
फैक्स : ०३३–२२४८१८७७
निवास का पता :
२/१ए, वर्दमान रोड
दूसरी मंजिल, कोलकाता (प.बंगाल)

संरक्षक सदस्य संख्या – ०६०
नाम : कॉनकास्ट बंगाल इंडस्ट्रीज लिमिटेड
प्रतिनिधि : श्री संजय सुरेका
पद : निदेशक
कार्यालय का पता :
२१, हेमन्त बसु सरणी
पाचवां तल्ला, कोलकाता – ७०० ००१
दूरभाष : ०३३–२२१३०४८१/८७
फैक्स : ०३३–२२१३०४८८

संरक्षक सदस्य संख्या – ०६१
नाम : मेसर्स इस्टर्न जोन सिंडिकेट
प्रतिनिधि : श्री प्रमोद कुमार शर्मा
पद : साझेदार
कार्यालय का पता :
अम्लाटोला, चाईबासा, प. सिंहभूम
दूरभाष : ०६५८२–२५६५४०
मोबाईल : ०९४३११३३२०८
फैक्स : ०६५८२–२५६५४०

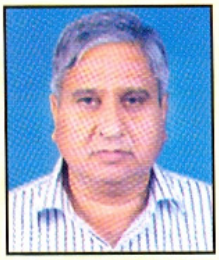

संरक्षक सदस्य संख्या – ०६२
नाम : मेसर्स ब्रह्म (एलौयज) प्रा.लि.
प्रतिनिधि : श्री बजरंग लाल मित्तल
पद : सी.एम.डी.
कार्यालय का पता :
२५बी, कैमेक स्ट्रीट, ६बी, कैमेक कोर्ट
कोलकाता – ७०० ०१६
दूरभाष : ०३३–२२८३३४२१/२२
मोबाईल : ०९८३१२७६४५६
फैक्स : ०३३–२२८३३४२१/२२
ई–मेल : mittal_m@rediffmail.com
निवास का पता :
सी.ए.–५५, सेक्टर–१
साल्ट लेक सिटी, कोलकाता – ७०० ०६४

संरक्षक सदस्य संख्या – ०६३
नाम : जगदीश चेरिटेबल ट्रस्ट
प्रतिनिधि : श्री जगदीश चन्द्र अग्रवाल
पद : ट्रस्टी
कार्यालय का पता :
५४०, मार्शल हाउस
३३/१, नेताजी सुभाष रोड, कोलकाता–७०० ००१
दूरभाष : ०३३–२२१३१८४५/२२३००५८२
मोबाईल : ०९८३००३१८२८
फैक्स : ०३३–६६१४१२३७
ई–मेल : pratapjc@cal2.vsnl.net.in

संरक्षक सदस्य संख्या – ०६४
नाम : गुप्ता पावर इन्फ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड
प्रतिनिधि : श्री भगत राम गुप्ता
पद : चेयरमैन
कार्यालय का पता :
कटक पुरी रोड, भुवनेश्वर – ७५१००६
दूरभाष : ०६७४–२३१३८९८/२३१३९४५
फैक्स : ०६७४–२३१२९४५

सम्मेलन के नये संरक्षक सदस्य

संरक्षक सदस्य संख्या – ०६५
नाम : बागड़िया ब्रदर्स प्राइवेट लिमिटेड
प्रतिनिधि : श्री आनन्द कुमार अग्रवाल
पद : निदेशक
कार्यालय का पता :
बागड़िया मेंशन, जवाहर नगर
रायपुर–४९२००१ (छत्तीसगढ़)
दूरभाष : ०७७१–४०४१९९९/४०३०४३४
मोबाईल : ०९४२५२०३४८८
फैक्स : ०७७१–२२३४६३२
ई–मेल : anand@bagadiabros.com

संरक्षक सदस्य संख्या – ०६६
नाम : गंधमार्धन स्पंज इन्डस्ट्रीज प्रा.लि.
प्रतिनिधि : श्री मदनलाल अग्रवाल
पद : प्रबंध निदेशक
कार्यालय का पता :
हरीपुर रोड, कटक–७५३००१
दूरभाष : ०६७१–२४२३२२१/२४२३४६१
मोबाईल : ०९८३१५०१८६०
फैक्स : ०६७१–२४२५९३१
ई–मेल : shreejagannath@hotmail.com
निवास का पता :
हरिपुर रोड, कटक–७५३००१

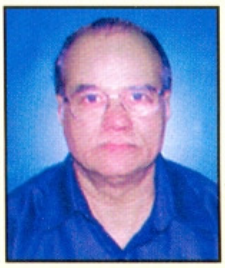

संरक्षक सदस्य संख्या – ०६७
नाम : उदितवाणी
प्रतिनिधि : श्री राधेश्याम अग्रवाल
पद : स्वामी एवं सम्पादक
कार्यालय का पता :
जुगसलाई, जमशेदपुर–८३१००६, सिंहभूम (झारखण्ड)
दूरभाष : ०६५७–२२९१६७२/२२९१६७७
मोबाईल : ०९४३१३०१३५४
फैक्स : ०६५७–२२९१६७४
ई–मेल : rsa.uditvani@gmail.com
निवास का पता :
वार्ड सं.–८, मकान सं.–१२
मेन रोड, जुगसलाई
जमशेदपुर–८३१००६ (झारखण्ड)

संरक्षक सदस्य संख्या – ०६८
नाम : सिंडिकेट ज्वेलर्स प्राईवेट लिमिटेड
प्रतिनिधि : श्री राजेन्द्र तोसावड
पद : निदेशक
कार्यालय का पता :
२२, कैमेक स्ट्रीट, ब्लाक–ए
प्रथम तल्ला, कोलकाता – ७०० ०१६
दूरभाष : ०३३–२२८१३५९६/४१३७
मोबाईल : ०९८३००७७१२०
फैक्स : ०३३–२२८१३५९६
ई–मेल : syndicate_int@yahoo.co.in
निवास का पता :
एफ.ई.–१८२
साल्ट लेक सिटी, कोलकाता–७००१०६

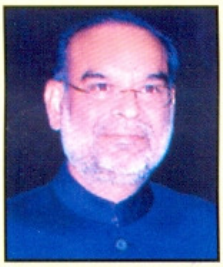

संरक्षक सदस्य संख्या – ०६९
नाम : सारडा एनर्जी एंड मिनरल्स लिमिटेड
प्रतिनिधि : श्री कमल किशोर सारडा
पद : सी.एम.डी.
कार्यालय का पता :
इन्डस्ट्रीयल गोर्थ सेटर, फेस–१
सिलतरा, रायपुर – ४९३१११ (छत्तीसगढ़)
दूरभाष : ०७७२१–२६४२०४/०९
मोबाईल : ०९७५२०९९९९९
फैक्स : ०७७२१–२६४२१३/१४
ई–मेल : kksarda@seml.co.in
निवास का पता :
'अनुग्रह'
१८/१९, अनुपम नगर
पो. शंकर नगर, रायपुर (छत्तीसगढ़)

संरक्षक सदस्य संख्या – ०७०
नाम : राधाकिशन झुनझुनवाला चेरिटेबल ट्रस्ट
प्रतिनिधि : श्री रामनाथ झुनझुनवाला
पद : ट्रस्टी
कार्यालय का पता :
४, क्लाइड रो, हेस्टींग
कोलकाता – ७०० ०२२
दूरभाष : ०३३–२२२३०३७६/७७
फैक्स : ०३३–२२२३०२९७
ई–मेल : rashtra@vsnl.com

संरक्षक सदस्य संख्या – ०७१
नाम : माइक्रोसेक फाइनानसियल सर्विसेज लि.
प्रतिनिधि : श्री बरवारीलाल मित्तल
पद : चेयरमैन
कार्यालय का पता :
अजीमगंज हाउस, ७, कैमेक स्ट्रीट
दूसरा तल्ला, कोलकाता–७०० ०१७
दूरभाष : ०३३–२२८२९३३०
मोबाईल : ०९८३००६१४९०
फैक्स : ०३३–२२८२९३३५
ई–मेल : blmittal@microsec.in

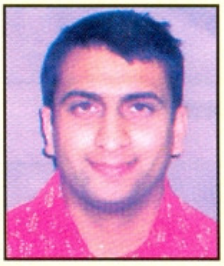

संरक्षक सदस्य संख्या – ०७२
नाम : बी. एस. स्पॉज प्रा.लि.
प्रतिनिधि : श्री आशिष अग्रवाल
पद : निदेशक
कार्यालय का पता :
ताराइमल, रायगढ़, छत्तीसगढ़
दूरभाष : ०७७६२–२२९७८२/२२९७८१
मोबाईल : ०९८३००६३१७८
फैक्स : ०७७६२–२२९७८२
ई–मेल : bsspongepl@gmail.com
निवास का पता :
११, बालिगंज पार्क रोड
कोलकाता – ७०० ०१९

Comprehensive and Exclusive

Business Economics

... Truly reflecting global aspirations!

Subscribe Now

BOOKS WISHLIST

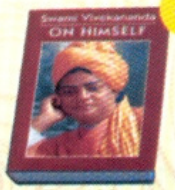

1 Rs. 395 · 2 Rs. 150 · 3 Rs. 295 · 4 Rs. 100 · 5 Rs. 195 · 6 Rs. 195 · 7 Rs. 70 · 8 Rs. 199 · 9 Rs. 100 · 10 Rs. 225

Business Economics Subscription Form

Yes! I would like to subscribe Business Economics

Tick	Term	No. of Issues	News Stand Price	You Pay	You Save	Free Gift Value	Total Savings	USD	Tick your choice (s)
☐	3 Years	72	1080/-	900/-	180/-	650/-	830/-	70	1 ☐ 2 ☐ 3 ☐ 4 ☐ 5 ☐ 6 ☐ 7 ☐ 8 ☐ 9 ☐ 10 ☐
☐	1 Year	24	360/-	325/-	35/-	250/-	285/-	25	

Name : Mr./Ms. ....

Address : ....

.... City/District : ....

State : .... Country : .... Pin Code : ☐☐☐☐☐☐

E-mail : .... Mobile : .... Landline : .... STD CODE

REMITTANCE DETAILS :

Enclosed Cheque / DD No. .... dated: .... for Rs. .... drawn on: ....

In favour of **CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED**

Signature: .... Date: ....

Mail your Cheque / DD to : Mr. Pramod Kr. Singh, General Manager, **Business Economics**, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022
Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93395 19642, E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

For Subscription enquiries contact :
Kolkata : Ms. Sumita Agarwal : 033 2223-0368 • **Mumbai :** Rajendra Singh : 93208 73700
Chennai : Mr. P. Pandiaraj : 94441 14277 • **New Delhi :** Vijay Pahuja : 20250414 • **Kohima :** Povotso Lohe : 94360 00860

सम्मेलन के नये आजीवन सदस्यों का स्वागत

नाम : श्री कृष्ण कुमार लोढ़ा
कार्यालय का पता :
एम–६६,
बसंती कालोनी, सुन्दरगढ़
राउरकेला–७६९०१२, उड़ीसा
मोबाइल नं.–०९४३७०४२६११

नाम : श्री संजय कानोडिया
कार्यालय का पता :
३१३/३१९, सामुल स्ट्रीट
२२, हरेश चेम्बर्स, पांचवा तल
पश्चिम मस्जिद, मुम्बई–४०००००३
दूरभाष नं.–०२२–२४९६८८३३

नाम : श्री रामअवतार शर्मा
कार्यालय का पता :
गणेश भवन धर्मशाला के पास
पो.–जोड़ा,
क्योंझर–७५८०३४ (उड़ीसा)
मोबाइल नं.–०९४३७००७६३४

नाम : श्री घनश्याम शर्मा
कार्यालय का पता :
कनकधारा माइनिंग एण्ड मिनरल्स प्रा.लि.
पोस्ट–बड़बिल
क्योंझर–७५८०३५ (उड़ीसा)
मोबाइल नं.–०९४३७०७५८३७

नाम : श्री महेश कुमार ओझा
कार्यालय का पता :
महेश कुमार ओझा
पोस्ट–बड़बिल
क्योंझर–७५८०३५ (उड़ीसा)
मोबाइल नं.–०९९३७५९९७२१

नाम : श्री श्याम सुन्दर शर्मा
कार्यालय का पता :
श्याम सुन्दर शर्मा–एल.आई.सी.आफिस
के सामने, सुन्दरबस्ती, वार्ड नं.–१५
बड़बिल, क्योंझर–७५८०३५ (उड़ीसा)
मोबाइल नं.–०९४३७२५२८००

नाम : श्री हेमन्त ओझा
कार्यालय का पता :
मेसर्स– एम.एल. रूँगटा,
AT/PO-सिलजोड़ा, वाया जोड़ा,
क्योंझर–७५८०३४ (उड़ीसा)
मोबाइल नं.–०९४३७१४५७३६

नाम : श्री विनय कुमार अग्रवाल
कार्यालय का पता :
३, दीपू जायसवाल कॉम्पलेक्स
हुडीसाही, जोड़ा
क्योंझर–७५८०३४ (उड़ीसा)
मोबाइल नं.–०९४३७००४६२८

नाम : श्री मोहन कुमार चौधरी
कार्यालय का पता :
मेसर्स– एम. एल. रूँगटा
AT/PO-सिलजोड़ा, वाया जोड़ा,
क्योंझर–७५८०३४ (उड़ीसा)
मोबाइल नं.–०९४३७७८६६७५

नाम : श्री सुशील कुमार ओझा
कार्यालय का पता :
मेसर्स–अन्नपूर्णा इंटरप्राइजेज
बड़बिल,
क्योंझर–७५८०३५ (उड़ीसा)
मोबाइल नं.–०९४३७७५००४३

नाम : श्री श्याम सुन्दर सोनी
कार्यालय का पता :
मेसर्स– टैगिल्स रीटेल लिमिटेड
बी–८, सेक्टर–६३
नोयडा–२०१३०१, उत्तर प्रदेश
मोबाइल नं.–०९८४११२४५०

नाम : श्री ओम प्रकाश रूँगटा
कार्यालय का पता :
फूलचन्द साँवरमल
मधुबाजार
चाईबासा–८३३२०१ (झारखंड)
मोबाइल नं.–०९२०४०७०१२४

सम्मेलन के नये आजीवन सदस्यों का स्वागत

नाम : **श्री विजय कुमार ओझा**
कार्यालय का पता :
बड़ाजामदा
सिंहभूम, प. झारखण्ड
मोबाइल नं.—०९४३१९६२१२९
०९४३७०१७८३२

नाम : **श्री किशनलाल चिरानिया**
कार्यालय का पता :
आनन्द स्टील सेन्टर, सादर बाजार
चाईबासा—८३३२०१, प. सिंहभूम
झारखण्ड
मोबाइल नं.—०९२०४६२९०५१

नाम : **श्री शिवभगवान पटवारी**
कार्यालय का पता :
शिवभगवान पटवारी C/o. एन.एल. रूँगटा
At/Po. सिलजोड़ा
क्योंझर — ७५८०३४, उड़ीसा
मोबाइल नं.—०९४३७१४९८०२

नाम : **श्री अरूण कुमार माहेश्वरी**
कार्यालय का पता :
त्रिवियम इण्डिया सोफ्टवेयर प्रा.लि.
निरमला अरकेड, दूसरा तल्ला
७८०/८० फैक्ट रोड, करमंगला—५६००३४
बंगलोर, मोबाइल नं. ०९८०[illegible]

नाम : **श्री कमलसिंह भंसाली**
कार्यालय का पता :
७५, नेताजी सुभाष रोड
कोलकाता — ७०० ००१
मोबाइल नं.—०९३३९८६२०६७

नाम : **श्री विवेक गोयनका**
कार्यालय का पता :
मेसर्स— महावीर ट्रेडर्स
३७, अरमेनियम स्ट्रीट,
निचला तल, कोलकाता—७००००१
मोबाइल नं.—०९८३१११०७७१

नाम : **श्री सिद्धगोपाल अग्रवाल**
कार्यालय का पता :
जगदम्बा कॉमर्सियल एजेंसी, निमडीह
पो.आ. चाईबासा
प. सिंहभूम—८३३२०१
मोबाइल नं.—०९४३११३३२१६

नाम : **श्री मदनलाल अग्रवाल**
कार्यालय का पता :
जगदम्बा कॉमर्सियल एजेंसी, निमडीह
पो.आ. चाईबासा
प. सिंहभूम—८३३२०१
मोबाइल नं.—०९४३१९३२७३१

सम्मेलन के नये विशिष्ट सदस्यों का स्वागत

नाम : **श्री बजरंगलाल डींडवानिया**
कार्यालय का पता :
लपसीबाबा सर्विस स्टेशन
सदर बाजार
चाम्पा—४९५६७१, छत्तीसगढ़
मोबाइल नं.—०९४[illegible]

नाम : **श्री अरुण कुमार अग्रवाल**
कार्यालय का पता :
मेसर्स— राधा ट्रेडिंग कॉरपोरेशन
१८/१, महर्षि देवेन्द्र रोड, रू.न.—९०
छठवां तल्ला, कोलकाता—७००००७
मोबाइल नं.—०९३३०१४२९११

नाम : **श्री सुरेश कुमार मुरारका**
कार्यालय का पता :
श्रीकान्त वर्मा मार्ग
सोनी शोरूम के पास
केश केमिस्ट, बिलासपुर—४९५००१
मोबाइल नं.—०९३२९२९९६६३

नाम : **श्री विनोद कुमार डुग्गर**
कार्यालय का पता :
भीकेडी इंटरप्राइजेज प्रा.लि.
४१, चौरंगी रोड, दूसरा तल्ला
कोलकाता — ७०० ०७१
मोबाइल नं.—०९८३००२४४४४

हास्य कहानी :

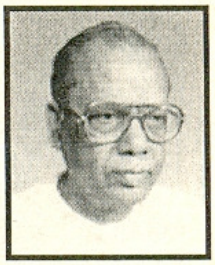

थोक में लाना और खुदरा में बेचना

:: नथमल केडिया, साहित्य महोपाध्याय ::

राजस्थान प्रदेश में राजपूत जाति के लोग बहुत अक्खड़ स्वभाव के होते हैं। चलती पून (पवन) से लड़ाई करना उनका स्वभाव है। मिनटों में सिर फुड़ोबल तथा मरने–मारने को तैयार। वैसे जबान के एकदम पक्के, जो मुँह से बोल दिया वह लोहे की लकीर। पर जल्दी से कोई क्यों उलझे इसलिये बनिये आदि उनसे व्यवहार करने में कतराते है। हाँ तो एक बार जंगल में एक राजपूत तथा एक बनिया साथ–साथ जा रहे थे। वे एक दूसरे से थोड़े बहुत परिचित तो पहले से थे और रास्ता आपस में परिचय को बहुत जल्द पनपा भी देता है। इसलिये आपस में बातचीत शुरु हो गई।

एकाएक राजपूत सज्जन बोले–देखो वह जो बहुत दूर पर पेड़ दिखाई देता है, रास्ते के दाँयी ओर बड़ा–सा घेर घुमेरदार, वह पीपल का पेड़ है। बणिये ने स्वाभाविक रूप से ही कह दिया–नहीं, ठाकर साब! वह तो बड़ का पेड़ है। पर राजपूत को यह कहाँ गवारा था कि वे कोई बात बोले और दूसरा उसको काटे। वे थोड़ी अक्खड़ आवाज में बोले–मेरे हिसाब से तो वह पीपल का पेड़ है पर इधर बनिये को स्पष्ट दिखाई दे रहा था कि पेड़ बड़ का है। उसने भी कह दिया–नहीं यह बड़ का पेड़ है। बस इतनी–सी बात हुई कि राजपूत सज्जन तेश में आकर बोले–देख! यदि पीपल का पेड़ हुआ तो मैं तुम्हारी गरदन उतार लूँगा और बड़ का निकला तो तुम मेरी गरदन उतार लेना। बेचारे बनिये ने ऐसी शर्त कभी तीन पुश्त में नहीं की थी पर उसके आगे सिवाय हाँ भरने के कोई चारा नहीं था। उसको मंजूरी देनी पड़ी। और वे जब पेड़ के पास आये तो वह पेड़ बड़ का निकला। तब राजपूत ने कहा–सेठ! मैं होड़ (शर्त) हार गया। यह लो मेरी तलवार और मेरी नाड़ काट लो। पर बनिये बेचारे को कहाँ किसी का सिर काटना था उसने कहा–ठाकराँ! मुझे तो आपका सिर काटना नहीं है। आप राजी खुशी घर जायें। पर उस राजपूत ने कहा–देखो! जो होड़ हुई है वह पक्की है। अब तुम मेरा सिर नहीं काटते हो तो कोई बात नहीं है पर अब से मेरे गले का ऊपर का सब हिस्सा तुम्हारा हो गया। यह तुम्हारी अमानत मेरे पास है। बनिये बेचारे ने हाँमी भर ली और अपना पिण्ड छुड़ाया।

पर महीना भर भी नहीं बीता होगा कि उसे पता चला कि उसका पिण्ड कहाँ छूटा है? वह तो और ज्यादा शिकंजे में कस गया है। उस दिन उसने अपनी दुकान खोली ही थी और बोहनी के लिये ग्राहक की बाट जोह रहा था, ये महाशय ऊँट पर चढ़े हुए पहुँचे। खूब बढ़िया तेल फुलेल लगाये हुए तथा सिर पर कीमती साफा (पग्गड़) पहने हुए थे। आकर दुकान पर शान से बैठ गये। बणिये ने जब उनकी ओर देख कर जिज्ञासा की तो गरजती सी आवाज में बोले–सेठ बताओ, यह मुंड (गले के ऊपर का हिस्सा) मेरा है या तुम्हारा? तब बनिये के ध्यान में आया कि यह जंगल में होड़ में हारा वही राजपूत है। बिचारा, हिचकिचाते हुए बोला–मेरा! सुनकर ठाकर बोला–तो इसको साफ सुथरा रखने में इतने का साबुन लगा इतने का तेल–फुलेल लगा और कंघी चोटी में इतना लगा, कुल ८०/– रुपये लगे सो दो। सेठ बिचारा क्या करे यदि ना–नू करे तो अभी यहाँ सीन खड़ा कर दे। गल्ले से चुपचाप ८०/– रुपये निकाल कर दे दिये।

अब महीना सवा महीना बीतते न बीतते राजपूत महाशय सेठ की दुकान पर आ बिराजे और मूंड को खिलाने–पिलाने, रख–रखाव के ८०/– – १००/– ले जाय। सेठ बिचारा इससे छुटकारा कैसे मिले इस चिन्ता में घुलकर आधा रह गया। इस तरह छह–आठ महीने बीत गये। बार–बार ठाकर का आना सेठ के पड़ोसी दुकानदार भी देख रहे थे और ताज्जुब करते थे कि क्या बात है? यह ठाकर–ठाठ से ऊँट पर आता है और मूँछों पर ताव देते हुए घड़ी आध घड़ी में लौट जाता है। एक दिन उनमें से एक ने सेठ से पूछा–भाइजी! मुझे पूछना तो नहीं चाहिये पर आपने इससे कोई रकम उधार ले रखी है क्या? सेठ ने माथे पर हाथ रखते हुए अपनी सारी पीड़ा खोल कर बताई। सुनकर पहले तो पड़ोसी दुकानदार सोच में डूब गया पर दो–चार दिन के बाद ही दोनों ने कानों कान सलाह मशविरा किया। उस दिन पहली बार इस सेठ के मुँह पर कुछ मुस्कान नजर आई। हाँ तो अपने समय पर राजपूत महोदय को तो आना ही था। सदा की तरह आकर बड़े रोब से ऊँट से उतरे और दुकान के गद्दे पर बैठ गये और अपना डॉयलाग बोलना चालू किया पर आज सेठ ने कहा–ठाकराँ! अभी जल्दी क्या है? आये हैं तो बैठिये। हमारे इस मूंड को जल व चिलम तम्बाकू पिलाइये फिर इतमिनान से ले जाइयेगा। और उनको बैठे आठ दस मिनट ही हुई होंगी कि बगलवाला दुकानदार आया और बोला–भाइसाहब! आज एक ग्राहक अजीब चीज माँग रहा है। दाम भी आकरा (बहुत अच्छा) देने को तैयार है। मुझे तो नहीं पता यह कैसे–कहाँ मिलेगा? मैंने कहा–मेरे पास नहीं है तो बोला–मुझे अरजेन्ट चाहिये कहीं से भी जोगाड़ कर के ला दो। सेठ ने पूछा–क्या चीज? तो संकोचवश सेठ के कान में बताया पर सेठ जोर से बोला–यह तो मैं ही दे सकता हूँ पर २००/– लगेंगे। दुकानदार १५०/– देने पर राजी हुआ। आखिर में १७५/– में सौदा पटा। फिर इस बनिये ने राजपूत महोदय की ओर मुखातिब होकर कहा–ठाकराँ यह मूंड मेरा है कि आपका? ठाकर ने कहा–आपका। इसीलिए तो रख–रखाव में ९०/– लगे वे लेने आया हूँ। वे इतनी बात कर रहे थे कि अगल–बगल के दो–चार लोग और आ गये और बात सुनने लगे। अब इस बनिये ने बगल की दुकानवाले से कहा–आपको एक कान चाहिये तो? उसने कहा–हाँ। उसके हाँ बोलने के साथ उसे छुरी देते हुए कहा–इस ठाकर का एक कान काट कर ले जाओ और १७५/– नगदी रख जाओ। अब ठाकर की चमकने की बारी थी, बोला–यह क्या? बात पूरी की पूरी मूंडी काटने की थी। सेठ बोला–ठाकराँ हम तो दुकानदार हैं। हमलोग बोरे के बोरे चीजों के थोक में खरीदते हैं और सेर–आध सेर, पाव, खुदरा में बिक्री करते हैं। आज एक कान का ग्राहक आया है तो उसे कान दे देवेंगे, कल यदि नाक का ग्राहक आया तो उसको नाक दे देंगे। भगवान करे कोई आँख का ग्राहक मिल जावेगा तो इस मूंड का बहुत अच्छा दाम मिल जावेगा। इतनी बात बोलते–बोलते उस दुकानदार की ओर देखकर बोला–देखते क्या हो मैं कहता हूँ ना एक कान काट कर ले जाओ और रोकड़ी १७५/– रुपये रख जाओ। अब ठाकर हाय तोबा करने लगा। कुछ देर में गिड़गिड़ाने लगा। आखिर में लोगों ने बीच–बचाव किया और ठाकर को अपना २०००/– रुपये की कीमत का ऊँट देकर सेटलमेन्ट करना पड़ा।◆

-४ए, शम्भूनाथ पण्डित स्ट्रीट, कोलकाता-२०
मो. - ९३३९०४२८२७

IISD

SREI Foundation

A Gateway to Careers

FOR GRADUATES
THE ULTIMATE PROFESSIONAL EDGE

MBA

CONVENIENT
WEEKEND CLASSES
AVAILABLE

EXCELLENT OPPORTUNITY FOR MASTER DEGREE IN MANAGEMENT WHILE WORKING IN OWN CAREER.

Specialisations offered

- Marketing
- Finance
- Human Resource Management
- Information Technology

Facilities :

- Most Convenient and well-connected location in Salt Lake, next to the Eastern Zonal Cultural Centre.
- State of the art Infrastructure.
- AC Class Rooms.
- Computer Laboratory with Broad Band Facility.
- Eminent Highly Qualified and Experienced Faculty.
- Intensive Teaching Learning Environment.
- Self-instructional Study Materials for all Subjects.
- Tutorials, Personalized Coaching, Seminars and Workshops.
- Corporate Interface and Guest Lectures by Experts.
- Soft Skills, Interview Training and Mock Test.
- Modern Library.
- Convenient Class Timings and Weekend Classes.
- Cafeteria Facility.
- Best Affordable Fees.
- 10% Discount for SC / ST / OBC and Defence Ward Candidates.
- Stipend / Loans available

Degree Conferred by Punjab Technical University Approved By UGC, Ministry of HRD, GoI, and DEC.

INSTITUTE FOR INSPIRATION & SELF DEVELOPMENT

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata 700 106

Ph.: 2335 2378/2861, Fax: 2335 2379

E-Mail: iisdedu@rediffmail.com, Website : www.iisdindia.in

कहानी :

अपना मुकद्दमा वापस लेती हूँ....

- शम्भु चौधरी ,कोलकाता

अरे...आप चिन्ता मत किजिए....एक ठाहके के बीच ही वकील सा'ब ने अपने मुवक्किल जो गाँव के मुखिया भी हैं को कहा. ....आपके लड़के को कोई सजा नहीं होगी।

''जी....जी... पर...आप तो जानते ही हैं कि अगले साल चुनाव है. .. पार्टी ने मुझे चुनाव लड़ने को कहा है... इस मामले में लड़के को सजा हो गई तो मेरी इज़्ज़त ही सारी मिट्टी में मिल जायेगी.. .. बीच में ही मुखिया जी बोल पड़े।''

''अरे सा'ब आप बस देखते जाईये....वकील सा'ब ने पुन: मुखिया जी को ढाढ़स बंधाया।''

एक ठहाका.....

फिर बोले... ''ये तो आपके लड़के ने एक ही लड़की की इज़्ज़त लूटी है.. मुखिया जी...गाँव का कन्हैया है... पूरे गाँव की लड़कियों की भी... समझ रहे हैं न मैं क्या कहना चाह रहा हूँ...आप चिन्ता न करें .. फिर थोड़ा रुककर...मुखिया जी का लड़का है.. शौक भी तो मुखिया जैसे ही होने चाहिये।''.. ठहाका.....

''आप निश्चिंत रहें आपका काम हो जायेगा। एक लड़की की इज़्ज़त से ज्यादा जरूरी है आपकी इज़्ज़त को बचाना... आखिर आप हमारे गाँव के मुखिया भी तो हैं....वकील सा'ब ने यह बात कह कर मुखिया जी के दिल को मजबूत आधार प्रदान कर दिया''

हाँ ! सो तो है...मुखिया जी ने वकील सा'ब से सहमति जताते हुए कहा– ''आप भी चिन्ता न करें बस किसी तरह हमारी इज़्ज़त को बचा लीजिये...आपको....गाँव की तिजौरी संभला दूँगा।''

हूँ.... सो तो ठीक है.. पर आप तो जानते ही हैं... मामला पेचीदा बनता जा रहा है...आपने सुना नहीं कि कल किस तरह पत्रकारों ने कुत्ते की तरह पीछा किया था... बार–बार पुछ रहे थे.. कि मैं इस मामले की पैरवी क्यों कर रहा हूँ।

''बीच में ही टोकते हुए मुखिया जी ने पुछा.. फिर आपने क्या कहा उनको...'' – कहना क्या था वकील हूँ मेरा पेशा है अपने मुवक्किल की पैरवी करना.. जब तक अपराध साबित नहीं हो जाता, कानून की नजर में कोई अपराधी नहीं है।.. मुखिया जी का लड़का तो निर्दोष है बेचारे को फंसाया गया है।....''

''फिर वे लोग (पत्रकार) पूछने लगे...कि वो जो मेडिकल रिपोर्ट है....?''

पास टेबल पर पड़े पानी के गिलास को उठाकर पानी पीते हुए..

''फिर क्या कहा आपने.....एक साथ कई प्रश्नों से घिरे मुखिया जी पत्रकारों की बात सुनकर एकबार कांप से गये..... कड़ाके की ठंडक में भी चेहरे पर पसीना साफ झलकने लगा था''

''कहता क्या....कह दिया मामला अदालत में है...अदालत में देखा जायेगा वकील सा'ब ने जवाब दिया।''

''वकील सा'ब आप इस जिले के सबसे बड़े वकील हैं.....''

''हां ... सो तो है ही... आपकी इज़्ज़त से कहीं ज्यादा मेरी इज़्ज़त का भी ख्याल है मुझे।.... फिर कहने लगे कि मैंने आजतक कोई मुकदमा नहीं हारा है.. आप देखते रहिये...इज़्ज़त तो अब उसकी कोर्ट में उतारूँगा, कमरे के अन्दर आपके लड़के ने क्या इज़्ज़त उतारी होगी वह भी भूल जायेगी।....ठहाका.....'' (मानो वकील सा'ब यह बताना चाहते थे कि इज़्ज़त कचहरी के अन्दर ही उतरती है, इनकी हँसी में वासना की भूख नजर आ रही थी)

यह सुनकर मुखिया जी को अब थोड़ी राहत महसूस होने लगी थी।

''वकील सा'ब ने अपनी बात को बढ़ाते हुए आगे कहा– अपने नाम के साथ वकील लिखना बन्द कर दूँगा.. आपका मुकद्दमा हार गया तो।''

अपने बैग से कुछ नोटों के बण्डल टेबल पर रखते हुए... ''बस आप मामला लड़ते जाईए...किसी तरह से लड़की मामला उठा ले तो भी मैं समझौता करने को तैयार हूँ ...लड़के की शादी भी करनी ही है....मुखिया जी ने एक मझे–मझाये हुए अंदाज में वकील सा'ब की इंसानियत को भी परखने का प्रयास किया।''

''नहीं...नहीं....यह बात दिमाग में भी नहीं लायें...किसी के सामने बोल मत दीजियेगा.... सारा मामला हाथ से निकल जायेगा.... समझे न क्या कह रहा हूँ.....वकील सा'ब ने अपने अनुभव से मुखिया जी की इंसानियत को जिंदा ही दफना दिया।..... फिर बोलने लगे न जात .....न पात..... ऐसी लड़की को तो गाँव में नहीं, शहर के कोठे पर होना चाहिये..... आपके पवित्र मंदिर जैसे घर की शोभा कैसे बन सकती है?..... जिसने आपकी इज़्ज़त को कचहरी में चुनौती दे दी हो..... मामला कमजोर पड़ जायेगा।..... आपके यह सब बोलने से..... कचहरी में कानून बोलता है,..... इंसानियत नहीं बोलती.....गवाह देने होते हैं.....फिर एक ठहाका.....आपने सुना नहीं ....–''कानून अंधा होता है''..... फिर एक ठहाका..... कमरे के भीतर एक अजीब सी हलचल पैदा हो गई थी, मानो किसी जानवर ने वकील के शरीर में प्रवेश कर सारे वातावरण में हड़कम्प पैदा कर दिया हो.....मुखिया जी की बात ने कुछ ऐसा ही माहौल पैदा कर दिया था।''

''हां सो तो .....मुखिया जी ने अपनी बात को वापस लेते हुए कहा ...आप जैसा कहेंगे.. ठीक वैसा ही होगा.. वकील सा'ब ...आप पर मुझे पूरा भरोसा है। पर वो दो टकिया छोकड़ी तो मुँह पर लगाम देती ही नहीं.....''

''सब ठीक हो जायेगा... कतरन की सी जुबान पर जब सूई चुभने लगेगी तो खुद व खुद जुबान भी बंद हो जायेगी... फिर एक ठहाका...हहाहहह....बस आप देखते जाईये।''

''हाँ.. पर.. मामला कमजोर है.....वो मेडिकल रिपोर्ट?...फिर एक प्रश्न के समाधान खोजने का प्रयास किया था मुखिया जी के मन ने''

''आप भी कैसी बात करते हैं....मुखिया जी....कैसा मामला....कोर्ट. ..कचहरी...थाना...पुलिस....पी.पी....पेशकार...सबतो आपके साथ खड़े हैं...बस वो जज का बच्चा नया आया है....उसे भी कुछ समय लगेगा..... सब ठीक हो जायेगा.....।''

''हां!.....जज का नाम सुनते ही मुखिया जी को एक नई शंका ने घेर लिया ।

मुखिया जी हर प्रश्न का समाधान पहले ही खोज लेना चाहते थे, अब तक वकील सा'ब की बातों से जितना आश्वस्त हुए थे, नये जज का नाम सामने आते ही पुन: चेहरे पर पसीने की बूंदे झलकने लगी थी.....पर आप तो बता रहे थे....कि जज को आप मेनैज कर लेंगे.....?

''कोशिश तो की थी.....पर....मन ही मन में कुछ सोचते हुए, अभी बताना मुनासिब नहीं होगा.....अब वकील सा'ब ने

मुखिया जी की कमजोर नबज को टटोलते हुए ....एक काम करियेगा...आप कल एक पेटी भिजवा दीजियेगा।''

''किसकी सेव की या संतरा की.. मुखिया जी ने सोचा कि शायद जज सा'ब को भेंट भेजने को कह रहे हैं वकील सा'ब..... वकील सा'ब से पूछा..''

''अरे इतने भोले मत बनिये..... मुखिया जी.. अभी आपका लड़का तो रिमाण्ड पर ही गया है.. खुदा न करे, कल उसे जेल हो जाये। मुझे बताना पड़ेगा कि.... पेटी का क्या मतलब होता है।''

''हां...हाँ समझ गया.. कल सुबह आठ बजे तक आपके पास मेरा आदमी एक पेटी लेकर आ जायेगा।''

''तो बस आप भी समझो कि आपका काम हो गया''

दृश्य बदलता है: दिन का समय है सुहानी धूप ने मौसम को सुहावना बना दिया है।

अदालत के बाहर वकील सा'ब अपने मित्रों से घिरे हुए हैं सभी वकील सा'ब को बधाई देने में लगे थे।

''वाह... मदनगोपाल जी (वकील सा'ब का नाम).....आपने तो कमाल ही कर दिया.. क्या इज़्ज़त उतारी.... आपने.... उस लड़की की..... अदालत में मजा आ गया, जैसे लग रहा था, मनोरमा कहानी सुना रहे हों आप.....वाह..... मज..ज..जा आआआआग्या।''

''दूसरे वकील ने कहा....अरे सा'ब मदनगोपाल जी का जोड़ा नहीं है अदालत में, कोई फांसी पर भी लटकता हो तो बचा लेंगे उसको।. ....क्या टियूस्ट किया था, उस समय... आपने.... ''अपने कपड़े खुद खोले थे कि लड़के ने खोले थे''.....''

तीसरे ने कहा..... अरे उस समय तो बड़ा मजा आ गया जब आपने उस लड़की से पूछा था...तुम और कितनों से संबंध रखती हो? सच मुझे तो लगा कि आपको सब पता है कि इस लड़की के कितने मर्दो से संबंध हैं.. वाह सा'ब!..... कहीं आप भी इस चक्कर में तो नहीं. ..... रहते..? ठहाका.....इतने राज की बात तो बस वही जान सकता है....''

''चौथे ने कहा देखा नहीं कैसे बात खुलते ही सहम गई बेचारी. ..... चिल्ला पड़ी.....नहीं.....नहीं मेरी और इज़्ज़त मत उतारो.....बेचारी.....मैं अपना मुकद्दमा वापस ले लेती हूँ। ''उसके वकील की तो आपने बोलती ही बन्द कर दी थी बेचारे ने शर्म के मारे सर नीचे कर लिया था .....ठहाका.....'' पुन: एक ने कहा– देखा नहीं कैसे भावनात्मक बातें कर रहा था.... नारी जाति .....नारी जाति.....जैसे कोर्ट में मुकद्दमा नहीं किसी फिल्म में भाषण देने आया हो।''

''दूसरे ने एक प्रश्न भरी निगाहों से मदनगोपाल जी से पूछा... सर वो फोटो कहाँ से मिली उसकी जिसमें उसके.....'' अरे रहने भी दो यार.... सब यहीं पूछ लोगे तो कल क्या सुनोगे? वकील साब ने एक बार सबको अपना आभार व्यक्त करते हुए बात को समाप्त करने की चेष्टा की।''

तभी पास खड़े एक पत्रकार ने पूछ लिया... सर आपने मामला तो जीत ही लिया है मानो, पर यह तो बताते जाईये कि कल को यही घटना आपकी लड़की के साथ हो जाती तो आप क्या करते?.... पत्रकार के इस प्रश्न ने अचानक पास खड़े सभी वकीलों के चेहरे पर सन्नाटा ही पैदा कर दिया था । अभी तक जो

हँस–हँस के वकील सा'ब को बधाई दे रहे थे, धीरे से सटक लिये... मदनगोपाल जी अकेले खड़े इस प्रश्न का उत्तर खोजने में लग गये। रातभर बिस्तर पर तड़पते रहे.....

सुबह पुन: उसी अदालत में सभी खड़े थे..

जज साहेब ने अदालत की कार्यवाही शुरू करने का आदेश दिया। लड़की के बायन को पुन: दर्ज किया जाना था.... लड़की उठी और मदनगोपाल जी को हाथ जोड़ते हुए कहा..... आप मेरे पिता तुल्य हैं और कटघरे में जाकर खड़ी हो गई।

आज फैसला होना ही था यह सबकी जुबान पर था कि लड़की मुकदमा हार चुकी है। मदनगोपाल जी उठे..... अदालत के चारों तरफ देखा। अपने मुवक्किल को ध्यान से देखा उसके चेहरे पर उसकी हँसी देखी..... लड़की को देखते हुए कहा.....

मैं इस मुकदमे को नहीं लड़ूँगा.. अपना वकालतनाम वापस लेता हूँ।

अदालत परिसर में यह बात आग की तरह फैल गई..... मदनजी ने मुकदमा लड़ने से इंकार कर दिया है।

जज ने स्वीकृति प्रदान करते हुए लिखा काश! मदनगोपाल जी की जगह यह गौरव मेरे को मिल पाता..... मदनगोपाल जी ने आज इस अदालत में जो इतिहास रचा है.. वह हमेशा याद रखा जायेगा।

नोट: सभी पात्र और घटना काल्पनिक है।◆

- लेखक का संपर्क पता:
शम्भु चौधरी, एफ-डी- ४५३/२, साल्टलेक सिटी, कोलकाता- ७०००९६ फोन: ०-९८३९०८२०३७

स्मरण :

भागीरथ कोनोड़िया

- कुसुम खेमानी

भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता की स्थापना में जिन दो लोकसेवियों ने निर्णायक भूमिका निभाई उनमें स्वर्गीय सीताराम सेक्सरिया और स्वर्गीय भागीरथ कानोड़िया का योगदान ऐतिहासिक और अविस्मरणीय है। भारतीय भाषा परिषद की मंत्री डॉ. कुसुम खेमानी की यह रचना उन्हीं में से एक स्वर्गीय भागीरथ कानोड़िया की स्मृति को समर्पित है। -संपादक

'पीड़ पराई जाणै सोई भागीरथो.....सोई कानूड़ियो' – यह कोई लोकोक्ति नहीं, मुकुंदगढ़, सीकर, चूरू आदि के गांव वालों के आपसी बातचीत के उद्‌गार हैं। ...हाँ घटता है कभी ऐसा भी कि कोई व्यक्ति जीते जी कहावत बन जाता है.... छिपता रहता है वह कि लोग उसे पहचानें नहीं, पर कस्तूरी की गंध छिपे कैसे? सैकड़ों व्यक्तियों और संस्थाओं का अभिन्न अंग 'भागीरथ कानोड़िया' हमेशा ऐसी स्थिति से तो बच निकलता था कि कहीं भूले से भी उसका फोटो न उतर जाए–पर लोगों के मनों से कैसे बचता?

जब कभी प्रयास किया गया कि उनका अभिनन्दन किया जाए तो उनका एक ही उत्तर होता, 'मनै जीते जी क्यूँ मारो।' अपने गुण और दान का दिखावा तो बहुत दूर, शायद उन्होंने पैदाइशी इन्हें छिपाना ही सीखा था। क्या मजाल कि बन्दे का कोई फोटो किसी सार्वजनिक सभा में भी खींच जाए...किसी जादुई कला से वे अपने आपको वहाँ से नदारद कर लेते थे।

करुणा और दया के महीन स्पर्श को समझना हो तो भागीरथजी को देखना चाहिए। जैन साधु जैसे राह चलते कीड़े–मकोड़ों को हटा देते हैं कि वे कुचलकर मर न जाएँ कुछ ऐसी ही संवेदना...। करुणा एक सहज उद्रेक की तरह स्थायी भाव था उनका, जो उनके कार्य–कलापों में छलछलाता रहता था। राहत कार्य हज़ारों होते हैं और नहरें भी मजदूरी हेतु खोदी ही जाती हैं, पर क्या कभी किसी ने देखा–सुना है कि एक प्रौढ़ कृशकाय धनी व्यक्ति हाथों में चप्पलों की जोड़ियाँ उठाए राजस्थान की तपती बालू में चल रहा है, और उन्हें नहर खोदते मजदूरों के पैरों में पहना रहा है।

क्या कभी किसी ने देखा है कि कोई लाखों का दान गर्दन झुकाकर, नज़रें नीची कर, मुट्ठी बंद कर और चेहरे पर सारी दुनिया की शर्म बटोरकर करता है? जिसका एकमात्र लक्ष्य होता है कि औरों की तो 'खैर सल्ला' खुद लेने वाले को भी पता न चले कि उसे कुछ दिया गया है। ये बातें सुनी हुई नहीं आँखों देखी हैं।

देखने में एक साधारण किसान जैसे निरीह भाव वाले कानोड़ियाजी दर्शन–शास्त्र के सार–तत्त्व को अपनी जीवनचर्या में कैसे ढाल चुके थे, इसकी एकाध बानगी....

'वसुधैव कुटुम्बकम्' बड़ा रूमानी और खूबसूरत ख्याल है, पर आज यह सिर्फ ख्याल ही रह गया है, इसे हकीकत में सिर्फ भागीरथजी सरीखे ही जीते हैं।....१९७६ के फरवरी महीने में, मंडावा (झुंझुनू के पास का एक गाँव) की घटना है यह। ड्योढ़ी से 'ठाकराँ जी' दौड़ते से आए और बोले, 'मुकुन्दगढ़ से कानोड़िया आया है।'

'काकोजी ! यहाँ कैसे? 'उनसे पूछा तो बोले, 'यहाँ से गुज़र रहा था, पता चला तुम आई हो तो मिलने आ गया।' बात खत्म.

पर दूसरे दिन फिर पता चला कि काकोजी मंडावा आए हैं। पूछा तो फिर वही हँसी भरा उत्तर...कि तुम...यहाँ...।

मैंने कहा–'काकोजी, साची बात बताओ। क्यूँ रोज–रोज मंडावा आओ हो?'

वे थोड़ा ठहर कर बोले...'अमुक सेठ सै बात होई है, बै मंडावा में स्कूल बणा देसी। सोचूँ हूँ जमीन देखकर काम शुरू करा देऊँ तो स्कूल बण जासी।'

अस्वस्थ काया और स्वस्थ मन लिए भागीरथजी जीप का डंडा पकड़े मुकुन्दगढ़ से आते और घंटो 'खटराग' झेलते। हाई स्कूल तो उन्होंने बनवा ही दिया, यह बात इतर है कि उसमें पढ़ने वाला और उसे देखने वाला कोई भी यह नहीं जानता कि इसमें भागीरथजी का भी योगदान है। मुकुन्दगढ़ का बाशिंदा मंडावा के लोगों की चिंता में घुला जाए–यह बात क्या विश्वसनीय लग सकती? पर धरती का कण–कण जिसे अपना घर लगता हो उसके बारे में क्या कहा जाए।

काकोजी और बाबूजी

पता नहीं क्यों काकोजी की बात करते ही सीताराम बाबूजी की याद आ जाती है। काकोजी और बाबूजी जब तक जीवित थे, तब हर वक्त ऐसा नहीं होता था, पर काकोजी (उनका निधन बाबूजी से पहले हो गया था) के जाने के बाद तो जैसे यह आदत ही पड़ गई। बाबूजी के जीते जी ही ऐसा घटने लगा था कि हरेक मुलाकात में किसी न किसी बात पर काकोजी की चर्चा होती है।

बाबूजी की स्नेहभाजन बनने के बाद शुरूआती दिनों में मैं दोनों को एक दूसरे के अच्छे दोस्त के रूप में तो जानती थी पर उनके सम्बन्धों की अथाह गहराई का अन्दाज मुझे नहीं था।

घटना १९७१ के जनवरी महीने की है। बाबूजी के पैर की हड्डी टूट जाने के कारण उनको अस्पताल में भर्ती किया गया था, पर

हड्डी से ज़्यादा सबकी चिन्ता का विषय था उनका रक्त–चाप। पन्ना बाई (उनकी बड़ी बेटी) कुछ ज़्यादा ही उद्विग्न और आकुल व्याकुल सी लगीं, जैसे वे किसी विशेष बात के लिए छटपटा रही हों। मेरे मुँह से बेसाख्ता निकला– 'बाई, मामाजी (अशोक सेकसरिया, सीतारामजी के बड़े बेटे) दिल्ली हैं, इसीलिए इतना घबड़ा रही हैं? आप बिलकुल चिंता मत कीजिए, एमरजेंसी कहने से एक टिकट तो मिल ही जाएगा और वे जरूर आ जाएँगे।' बाई ने उसी सांस भरे स्वर में कहा– 'अरे एक टिकट भी मिल जाए तो कम से कम चाचाजी (भागीरथ जी) तो आ जाएँ?'

मैं दंग...सोचने लगी–बाबूजी और काकोजी के सम्बन्धों की इन्तहा। अशोक मामा और बाबूजी का एक दूसरे से मोह और टकराव भी किसी से छिपा नहीं था। हम सब इसे नजदीक से अनुभव करते थे कि अशोक मामा की अपने साथ की गई ज़्यादतियों से बाबूजी किस तरह आहत हो जाया करते थे। दरअस्ल बाबूजी, उस माँ की तरह थे जो अपने कमजोर बेटे को ज़्यादा प्यार करती है....और उन्हीं अशोक मामा के लिए बाई फिर किसी से कह रही थीं, 'पोपी' (अशोक मामा के घर का नाम) छोड़ तो चाचाजी ही नहीं आ पा रहे, देखो क्या होता है? अरे भाई! एक टिकट भी मिल जाए तो कम–से–कम चाचाजी तो आ जाएँ।'

प्रभु की कृपा से कालांतर में बाबूजी के नजदीक आने पर पन्ना बाई के उस उद्‌गार का अर्थ एक छवि की तरह मेरे सामने साफ होता चला गया।

रोज़मर्रा के जीवन में यह वाक्य हम अक्सर दुहराते रहते हैं, 'वे तो दो शरीर एक आत्मा हैं।' वैसे इस वाक्य को भी हमने एक तरह की किंवदंती ही मान लिया है। कई शब्द और वाक्य समाज में इसलिए चल पड़ते हैं कि ऐसा हो तो सकता नहीं अत: जहाँ थोड़ी अर्थछाया भी दिखे इसे जड़ दो, लेकिन बाबूजी और काकोजी को देख मुझे लगा कि नहीं, यह मात्र मुहावरा या किंवदंती नहीं, ऐसा घट भी सकता है। हालांकि अभी मुझे दो–चार बातें ही याद आ रही हैं पर यदि आप भी उन्हें जानें तो शायद मेरा यह कहना आपको अतिशयोक्तिपूर्ण न लगे।

बाबूजी को सन् १९७२–७३ के आसपास एक 'झख' चढ़ी (उनके लिए तब यही शब्द हमलोग बोला करते थे) कि कलकत्ते में सभी भाषाओं के साहित्य के प्रसार के लिए एक संस्था स्थापित करनी चाहिए। अब तक बाबूजी मातृ सेवा–सदन, मारवाड़ी बालिका विद्यालय और श्री शिक्षायतन स्कूल–कॉलेज जैसी संस्थाएँ स्थापित कर चुके थे। नई परिकल्पना के लिए लोगों से चन्दा जुटाना, जमीन खोजना, भवन बनाना आदि के बारे में सोचकर अच्छे–अच्छे जवान भी घबरा जाते हैं; पर बाबूजी थे कि ८० साल की उम्र में भी एक नौजवान की तरह ख़म ठोककर तैयार थे और पूरी तरह भरोसेमन्द कि काम तो होगा ही।

उनके घर–बाहर के आत्मीय–स्वजन थोड़े चिंतित भी थे। कोई कहता– 'इतनी मेहनत इस उम्र में?' कोई कहता–'समाज में चंदे का मानस ही नहीं रहा', तो कोई कहता– 'बाबूजी, लोग कहेंगे आप 'जक' (चैन) नहीं लेने देते, कुछ न कुछ अड़ंगा करते ही रहते हैं' पर बाबूजी की चिन्ता में भी एक निश्चिंतता थी काम के पार पड़ने की।

और लोगों की तरह मैंने भी चक्की पीसने वाले (बाबूजी की कल्पनाओं की रोटियों के लिए आटा तैयार करने वाले काकोजी) से पूछ ही लिया, 'काकोजी, के सांच्याई बाबूजी नई संस्था बणावैगा? बण ज्यासी?'

काकोजी का बिना अटके सीधा–सपाट जवाब था, 'इन्नाक जची है तो बणाणी तो पड़सी ई। हो सकै है पार भी पड़ ज्यावै।'

वह संस्था (भारतीय भाषा परिषद) बनी ही नहीं बाबूजी के सपनों के अनुरूप ही बनी। पर जरा उस व्यक्ति के बारे में सोचिए जिसका एकमात्र ध्येय था सीतारामजी के कहे हुए को, सोचे हुए को, पूरा करना–बिना किसी दुविधा के, बिना किसी देर के।

और यही बाबूजी जो परिषद के लिए लाखों जुटा लाए थे काकोजी के बिना कैसे हो गए थे?

काकोजी को गए (मृत्यु हुए) थोड़े ही दिन हुए थे। मैं बाबूजी के पास बैठी थी। एक पत्र आया, 'दुर्लभ पाण्डुलिपियों के लिए जो आलमारियाँ आप खरीदवाना चाहते थे, उनके बारे में छानबीन की, तो पता लगा, दस हज़ार की जगह साढ़े सात हज़ार में ही काम हो जाएगा। आप जैसे ही रुपए भेजेंगे आलमारियाँ लखनऊ से आ जाएँगी।

बाबूजी ने हताशा से पत्र एक ओर रख दिया और बोले, 'भागीरथ जी तो रहे नहीं और लन्द–फन्द इतने बढ़ा लिए! कैसे करें? क्या हो?' मैं हैरान। एक ओर तो हाल ही में बनाई गई लाखों की संस्था और दूसरी ओर बाबूजी को चिन्तित कर दिया, इस सामान्य सी राशि ने?

वह काम कैसे पूरा हुआ यह अलग बात है; पर उनकी यह एक उक्ति ही व्याख्या कर देती है उस पूरे सम्बन्ध की। एक ऐसा सम्बन्ध, जिसमें कुछ कहना तक न पड़े और दूसरा बिना कहे ही पूरी बात समझ ले।

यों भी बाबूजी को जब किसी बात का उदाहरण देना होता तो वे काकोजी के जीवन से दे देते, चाहे वह 'उस' भिखारिन की घटना हो जिसे काकोजी महीना दिया करते थे, और एक बार न मिलने पर उसे कहाँ–कहाँ ढूँढ़ते फिरे थे, चाहे सत्रह वर्ष की आयु में रिश्तेदारों की पंचायती के फैसले पर– 'भोत आयो युधिष्ठिर की औलाद' जैसा फतवा सुनने की बात हो।

नहीं, नहीं करते भी काकोजी की दिनचर्या से सैकड़ों उदाहरण दिए जा सकते हैं। हालाँकि मैंने उनको बहुत नहीं जाना फिर भी शायद एक पूरी रात काफी न रहे यदि भागीरथ कानोड़िया का जिक्र छिड़ जाए। कई बार तो ऐसा लगता है कि उनका हरेक दिन अपने आप में एक अलग बानगी लिए रहता होगा और स्वाभाविक तौर पर अनुकरणीय।

मैंने सीकर में काकोजी द्वारा स्थापित टी.बी. अस्पताल से लौट कर एक घटना बाबूजी को सुनाई, कि कैसे काकोजी इतने बड़े चिकित्सा–शिविर, जो अस्पताल में लगाया गया था, जिसमें पूरे भारत से नामी–गिरामी सर्जन आए थे, की सारी उपलब्धियों को भूल कर एक बणजारे की शिकायत की शोध में लग गए। पूरा वर्णन खत्म कर मैं गद्‌गद् कण्ठ से कह बैठी, 'बाबूजी, सच पूछें तो मुझे काकोजी आपसे भी महान लगे।... बहुत बड़े।' बाबूजी थोड़ा चौंके. ..क्योंकि वे मुझे बचपन से जानते थे और यह भी जानते थे कि

मेरी आँखों के अंतिम क्षितिज वे ही थे। वे कुछ रुके फिर बोले– 'ठीक कहती हो तुम!....अरे! भागीरथजी की क्या बात!...वे तो 'फड़द' हैं, 'फड़द' (मारवाड़ी में फड़द का अर्थ होता है, जिसका जोड़ न बना हो, जो एकदम अनोखा, अनूठा, बेजोड़ हो)।'

बाबूजी और काकोजी इतने अभिन्न थे कि एक की बात करते हुए दूसरे का जिक्र न हो यह संभव ही नहीं। यह मैंने उनके रहते हुए भी स्वयं देखा जाना है। महाभारत में एक प्रसंग है, धृतराष्ट्र के मरने की खबर सुनते ही उसके प्राणसखा संजय के प्राण पखेरू उड़ गए। कुछ–कुछ वैसी ही काकोजी की बीमारी के समय (उनके तरह–तरह के परीक्षणों के समय) बाबूजी की दशा थी। मरना तो उनके वश में नहीं था पर अधमरे तो वे हो ही गए थे।

उन्हें बड़ा बताते वक्त क्या बाबूजी का कद और ऊँचा नहीं हो जाया करता है? दोनों का स्नेह सम्बन्ध देख भगवान देवी (सीतारामजी की पत्नी) काकोजी के लिए यों ही नहीं कहा करती थी कि 'भागीरथजी तो इन्नाकी भू है (भागीरथ जी तो इनकी पुत्र वधू हैं)।' इसमें ध्वनि उस आज्ञाकारी बहू की होती थी जिसका एकमात्र ध्येय अपनी सास की सारी आज्ञाओं का पालन करना हो। काकोजी और बाबूजी के सम्बन्धों की और काकोजी की निस्पृहता की एक झाँकी–साक्षी–कुसुम खेमानी।

बाबूजी घर से बाहर निकल ही रहे थे कि काकोजी घुसे। बाबूजी बोले, 'भागीरथजी! मैं कुसुम कै सागै जा रह्यो हूँ, काल मिलाँगा।'

'ठीक है' कह कर काकोजी मुड़ लिए। तभी बाबूजी ने कुछ याद आया ऐसी मुद्रा में आवाज दी– 'भागीरथजी!... कै होयो आज ट्रस्ट में?'

'कोई खास बात कोनी,काल कर लेस्याँ'–काकोजी ने कहा।

बाबूजी बोले– 'फेर भी, कुछ तो होयो ई होसी।'

'मैं ट्रस्ट छोड़ दियो।'...(काकोजी)

'कै?....के बोल्या थे? ट्रस्ट छोड़ दियो?....यो थे के कर्‌या?' कहते हुए बाबूजी ने अपना रुख वापस भीतर की ओर कर लिया। उनके संगमरमरी रंग पर क्रोध की गुलाबी आभा कनपटी तक खिंच गई।

'छोड़ आया? इतै बड़े ट्रस्ट नै एक मिनट में छोड़ दियो? बरसाँ तक खट्‌या, मर्‌याँ थे और अब दूसराँ कै भरोसै छोड़ दियो? कोर्ट थानैं सम्हलायो थो यो ट्रस्ट....थे या कै करी?..' बाबूजी के चेहरे पर क्षोभ और हताशा का भाव छाया था। काकोजी चुपचाप, उनकी बातें सुनते रहे–अंत में एक ही वाक्य बोले, 'सीतारामजी, आदमी मर भी तो जावै, समझ लो मैं ई ट्रस्ट के लिए मरग्यो।'

आज छोटी से छोटी संस्था में पदों को लेकर खींचातानी चलती रहती है। बिना कुछ किए धरे ही हम सरीखे लोग बहुत सा नाम और पद पा लेना चाहते हैं। ऐसे घटाटोप में भागीरथ कानोड़िया जैसे लोग बेजोड़ ही कहे जाएँगे। हाँ, बेजोड़–उस 'फड़द' की तरह जिसे बुनकर जुलाहा अपने दोनों हाथ ऊपर उठा कर कह देता है कि, इस नमूने का जोड़ा बनाना मेरा बूते से बाहर है।◆

- साभार : वागर्थ, मई-०९

With best compliments From :

GAUHATI TEA WAREHOUSING (P) LTD.

:: Administrative Office ::

G. S. Road, Christian Basti
Guwahati-781005
Phone : (0361) 2343083
Fax : (0361) 2349057

:: Warehouses & Office ::

Tripura Road, Maidanganj, Bestal, Guwahati-781005
Phone : (0361) 2305622/9954499031
Fax : (0361) 2306013
E-mail : gteawl@gmail.com

कहानी :

भीतरी सन्नाटे

- यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

परिचय : देश के जाने माने साहित्यकार और कथाकार यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' का ३ मार्च, मंगलवार की देर रात बीकानेर में निधन हो गया। वे ७७ वर्ष के थे। उनके परिवार में पत्नी और तीन पुत्र हैं। साहित्य अकादमी नई दिल्ली, राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर, राजस्थानी भाषा संस्कृति एवं साहित्य अकादमी बीकानेर सहित अनेक पुरस्कारों से सम्मानित यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' ने एक सौ से अधिक साहित्यिक कृतियों का सृजन किया। इनमें लगभग ७० उपन्यास और २५ कहानी संग्रह शामिल हैं। उनके चर्चित उपन्यास, 'हजार घोड़ों पर सवार' पर दूरदर्शन ने टेली फिल्म बनाई थी। उनकी कृति पर टेली फिल्म, गुलाबड़ी और चांदा सेठानी बनाई गई। 'चन्द्र' ने अपनी लेखनी से समाज को नई दिशा देने के लिए जीवनपर्यन्त सादगी व ईमानदारी से सृजन धर्म का निर्वाह किया। उन्होंने उपन्यास, कहानियाँ, कविता संग्रह एवं लघु नाटकों की १०० से ज्यादा पुस्तकों की रचना कर साहित्य के क्षेत्र में अपना अपूर्व योगदान दिया है जो सदैव एक मिसाल के रूप में जीवंत रहेगा। उनकी स्मृति को प्रणाम करते हुए यहाँ उनकी कहानी 'भीतरी सन्नाटे' प्रकाशित कर रहे हैं –संपादक

उसकी नौकरी मुम्बई में लग गई। एक बड़ी प्राइवेट कम्पनी में। आखिर वह सी.ए. था। अपने कस्बे 'नोखा' से महानगर मुम्बई आ गया।

शुरू में वह एक मध्यवर्गीय होटल 'गुलनार' में रहा। एक बेडरूम का हवादार कमरा। फॉम का बिस्तर था पर उसकी दूध सी सफेद चादर पर एक हलका सा दाग था जिससे वह बेचैनी का अनुभव करने लगा। उसने चादर चेंज करा ली।

पहली बार जब वह अपनी कम्पनी में आया तो उसके मालिक जी.एस. चावला ने उसका स्वागत किया। उसे अपने खास–खास कर्मचारियों से मिलाया जिसमें उसकी स्टेनो मिस 'वन्दना' भी थी।

आठ–दस दिनों में उसने दफ्तर के काम को पूरी तरह समझ लिया तो एक दिन वन्दना ने कहा, ''सर! इफ यू डॉन्ट माइन्ड तो कुछ कहूँ।''

रोहन ने कहा, 'कहो।'

''यह श्रीशा है न, यह विचित्र युवती है। बहुत ही बातूनी, खुले दिमाग़ की, फ्लर्ट.....''

''वन्दना! तुम्हें ऑफिस के डिसीप्लीन का पता नहीं है। श्रीशा क्या करती है, क्या खाती–पीती है, क्या पहनती है, वह किस–किस के साथ घूमती है, इसकी ऑफिस में कोई फाइल नहीं है। यह सही है कि वह अपना काम जिम्मेदारी से करती है। मैं तुम्हारा बॉस हूँ। ऊल जलूल बातें मुझें पसंद नहीं। उसने कठोर स्वर में कहा।

'सॉरी सर!' वन्दना सिर झुका कर चली गई।

रोहन ने एक अच्छे अफसर की तरह अपने ऑफिस का कार्य संभाल लिया।

अब वह मकान की तलाश में लग गया। वह ऐसा मकान चाहता था जहाँ अभिजात्य वर्ग के लोग रहते हों। उसके सारे पड़ोसी पढ़े–लिखे हों, अंग्रेजीदा हों तो उत्तम! फ्लैट में पश्चिम की ओर बरामदा हो जहाँ पछुआ हवा बेरोक आती रहे। उस मकान के आस–पास झुग्गी–झोंपड़ियाँ और चालें न हों। उनकी मौजूदगी उसे कीड़े–मकोड़े की तरह रहने वाले लोगों के बारे में सोचने के लिए विवश करेंगी और वह निरर्थक तनाव से घिर जाएगा, वह जरा एकांतप्रिय था। वह यह वाक्य अपने पर आरोपित करता रहता था कि वह भीड़ में अपने को अकेला आदमी समझता है।

वह बचपन से ही मितभाषी था। फालतू बोलने वाले छात्र–छात्राओं से वह बचा करता था। वह उनसे लगभग दूर ही रहता था, जो अपने को काफी आधुनिक कहते थे और सिगरेट–शराब पीते थे, उनसे भी बचता रहता था। इसलिए वह चाहता था, एक अपने मनोनुकूल वातावरण वाला मकान। शांत और खुला।

वह नौकरी के बाद मकान ढूँढ़ता रहता था। जब वह थक जाता था तो मुम्बई की चौपाटी पर जाकर बैठ जाता था। लहरें गिनता रहता था। कई बार अपनी इच्छा के विरुद्ध वह चर्च गेट के स्टेशन के मुख्य द्वार पर खड़ा हो जाता था और आदमियों की भीड़ का रेला देखता रहता था। वह देखता–रंग–बिरंगी पोशाकें। भागमभाग।

उसे जल्दी ही इस बात का पता चल गया कि वह अपने मन के अनुकूल फ्लैट ले नहीं सकता। उसका मालिकाना हक और पगड़ी देना उसके वश का फिलहाल तो नहीं है। परिवार की

जिम्मेदारियाँ तो 'ताड़का' राक्षसी के मुख की तरह फैली थीं। तीन कुँवारी जवान बहिनें। पेंशन पर दाल–रोती खाने वाले माँ–बाप। .....वह उद्विग्न हो गया। उसके आगे मीलों अनंत मरुस्थल के टीबें फैल गए।

एक दिन उसने अपने चीफ एकाउन्टेंट प्यारेलाल को अपनी समस्या बताई।

प्यारेलाल ने कहा, ''आप या तो अपने सपनों को भंग कर दीजिए या फिर जीवन की कटुता समझ लीजिए। यह मुम्बई है, यहाँ सोना जितना चाहो कुछ ही मिनटों में खरीद सकते हैं पर सोने की जगह आसानी से नहीं मिल सकती।.....फिर भी आप मिस श्रीशा से बात कीजिए। वह काफी जानकारियाँ रखती हैं।''

''श्रीशा जो आपके पास.....।''

''हाँ–हाँ, वही श्रीशा.....।''

''उसके बारे में.....।''

''नहीं मिस्टर रोहन, चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष, सबके जीने का अपना–अपना तरीका है। व्यक्तिगत सुख और आनन्द भी सबके अलग होते हैं। रुचियाँ भी भिन्न–भिन्न होती हैं और परिभाषाएँ भी। मुझे कई बार लगता है कि यह श्रीशा जो है, वह नहीं है। इसने कृत्रिमता का एक लबादा पहन रखा है। उसकी एक क्वालिटी और है, वह सबकी मददगार भी है।''

''आप उसे मेरे पास भेजिए।''

थोड़ी देर में श्रीशा उसके कैबिन में थी। आते ही विनम्रता से बोली, 'गुड नून सर!''

''बैठिए.....आप मेरी प्रॉब्लम हल करने में मदद कर सकती हैं, मलकानी साहब कह रहे थे।''

''मुझे खुशी होगी यदि मैं आपके काम आ सकूँ तो।''

''श्रीशा जी! आप तो इसी शहर की उपज हैं। सारी एजुकेशन भी आपने यहीं पूरी की है। मैं सच कहता हूँ कि मैं आपको जरा भी कष्ट देना नहीं चाहता पर कई बार मनुष्य न चाहते हुए भी दूसरों को कष्ट देता है, मैं आपको.....।''

वह सहज मुस्कान अधरों पर लाते हुए बोली, ''किसी भूमिका की जरूरत नहीं है। साफ–साफ बताइए कि आप मुझे क्या कष्ट देना चाहते हैं।''

''मैं कई रोज से फ्लैट के लिए परेशान हूँ।.....कभी मेरी जेब एलाऊ नहीं करती है और कभी.....।''

उसने संक्षिप्त रूप में बताया कि वह किस एरिया में और कैसा फ्लैट चाहता है।

'और.....क्या खर्च कर सकते हैं?'

'यही दो हज़ार....ज़्यादा से ज़्यादा तीन....इसके आगे मेरी क्षमता नहीं, मेरा भरा–पूरा परिवार है। उसकी भी परवरिश करनी है।' रोहन ने कहा।

उसने ललाट में बल डाल कर अपना दायाँ कान खुजला कर कहा, 'माफी चाहती हूँ।.....फिर आप किसी खोली में कमरा ले लीजिए। अपनी इच्छा का फ्लैट लेना है तो पाँच–सात हज़ार रुपए खर्च कीजिए या फिर पाँच–सात लाख पगड़ी दीजिए।'

'यह संभव नहीं।' उसने नई बात बताई, 'दरअसल कम्पनी ने साफ–साफ कह दिया था कि तीन साल तक वह केवल तनख्वाह ही देगी। ऐसी स्थिति में.....।'

वह बीच में ही बोली, 'मुझे आपकी बात बनती नज़र नहीं आती है। फिर भी मैं बाइ हर्ट, कोशिश करूँगी कि आपकी पॉकेट के अनुसार काम हो जाए। फिर आपका लक।'

श्रीशा चली गई।

रोहन ने सोचा कि यह काफी आकर्षक है। गोरा रंग, कंजी आँखें, तीखे नाक–नक्श, फाँक की तरह अधर और निडर भी।

रोहन और उसके बीच संवाद कम ही थे। लेकिन मजबूरी का नाम महात्मा गांधी। सहिष्णु होना ही पड़ा। श्रीशा से रोहन को सदैव पूछना ही पड़ता था।

लगभग तीन दिनों के प्रयास के बाद श्रीशा ने रोहन को बताया, 'मैंने सभी इलाकों का सर्वेक्षण कर लिया है। आप जिस एरिया में फ्लैट चाहते हैं रोहन बाबू, इतना किराया तो आटे में नमक जैसा है। पूरी रसोई नहीं मिल सकती। कहने का मतलब है, कारवालों की एरिया में कम से कम पाँच हज़ार रुपए तो किराया और पाँच लाख पगड़ी, वह भी वन बेड रूम की। उसमें पछुवा हवा नहीं आ सकती, आ सकती है तो केवल पंखे की हवा। हाँ, मेनन साहब की चाल में कमरा पाँच सौ रुपयों में मिल सकता है, किराए पर। पगड़ी एक लाख अलग से।'

'नहीं मैडम, यह संभव नहीं है। आपको पता नहीं, मेरे कंधों पर दायित्वों का भयंकर बोझ है। मुझे मेरे माँ–बाप ने बड़े कष्टों में पढ़ाया है।'

इसके बाद रोहन भी प्रयास करता रहा और श्रीशा भी।

श्रीशा ने एक दिन मुलायम स्वर में कहा, 'सर! आप मेरे बॉस हैं। मैं आपकी मानसिक स्थिति समझती हूँ। महानगरों की यह समस्या खत्म होगी ही नहीं। हज़ार मकान बनते हैं साथ ही पाँच–दस हज़ार नए लोग आ जाते हैं। सारा खेल खत्म हो जाता है। समस्या ज्यों की त्यों बनी रहती है। हाँ, यदि आप पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर सोचें तो मैं आपके सामने अच्छा और सस्ता प्रस्ताव रख सकती हूँ। आप अपनी अनुकूलताओं की कटौती करें।'

'आप पहेलियाँ मत बुझाइए। साफ–साफ कहिए। बोलती आप कुछ ज़्यादा ही हैं।'

'यह सही है। बोलती ज़्यादा हूँ। मजाकिया हूँ सर! हर आदमी का अपना अलग स्वभाव होता है। अलग आनन्द होता है। मैं समझती हूँ कि हमारे भीतर कई इंसान हैं जो पल–पल

सक्रिय होते रहते हैं।'

'अपनी रहस्यपूर्ण बातें बंद करिए प्लीज। शॉर्ट में कहिए।'

'हमारे फ्लैट में तीन कमरे हैं। पूरा सेकेंड फ्लोर हमारा है। आजकल हमारी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। दस तारीख तक जेबें व बटुवे नंगे हो जाते हैं। मम्मी चाहती हैं कि हम कोई शरीफ और समय पर पैसा देने वाला पेईंग गेस्ट रख लें। जो कमरा हम आपको देंगे, उसमें अटेच्ड बाथरूम भी है। पूरब में खिड़की है, पछुवा हवा चलती है तो अवश्य कमरे में आती है। चूँकि मैं और मेरी मम्मी घर में दो ही जनें हैं, इसलिए घनघोर खामोशी भी रहती है। किराया दो हज़ार से कम नहीं होगा। यदि आप ब्रेकफास्ट, लंच व डिनर लेंगे तो एक हज़ार रुपए और, यानि तीन हज़ार में परिवार की तमाम सुविधाएँ। एकदम रीजनेबल रेट है यह। एक और कारण है। आजकल महानगरों का जीवन सुरक्षित नहीं है। अकेली औरतें आतंक से घिरी रहती हैं।'

'मैं सोच कर बताऊँगा।' उसने छोटा सा उत्तर दिया।

'लेकिन जल्दी, तीन दिनों के भीतर! समझे। कई ग्राहक आ रहे हैं पर हमें परिचित व शरीफ पेईंग गेस्ट चाहिए।' श्रीशा ने आँखों में स्पन्दन वाले भावों को चमकाया।

रोहन को अपने भीतर कुछ महसूस होता सा लगा। श्रीशा सिर झुका कर चली गई।

तीसरे दिन छुट्टी थी। गणेशोत्सव की। मुम्बई में अकल्पनीय हलचल। भाँति–भाँति की मूर्तियाँ! आकर्षक व भावभीनी। मूर्तिकारों की सारी सोच, कल्पना और श्रम गणेश जी को विभिन्न रूपों में साकार करने की योजनाएँ। योजनाएँ क्रियान्वित होती हैं पर जब वे श्रद्धामयी मूर्तियाँ पानी में समर्पित कर दी जाती हैं तो श्रीशा का मन तड़प उठता है।

उसने इसी कारण गणेशोत्सव में शामिल होना बंद सा कर दिया पर उसे नहीं पता, मिट्टी की मूर्ति अंत में मिट्टी में मिल जाती है।

सूरज के डूबने का समय था। क्षितिज लाल। स्त्री–पुरुष और बच्चे बेतहाशा समुद्र की ओर जा रहे थे। उनके चेहरों पर श्रद्धा का रंग दपदप कर रहा था।

श्रीशा अपने को प्रकृति के विभिन्न रंगों में डूबाना चाहती थी पर उसे क्यों बार–बार याद आ रहा था कि आज तीसरा दिन है। रोहन आज नहीं आएगा तो? उसकी आँखों में आशा का समुद्र सिकुड़ने लगा। उसकी आँखों में झिलमिलाते रंग मिटने लगे। आशा थी कि वे जरूर आएँगे। मकान की उन्हें बहुत जरूरत है पर साँझ का सूरज अस्त होने के करीब था।

सहसा उसने गणेश भगवान को स्मरण किया। कदाचित वह कहीं से रोहन को अपने भीतर कीड़े की तरह कुलबुलाते हुए महसूस कर रही थी।

सहसा घंटी बजी। वह लपक कर दरवाजे की ओर भागी। बिना सोचे और बिना जाने उसने तपाक से दरवाजा खोल दिया।

एक गोरा–गोरा मुरझाया चेहरा खड़ा था।

'आइए सर।'

रोहन भीतर आया। घर पुराना पर साफ–सुथरा। श्रीशा उसे उसी कमरे में ले गई, जिसे उसे किराए पर देना था। कमरे में वह सब कुछ था जिनकी एक व्यक्ति को जरूरत होती है। पंखा, पर्दे, डबल–बेड, बाथरूम, अलमारी, सोफा और साइड स्टूलें।

इन सबको देख कर रोहन की आँखों में एक साथ कई प्रश्न चमके।

'बैठिए सर! मैं पानी लेकर आती हूँ।'

वह कमरे से बाहर चली गई। वह नादान बालक की तरह कमरे को देखता रहा।

'सर! पानी!'

उसने पानी पिया। गटागट।

'चाय पीएँगे या कॉफी?'

'कॉफी।'

चली गई श्रीशा।

वह सोचने लगा कि क्या यही वह श्रीशा है जो लोगों की नज़रों में काफी फ्लर्ट है। कुछ लोग तो इसे चालू भी कहते हैं। व्यंग्य में दबी जबान में गंदगी उछालते हैं कि इसके शरीर के समन्दर में कई लोग डुबकी लगा चुके हैं पर रोहन को वह बड़ी शालीन लगी।

वह कॉफी ले आई थी। कप हलके नीले रंग के थे। कॉफी के साथ उनका मेल अच्छा लग रहा था। अपने लिए भी वह कॉफी लाई थी।

'इतनी देर में आपने कमरा तो देख लिया होगा?' श्रीशा सहज स्वर में बोली, 'अब आप मेरी बातों पर ध्यान रखकर यस–नो कहिए सर!' श्रीशा की आँखों में सहसा सैलाब उभरा। स्वर का बुझापन बढ़ गया। बोली, 'दबाव की बात नहीं है। आप हम पर दया नहीं करेंगे। यदि यह रूम आपको पसंद है तो आप यहाँ रहने आ सकते हैं। हमें भी किसी अच्छे किराएदार की तलाश है। आप सभी दृष्टियों से सही हैं। और लोग कहते हैं कि एक से भले दो और दो से तीन।'

रोहन चुप हो गया। गंभीर कोमलता उसके चेहरे से चिपक गई। क्षणिक गूँगापन!

कॉफी के एक साथ दो घूँट लेकर रोहन ने कहा, 'मैं तुमसे उम्मीद रखूँगा कि तुम मुझे सच–सच बताओगी, चाहे वह सच नीम की तरह कड़ुवा भले ही हो। इस कमरे को देख कर मुझे लगा कि क्या पहले उसमें कोई रहता था?'

बुत–सी स्थिरता श्रीशा में आ गई। आँखों से लगा कोई

संवाद उसके आगे प्रेतात्मा सा नाच रहा है।

रोहन ने फिर पूछा, 'सच बताओ।' वह सहसा उसके सन्निकट हो गया। आप से तुम पर आ गया। उसकी गर्दन झुक गई। लगता था कि वह किसी अपराध बोध से घिर गई हो। फिर भी साहस करके वह बुझे स्वर में आहिस्ता–आहिस्ता बोली, 'हाँ, इसमें मेरे पति रहते थे। माइ हसबैंड!'

'क्या?' रोहन की आँखें विस्फारित हो गई। जैसे सब कुछ पल भर के लिए थम गया हो।

'हाँ रोहन बाबू! इस कमरे में मैं और मेरे पति रहते थे। इस कमरे में जो कुछ भी है, उनका ही खरीदा हुआ है।'

'अब वे कहाँ हैं?'

'ही इज नो मोर सर! मैं इतनी भाग्यहीन हूँ कि तुरन्त विधवा हो गई।'

'उन्हें क्या हुआ था?'

'कुछ नहीं, वे अपाहिज थे। एक टाँग से लँगड़े थे। कहते थे कि किशोरावस्था में एक्सीडेंट हो गया था। प्रॉपर इलाज न होने के कारण वे बैसाखी के सहारे चलते थे।'

'फिर तुमने शादी.....।' रोहन की आँखों में विस्मय चमका।

वह उदास मुस्कान से बोली, 'हमने प्रेम विवाह किया था। एक बार मैं दफ्तर से आ रही थी। एक मोड़ पर एक कार वाला उन्हें टक्कर मार गया। वे अचेत हो गए। मैंने देखा उन्हें कोई उठा नहीं रहा है। मैं नहीं जानती कि वह किसकी प्रेरणा थी पर मैं उन्हें राहगीरों की सहायता से अस्पताल ले गई। सुबह तक वह स्वस्थ हो गए। रात को मैं घर लौट आई थी। उनका एक मित्र आ गया था।'

'जब वे अचेत थे तब मैंने गौर से उन्हें देखा था। वे एकदम गोरे थे। नाक–नक्शे भी अच्छे थे। बाल घुंघराले थे। मुझे सुन्दर लगे। अपाहिज न होते तो उनका व्यक्तित्व लगभग आप जैसा ही था।'

'सुबह मैं फिर अस्पताल गई। डॉक्टर ने उन्हें छुट्टी दे दी। वे मुझे अपने घर पहुँचाने का आग्रह करने लगे। मैं उनके घर गई। यही घर था उनका। मैंने उनके लिए चाय बनाई। उन्होंने मेरा, दवाइयों व डॉक्टरों की फीस का हिसाब–किताब किया। उन्होंने पूछा, 'इतने रुपये आप कहाँ से लाई? मैंने उन्हें बताया कि कल मुझे तनख्वाह मिली थी।' मैं वहाँ से आने लगी तो उन्होंने कहा– 'मैं आपका अहसान सदैव याद रखूँगा। आप मुझसे जरूर मिलिएगा। एक परिचित के रूप में ही सही।' तभी उनकी नौकरानी आ गई।

मैं उनके यहाँ यदाकदा जाती रहती थी। किस आकर्षण के तहत जाती रही परिभाषित नहीं कर सकती। यह वास्तव में प्रेम भावना थी या उनके अपाहिजपन के प्रति मेरी करुण भावना द्रवित हो गई थी। बस, वे मुझे अच्छे जरूर लगने लगे थे। वे बहुत भावुक व वाक्य पटु भी थे।

एक बार नरेन ने कहा था, 'देखो श्रीशा, प्रेम शब्दातीत है। वह केवल अनुभव किया जा सकता है। उसके अर्थ और मर्म मेरी दृष्टि में अनेक हैं। वह हृदय का सत्य है।'

वस्तुत: रोहन साहब! वह प्रेम की बहुत अधिक व्याख्याएँ करता रहता था। मैं उन्हें सुन–सुन कर हतप्रभ हो जाती थी। उनके भावुकतापूर्ण संवादों और मनमोहक महत्त्वाकांक्षाओं ने मुझे सम्मोहित सा कर दिया था। मैं स्वयं बेचैन रहने लगी उनके लिए।

एक दिन मैंने उनसे विवाह का प्रस्ताव रखा। तब उन्होंने बताया, 'सुनो, मैं इस संसार में अकेला हूँ। आज मेरी सात पीढ़ी में कोई नहीं है। यह फ्लैट मेरे मरहूम चाचा ने दिया था। वे कुँवारे थे। मैं जाति का कायस्थ हूँ। मुझे जो कुछ भी मिला है, अपाहिज होने के कारण मिला है।' .... उसने पल भर रुक फिर कहा, 'मुझे तुमसे शादी करके बहुत खुशी होगी। मेरा यह दुर्दान्त एकांत और चुभती ऊब मिट जाएगी। तुम्हें इस पर गंभीरता से सोचना है।'

मैंने अपनी माँ को नरेन की सारी स्थिति बताई। अपनी घरेलू स्थितियों का विश्लेषण किया। एक 'खोली' में रहने वाले निम्न मध्यवर्गीय परिवार के लिए यह सुनहरा अवसर था। .....पर माँ अकेली हो जाएगी। मैंने तय कर लिया कि माँ को अपने पास रखूँगी।

मैंने सारी बातें नरेन को बताई। नरेन ने सहर्ष स्वीकार कर लिया कि माँ जी हमारे साथ रहें, मुझे कोई एतराज नहीं।

शुभ मुहूर्त्त देखकर हमने कोर्ट–मैरिज कर ली। .....सही, पक्की और सस्ती अदालती शादी। साक्षी थे मेरी माँ, मेरी दो सहेलियाँ, नरेन के बॉस और उसके दो मित्र। इन लोगों को ही हमनें होटल में पार्टी दी।

सुहागरात भी हमने फूलों की खुशबू में मनाई। मुझे लगा कि नरेन पूरा पक्का और तगड़ा मर्द है। टूटे लुंज पुंज पाँव पौरुष के प्रदर्शन में बाधा नहीं बनते।

चंद ही दिनों के बाद मुझे महसूस हुआ कि चाहे एरेंज मैरिज हो या लव मैरिज, लेकिन यह पत्थर की लकीर की तरह अमिट सत्य है कि पति होते ही हर मर्द हुक्मरान बन जाता है। जैसे उसके हुक्म की तामील तुरन्त हो। मैंने जाना कि मर्द की देह नब्बे प्रतिशत उसकी अपनी होती है और स्त्री की दस प्रतिशत अपनी। यही हाल उसके मन का होता है। वह शादी के पूर्व नरेन मेरा भावुक दोस्त था पर शादी के पश्चात् वह मेरा स्वामी बन गया। यदि मैं उसकी कोई बात नहीं मानती तो उसकी आकृति पर रंग–बिरंगी भाव–रेखाएँ दिखाई पड़ती थीं। वह स्थिर सा हो जाता था। उसकी आँखों में मौन–आज्ञा की किरणें चमक उठती थीं।

उसके इस व्यवहार से मैं बर्फ बनती जा रही थी। अपने को अन्तस को उत्तेजित सहसा नहीं कर पाती थी। मैं उससे उबने

लगी। असहिष्णु हो गई। वाक्य–युद्ध होने लगे। मैं बिल्कुल अजनबी हो जाती थी। माँ भी एक माह के बाद आ गई थी। उसके कारण मैं जरा खुश थी। अपने को सुरक्षित समझती थी। हमारा कोई विशिष्ट नहीं, सामान्य जीवन चल रहा था। क्योंकि मैं भी कमाती थी।

कई बार कुछ घटनाएँ अनायास घट जाती हैं। वे अच्छी भी होती हैं और बुरी भी।

एक दिन वे दफ्तर से वेतन लेकर आए। बाज़ार से मेरे लिए साड़ी और मिठाई लाए। मुझे वह नई साड़ी पहनाई। कहा, 'आज मेरा जन्मदिन है।' रात को उन्होंने कई बार शरीर के समन्दर में गोते लगाए। वे असीम आह्लाद से घिरे थे।

सुबह मैं उठ कर काम में लग गई। वे देर से उठे। चाय पी। लैट्रिन में घुसे। घुसे तो फिर बाहर ही नहीं निकले। मैंने कई बार पुकारा। कोई उत्तर नहीं। मैंने माँ को कहा। माँ भी घबराई।.... मैंने उन्हें जोर–जोर से पुकारा। दरवाजा भड़भड़ाया।

अब मेरा धैर्य जाता रहा। मैं भाग कर निचली मंजिल के मिस्टर जोशी को बुला कर लाई। उन्होंने भी प्रयास किया। हमारी चिंता व घबराहट बढ़ती ही जा रही थी। अमंगल आशंकाएँ हमारा घेराव करने लगी थीं।

मिस्टर जोशी भाग कर एक मिस्त्री को लाए। उसने दरवाजा उखाड़ा। वे अर्धनग्न फर्श पर पड़े थे। जोशी जी ने उन्हें झिंझोड़ा, बार–बार पुकारा। दिल की धड़कनें सुनी पर निष्फल। जोशी ने मुझे दर्द भरी लुक दी और कहा–''आई थिंक, ही इज नो मोर!''

तभी कुछ लोग और आ गए थे। एक भाग कर डाक्टर को ले आया। उसने भी कह दिया कि हंसा उड़ गया। ....रोहन! सोचो, सारा खेल चंद मिनटों में खत्म हो गया कितनी अकल्पनीय घटना थी। कितना ही अपना हो पर मृत्यु के बाद उसे जितना जल्दी हो सकता है, आग के हवाले हम कर देते हैं। नरेन का दाह–संस्कार कर दिया गया। उसे मुखाग्नि मैंने दी।

मेरी सहेलियाँ और उनके मित्र 'उठावणी' में आए। बारहवें दिन मम्मी के दबाव पर ग्यारह ब्राह्मणों को भोजन कराया। उनके पकड़े गरीबों को बाँटे। उसकी बैसाखी समुद्र को दे दी, कभी वह लंगड़ा होगा या किसी को लंगड़ा करेगा तो उसके काम आएगी।

इसके बाद घर में धीरे–धीरे सन्नाटा पसर गया। प्रेतात्मा के घर का घुटनदार सन्नाटा। मुझे पीड़ादायक ऊब का अहसास पहली बार हुआ।

रोहन ! समय हर जख़्म को भर देता है। समय हर स्मृति को धुँधला कर देता है, समय पत्थर की लकीर को भी घिस देता है।

मैंने भी अपने को सामान्य कर लिया। जीने के लिए एक खूबसूरत व सुखद बहाना जरूरी है। भीतर के साँय–साँय करते सन्नाटों को मारने के लिए मैंने हँसी, मजाक, खुलेपन, सतहीपन से जीना शुरू कर दिया। लेकिन मेरा अन्तस पहाड़ी घाटियों की तरह सूना है। हाँ, नरेन के एक खास दोस्त 'हाशमी' को यह वहम हो गया था कि मैंने इस फ्लैट व लंगड़े पति से छुटकारा पाने के लिए उसकी हत्या कर दी है। उसने भाभीजान–भाभीजान कह कर मुझसे सम्पर्क भी बढ़ाया पर जब वह कुरेद–कुरेद कर सवाल पूछने लगा और कई बार उसने मेरा पीछा किया तो मैंने उसकी मनसा को भाँप लिया। मैंने उसे कह ही दिया, 'मुझे उनके दोस्तों को सम्मान देना अच्छा लगता है पर मेरी जो जासूसी करता है, वह इंसान मेरे लिए घृणा के लायक है। हाशमी साहब! फिर कभी आप मुझसे बात नहीं करेंगे।'

अब आप ही बताइए, कई लोग निरर्थक हुशियारी करते हैं। सच तो यह है कि कोई मेरे निजी सच को नहीं जानता कि मैं कितनी दुखी और संकटों से घिरी हूँ। मैं इस देश की अधिकतर स्त्रियों की तरह जीती हूँ। मेरी आंतरिक पीड़ा को कोई नहीं समझता। लोग समझते हैं कि यह फ्लर्ट है। नहीं रोहन बाबू... मेरे भीतर कई ज्वार–भाटे हैं। दुखों, नीरसता, व्यर्थता और पलायन के कई प्रेत हैं। ये प्रेत कब मेरा गला घोंट दें मैं नहीं जानती। मैं अकेली भयभीत रहती हूँ।

रोहन इतनी देर खामोश बैठा था। बोला, ''मैं यहाँ नहीं आऊँगा। न मैं तुम्हारे भीतर के सन्नाटों को तोड़ना चाहता हूँ और न बाहर की खुशियाँ मिटाना चाहता हूँ। मुझमें वह शक्ति भी नहीं है कि तुम्हारे पीड़ा के प्रेतों को भगा सकूँ। मैं शांति चाहता हूँ प्रगाढ़ शांति।''

'लेकिन आपको यहाँ आना ही है।''

''श्रीशा! औरत के साथ एक अकेला मर्द रहने से कई खतरें हैं। ये खतरें कई बार अनर्थ भी कर सकते हैं। मानसिक चैन को मिटा सकते हैं। गंदे विचार फैला सकते हैं। गलतफहमियों के कांटे चुभा सकते हैं।'' उसके स्वर में तड़प थी।

''रोहन बाबू! आपको यहाँ आना ही है। जरूर आना है और आपकी अपनी शर्तों पर आना है। झूठ चोर की तरह होता है, उसके पाँव कच्चे होते हैं अत: वह सच की झलक से भाग जाता है। हाँ, कई सयाने कहते हैं कि सच्चे व अच्छे आदमी के आने से वहाँ के सारे प्रेत भाग जाते हैं। मेरे अन्तस में कई प्रेत हैं। वे तो आपके आने से ही जरूर भाग जाएँगे। खतरों की बात? खतरों के बिना नये सुखों की तलाश नहीं होती।' वह भावुक हो गई। उसकी आँखें छलक आई। रोहन उसे अपलक देखता रहा। वह थोड़ा सा मुस्कुराया।

सन्निकट स्थित मंदिर में शंख बज उठा। उसकी पवित्र और मधुर आवाज़ में प्रेरणाएँ थीं।♦

- आशा लक्ष्मी, नया शहर बीकानेर - 334004

साभार : वागर्थ अप्रैल-०९

कविताएँ :

सोंधी माटी का बिहार

- डॉ. शांति जैन

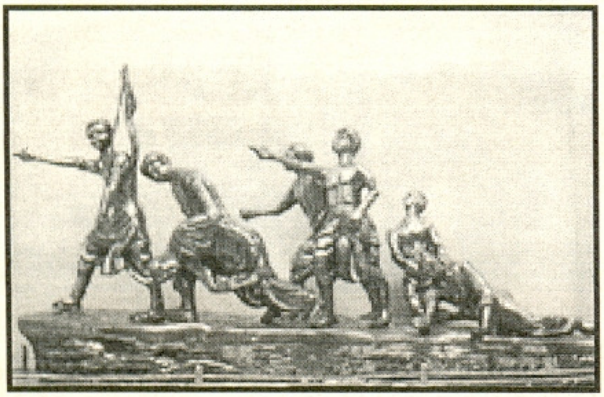

दिशा–दिशा में लोकरंग का तार–तार है
महका–महका, सोंधी माटी का बिहार है।

भारत भू के मानचित्र का, जो ध्रुवतारा
वहीं जहाँ पर लोकतंत्र की पहली धारा
अम्बपालिका के नूपुर की गूँज अभी तक
घोल रही कानों में मीठी रसधारा
प्रिय अशोक का स्तंभ बना इक यादगार है।

कहीं गूँजते आल्हा ऊदल के अफसाने
कजरी, झूमर औ फगुआ के मस्त तराने
चौपालों में चैता घाटो की बहार है।

सामाचाको सा मिथिला का खेल अनूठा
छठ मैया के गीतों से गंगातट गूँजा
अंग देश में सती बेहुला की पुकार है।

महावीर के चरणों से पावन वैशाली
तपोपूत है बोधिवृक्ष की डाली डाली
गुरुवाणी का मंत्र हृदय के आर–पार है।

देशरत्न राजेन्द्र से हुआ मस्तक ऊँचा
आज़ादी का मंत्र यहीं गांधी ने फूँका
जय प्रकाश का सपना सबका ऐतवार है।

कुँवर सिंह की कटी बाँह गंगा की थाती
कीर्ति पताका सात जवानों की फहराती
अमर शहीदों की यादों का ये मज़ार है
महका महका, सोंधी माटी का बिहार है।◆

राजस्थान धरा री बेट्याँ

:: ताऊ शेखावाटी ::

छोरो बोल्यो–चालैगी के?
छोरी पूछ्यो–कड्डै?
छोरो बोल्यो–प्रश्न मताँ कर
मैं ले चालूँ बड्डै

छोरी बोली–कोनीं चालूँ
छोरो पूछ्यो–क्यूँ?
छोरी बोली–प्रश्न मताँ कर
मेरी मरजी ज्यूँ

फेरूँ भी जे चावै है मैं
बात मान ल्यूँ तेरी
पैल्याँ भर तेरै हाथाँ
सिन्दूर माँग में मेरी

फेर चाल, ले चाल कठै भी
जठै तेरो जी चावै
जद छोरो बोल्यो–इतणी
गहराई में क्यूँ जावै?

बेलेन्टाइन डे है आज्या
झूमाँ, नाचाँ, गावाँ
सगळा सागै आपाँ भी चल
मिलकै मौज मनावाँ

शादी करणो खेल नहीं है
बात मान ले मेरी
छोरी बोली–फेर अठै नहिं
दाल गळैली तेरी

वेलेन्टाइन डे मनाणियाँ
थाँ सा चरा–चराकी
नित छोडाँ म्हे हाँ बेट्याँ ई
राजस्थान धरा की

म्हारै सँग यूँ मन बहलाणो
कोई खेल नहीं है
छोरो गयो समझ आँ तिल्लाँ
मांई तेल नहीं है

- ३२, जवाहर नगर सवाई माधोपुर (राज)
मोबाईल - ०९४१४२७०३३६

निवेदन

सेवा में
महामंत्री महोदय,
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
152बी, महात्मा गाँधी रोड,
कोलकाता–700 007
महोदय,

❑कृपया मेरे पते में निम्न सुधार करने की कृपा करें।

❑कृपया मेरी सदस्यता शुल्क बकाया के संदर्भ में मुझे जानकारी दें ताकि मैं उसे जमा करा सकूँ।

❑मैं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विशिष्ट/आजीवन/संरक्षक सदस्य बनना चाहता हूँ। कृपया निम्न पते पर मुझे एक सदस्यता फार्म डाक द्वारा भेजने की कृपा करें।

- ❑ वशिष्ट सदस्यता 500/–
- ❑ आजीवन सदस्यता 5000/–
- ❑ संरक्षक सदस्यता 51000/–

❑मैं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा प्रकाशित ''समाज विकास'' पत्रिका का सदस्य बनना चाहता हूँ। सदस्यता शुल्क 100/–
चेक/मनिऑडर/नगद द्वारा संलग्न।

मेरा वर्तमान पता निम्न है

नाम :.....
पता :.....
.....
शहर :.....
पिन कोड :.....
फोन नं. :.....
मोबाईल :.....
ई–मेल :.....

हस्ताक्षर

मारवाड़ी युवा मंच
चाईबासा जागृति शाखा

मारवाड़ी युवा मंच चाईबासा जागृति शाखा द्वारा आयोजित एवं एस. आर. रूँगटा ग्रुप द्वारा प्रायोजित ६वां दस दिवसीय समर कैम्प के समापन समारोह का आयोजन दिनांक २२ मई २००९ को सम्पन्न हुआ। समारोह मुख्य अतिथि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल जी रूँगटा एवं विशिष्ट अतिथि युवा मंच प्रान्तीय अध्यक्ष जी नन्द किशोर जी अग्रवाल थे। समर कैम्प में बच्चों को योगा, डांस, क्राफ्ट एवं विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया, समापन समारोह में बच्चों ने मारवाड़ी समाज के सांस्कृतिक गीतों एवं नृत्यों का प्रदर्शन किया इनमें कठपुतली नृत्य विशेष सराहनीय था।

स्वागत भाषण शाखा अध्यक्षा श्रीमती कविता अग्रवाल ने दिया कार्यक्रम की संयोजिका श्रीमती प्रेमलता अग्रवाल, सचिव नेहा जींदल एवं सभी सदस्यों का एवं मारवाड़ी युवा मंच के सदस्यों का विशेष योगदान रहा।◆

सुमित जालान
डीपीएस के दूसरे टापर

डीपीएस के दूसरे टापर सुमित जालान दूसरों को आदर्श मानने में यकीन नहीं रखते। ये मानते हैं कि खुद कुछ ऐसा करना चाहिए कि दूसरों के लिए आदर्श बन जायें। विद्यालय के कॉमर्स टापर सुमित का लक्ष्य भी हटकर ही है–ये बनना चाहते हैं 'बिजनेज टाईकून।' कहते हैं कि नौकरी लेने से अच्छा है कई अन्य को नौकरी देना। इससे बेहतर समाज का भी निर्माण हो सकेगा। पटना के श्री महेश जालान व प्रेमलता के लाडले सुमित की रुचि अकाउंटेंसी में रही है। दिल्ली के श्री राम कालेज ऑफ कॉमर्स से ये बी.काम. करने की ख्वाहिश रखते हैं। – बधाई

Caring for Land and People...

RUNGTA MINES LIMITED

Mine Owners, Exporters & Sponge Iron Manufacturer

- ***IRON ORE*** *– BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- ***MANGANESE ORE*** *– BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- ***LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE***
- ***SPONGE IRON*** *– LUMPS & FINES*

CORPORATE OFFICE

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA - 833 201, JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256861/ 256761/ 256661; Fax: 91-6582-256442
Email: rungtas@satyam.net.in, Web Site: www.rungtamines.com; GRAM: "RUNGTA"

REGISTERED OFFICE

8A, EXPRESS TOWER, 42A, SHAKESPEARE SARANI
KOLKATA - 700017, INDIA
Phone: 033-2281 6580/3751; Fax: 91-33-2281 5380; Email: rungta_cal@sify.com

MINES DIVISION

RUNGTA OFFICE
MAIN ROAD, BARBIL - 758035, DIST- KEONJHAR, ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 275221/277481/ 441; Fax: 91-6767-276161
E-mail:rungta_bbl@yahoo.co.in , GRAM: "RUNGTA"

SPONGE IRON DIVISION

ORISSA
RUNGTA OFFICE
MAIN ROAD, BARBIL - 758035,
DIST- KEONJHAR, ORISSA INDIA
Ph: 06767- 276891/277391/021
TeleFax: 91-6767-277011

JHARKHAND
RUNGTA OFFICE
SADAR BAZAR, CHAIBASA – 833201
DIST – SINGHBHUM (W), JHARKHAND, INDIA
Ph: 06582-256621/256321
Fax: 91-6582-257521

REGISTERED Postal Registration
No. SSRM/KOL/WB/RNP-093/2007-09
Date of Publication - 28, June 2009
RNI Regd. No. 2868/68

wonder images

Leading solvent printing unit for outdoor & indoor ad.

- Crystal clear digital printing with vutek machine, on Flex, SAV, One way vision, UK Media, Mesh, Lamination, Canvas, etc.
- 40,000 sq ft per day production capacity.
- No compromise in quality.

Wonder images Pvt. Ltd.

2 Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph : 2225 1862/3/4/5, 9830425990, Fax : 91-33-2225 1866
email : wonder@cal2.vsnl.net.in

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319
E-mail : samajvikas@gmail.com